Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

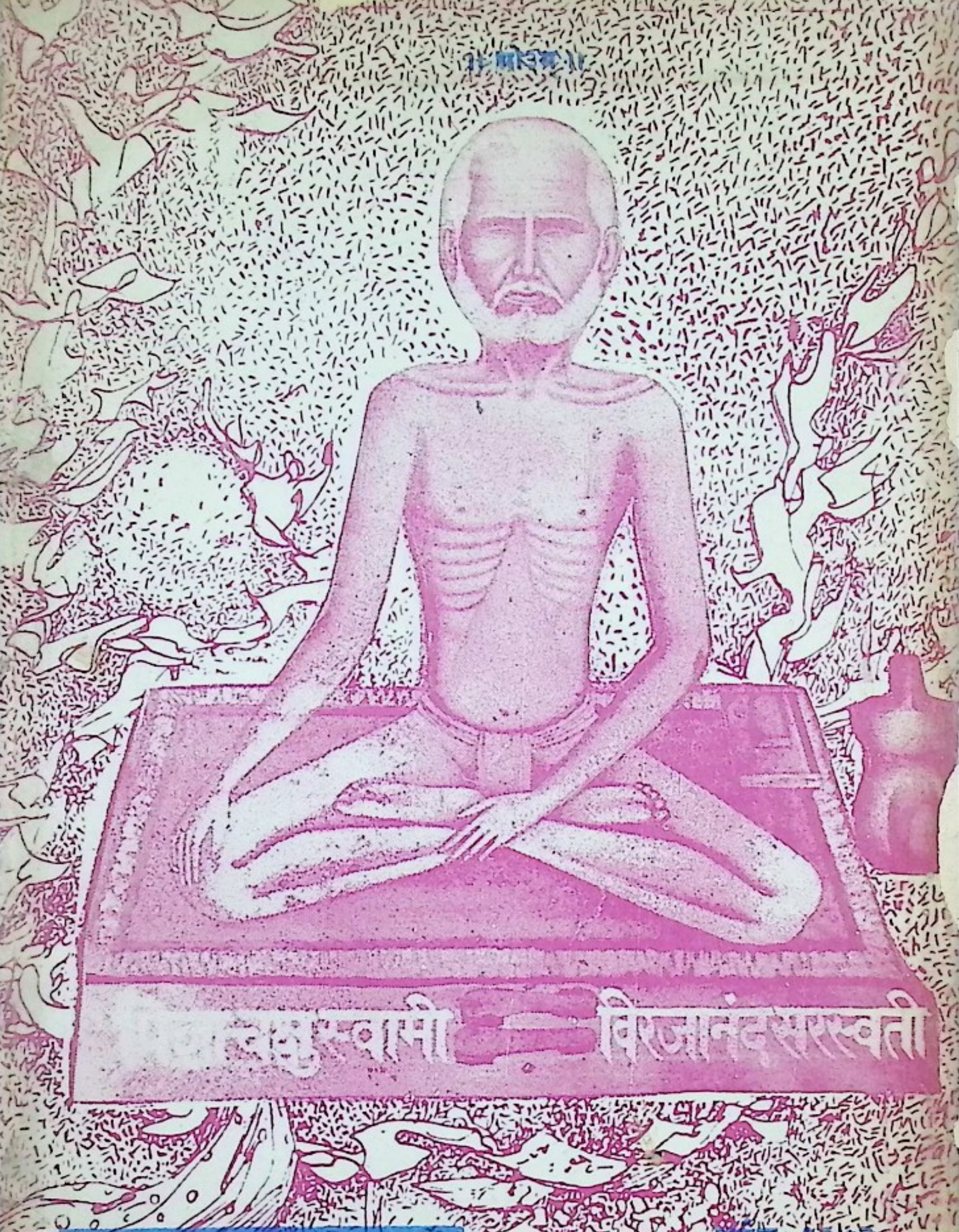

अप्रैल-१९७३
वैशाख-२०३०
मूल्य एक रुपया

[मासिक]

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शहादत के प्रतीक : वीरश्रेष्ठ भगतसिंह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंजीकृत ट्रस्ट

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

जन - ज्ञान

(मासिक)

सम्पादक
—राकेश रानी

दूरभाष: ५६६६३९

पता—
१५९७ हरध्यानसिंह मार्ग
निकट ३१-नाईवाला
करौल बाग, नई दिल्ली

वार्षिक मूल्य १२)
विदेश में—एक पौंड
आजीवन—२०१)

वर्ष ५ : अंक १२
वैशाख—२०३०
अप्रैल—१९७३

क्या आप हमारा साथ देंगे ?

यह ठीक है कि—

— हमने प्रचलित मान्यताओं को लांघ कर नयी परंपराएं स्थापित करने का यत्न किया है। धर्म प्रचार के नाम पर व्यापार की दूषित प्रवृत्ति पर कुठाराघात कर हमने **"प्रचार-प्रचार के लिए"** का मार्ग चुना है।

—पिछले सौ वर्ष में पहली वार "दयानन्द-संस्थान" ने ही लागत से कम मूल्य पर साहित्य देने का प्रयत्न किया है। योजना और घोषणा नहीं केवल कार्य द्वारा ही हमने जो कहा, वह प्रत्यक्ष उपस्थित किया।

—१२ रु० के लगभग में ऋग्वेद के प्रथम ६ मंडलों का भाष्य आप के हाथ में अप्रैल १९७३ में होगा। वेद प्रचार के नाम पर धन संग्रह किसी ने भले ही किया हो किन्तु कोई भी संगठन इतने अल्प मूल्य में इतना विशाल ग्रन्थ देने की कल्पना भी नहीं कर सकता।

—हम अनुयायी हैं ऋषि दयानन्द के और उस आर्य समाज संगठन के, जो ऋषि के कार्य की पूर्ति के लिए स्थापित हुआ था। किन्तु जो संगठन केवल मुकदमों झगड़ों और धन संग्रह में विश्वास रखते हैं, जिनको प्रतिदिन असत्य घोषणाएं कर जनता को बहकाने की आदत पड़ गयी है, जिनकी कथनी और करनी में अन्तर है, हम उनकी सद्-बुद्धि के लिए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

—बहुत बड़े काम, और दायित्व हम पर, आप पर, ऋषि दयानन्द के अनुयायियों पर हैं। पर इन के लिए किसी के भी पास समय नहीं। आज की घड़ी निर्णायक है। आज नहीं तो फिर कभी नहीं, इसलिए—काम में लगो, वेद का प्रचार करो। ऋषि दयानन्द का संदेश फैलाओ और सभी कुछ भूल जाओ—

आर्य समाज की सारी शक्ति घर-घर "वेद", सत्यार्थप्रकाश और ऋषि जीवन फैलाने में लगे········यह हमारी इच्छा है—
क्या आप इस इच्छा का साथ देंगे ?

—भारतेन्द्र नाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारी संख्या में मंगाएं : बांटें

चारों मूल वेद सजिल्द

आप को १२) में मिल सकते हैं। डाक व्यय पृथक होगा। घर-घर में वेद पहुँचाइए।

सत्यार्थ-प्रकाश

अब अधिक से अधिक मंगाइए : प्रचार कीजिए

प्रचार संस्करण	···कार्ड की जिल्द	···२००) सैकड़ा
राज संस्करण	··· गत्ते की जिल्द	···२२५) सैकड़ा
उपहार संस्करण	···बढ़िया कपड़े की जिल्द	···३२५) सैकड़ा

स्वामी दयानन्द सरस्वती

जीवन : सिद्धान्त : श्रद्धांजलियां

ऋषि जीवन का यह चतुर्थ संस्करण पहले सभी संस्करणों से अधिक सुन्दर और आकर्षक है। आवरण ४ रंगों में मोहक है। लागत १)५० पैसे। पर प्रचार के लिए १००) सैकड़ा। पृष्ठ २४४ : बढ़िया सफेद कागज।

रेल डाक व्यय पृथक्

जन - ज्ञान - प्रकाशन

१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैशाख संवत् २०३० | अप्रैल १९७३

अंक में पढ़िये

१.	संपादकीय	४	—राकेश रानी
२.	दयानन्द संसद् का निमंत्रण	५	—भारतेन्द्र नाथ
३.	मैं हृदय मंदिर से लिख रहा हूं	६	"
४.	पाठकों के पत्र	१३	
५.	? ? ? [कविता]	१७	—बनारसीसिंह
६.	हृदय के तार [कविता]	१८	—राज एम. ए.
७.	बाप हस—बेटा बालयोगेश्वर	१९	—दीनानाथ सिद्धांतालंकार
८.	भारतीय शिष्य ईसा	३३	—एन. नोटोविच
९.	दर्शन-दिग्दर्शन	५५	—आचार्य पं० हरिदत्त शास्त्री
१०.	नेटाल में आर्य समाज	७५	—भेंटवार्ता
११.	जैन-मत-विचार	७८	—राधाकृष्णआर्य
१२.	अमृतसर का नृशंस हत्याकांड	१००	—पं० दीनानाथ
१३.	युगारम्भ [कहानी]	१०९	—वैद्य गुरुदत्त एम. ए.
१४.	अभीष्ट फल प्रद "गो-सूक्त"	११६	—विष्णु शर्मा शास्त्री
१५.	अद्भुत बातें कुछ बड़ों की	११७	
१६.	दहेज उन्मूलन आन्दोलन	११८	
१७.	वेद में नारी का अधिकार	१२१	—प्रकाशवती शास्त्री
१८.	वेद प्रचार यज्ञ में प्राप्त आहुतियां	१२३	

आर्य समाज का संदेश देश के हर घर आंगन में कैसे गूंजे ?

प्रश्न पर विचार के लिए २२-२३ मई को गाजियाबाद आइए

हम आप को बुला रहे हैं इसलिए कि आप देश को जगा सकें

—भारतेन्द्र नाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

घर-घर में अध्यात्म गंगा बहाने के लिए

१. मां गायत्री
गायत्री मंत्र पर महर्षि दयानन्द, श्रीपाद पं० दामोदर जी सातवलेकर, महात्मा आनन्द स्वामी, स्व० प्रभु आश्रित जी, व स्वामी समर्पणानन्द जी के विचार। मूल्य ८० पैसे

२. उपनिषद् कथा माला
महात्मा नारायण स्वामी ५०) सैकड़ा : मूल्य ८० पैसे

३. ईश्वर भक्ति
स्व० स्वामी सर्वदानन्द जी की अनुपम प्रेरक महान् रचना। प्रभु से मिलने का मार्ग दर्शन ५०) सैकड़ा : मू० ८० पैसे

४. मोक्ष का वैदिक मार्ग
आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री : योगीराज पथिक मूल्य ५० पैसा

५. ईशोपनिषद्
पं० हरिशरण कृत प्रभावपूर्ण व्याख्या — ५० पैसा

६. प्रार्थना सुमन
पं० चन्द्रभानु जी सिद्धांतभूषण — ५० पैसा

७. शतक-त्रयी ३०० वेद मंत्रों का अर्थ सहित संग्रह मूल्य—१)

८. उपनिषद् वचनामृत
उपनिषदों का सार-प्रेरक संग्रह मूल्य ५० पैसे

९. उपनिषद्-त्रयी
वेद मंत्रों का हिन्दी अंग्रेजी में प्रेरक अर्थ ६० पैसे

१०. वेदामृत
पं० सातवलेकर जी व स्वामी वेदानन्द जी द्वारा संपादित महान् ग्रन्थ मूल्य ३)

पढ़िए—पढ़ाइए—प्रचार कीजिए

जन-ज्ञान-प्रकाशन

१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२२-२३ मई १९७३ को वे आर्यजन गाजियाबाद पहुँचें—जो......

—जो अपने को ऋषि दयानन्द का अनुयायी समझते हों और अनुभव करते हों कि हमें ऋषि के महान् दिव्य स्वप्नों को पूर्ण करना चाहिए।

—जिनका हृदय संसार से समस्त मत-वादों का अस्तित्व मिटा एक सच्चे वैदिक धर्म की विचार धारा प्रसार के लिए मचल रहा हो—

—जो आर्य समाज स्थापना शताब्दी केवल एक नगर में या कुछ दिन के उत्सव रूप में न मनाकर इस शताब्दी के अवसर पर सारे भारत को 'वेदमय' देखने की भावना रखते हों।

—जो चाहते हों कि देश में और धरती पर ऋषि दयानन्द की विजय पताका फहराए। वर्तमान आर्य समाज संगठन ऋषि दयानन्द का आर्य समाज बने। आर्य समाज भवन सक्रिय प्रचार केन्द्र बनें और अपने क्षेत्र में क्रान्ति यज्ञ का संचालन करें।

भाइयो और बहनो !

समय बहुत थोड़ा है और कार्य बहुत बड़ा ! आर्य समाज स्थापना शताब्दी के ऐतिहासिक अवसर पर भी यदि हम उच्च स्वर में शंखनाद न कर सके। घिसी पिटी लकीर पीटने की आयोजनाएं त्याग कर नयी शक्ति और साहस से तूफानों से टकराने का साहस यदि आज भी न संजो सके, तो फिर कभी हम कुछ कर सकेंगे, इसकी कौन आशा कर सकता है।

'दयानन्द-संसद्' का यह प्रथम अधिवेशन उन सभी ऋषि भक्तों को गाजियाबाद पहुँचने का निमंत्रण देता है जो युग के प्रवाह को बदल नया युग दयानन्द का—"दयानन्द-युग" लाना चाहते हों।

हृदय में श्रद्धा और अग्नि लेकर २२-२३ मई को गाजियाबाद आइए, ताकि सभी ऋषि के सच्चे भक्त गंभीरता पूर्वक बैठ कर निश्चय कर सकें कि—

क्या किया जाए कि काश्मीर से कन्या कुमारी तक और कच्छ से नेफा तक "ऋषि दयानन्द की जय" के स्वर सुनायी पड़ सकें।

हम उन्हें बुला रहे हैं जो ऋषि दयानन्द के दिव्य स्वप्नों को पूर्ति के लिए कुछ करना चाहते हों—

आइए—और आने की सूचना हमें तुरन्त दीजिए—

विनीत

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली-५

भारतेन्द्र नाथ
अध्यक्ष

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उत्सव बहुत कर चुके हो,
मंदिर बहुत बना चुके हो,
प्रदर्शन बहुत हो चुके हैं,

●

आर्य नेताओ !

आर्य समाज स्थापना शताब्दी
कुछ ऐसे ढंग से मनाओ कि–

संसार दयानन्द की
विचार धारा से गूंज उठे।

●

भारत "वेदमय" हो जाए,

●

मंदिर-मस्जिद-गिरजाघरों पर
'ओ३म्' पताका लहराने लगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

नशे की बहार

भारतकी राजनीति नशे से प्रभावित है । नशा जिसका चढ़ जाए उसी का रंग जम जाए । जो जितना बड़ा झूठ बोले, वह उतना ही अधिक नशा चढ़ा अपना उल्लू सीधा कर सके ।

कभी राजनीति धर्म से संचालित होती थी अब राजनीति से धर्म निष्कासित है । आज की राजनीति का रंग नशे का रंग है । जिसका ढंग बेढंग और चाल तंग है जिसके अंग संग झूठ, धोखा, फरेब, व्यभिचार की तरंग है ।

राज्य की कृपा के प्रभाव से नशे की बाढ़ ऐसी बढ़ी है कि सारा देश उसमें डबता जा रहा है । आर्यों के प्रभाव क्षेत्र हरयाणा में शराब आर्य राज्य के नारे के साथ जिस तेजी से बढ़ी है कि देखकर मस्तिष्क दंग है । शराब का शबाब सीमा में घुसते ही नजरों पर कुछ ऐसा चढ़ता है कि जिधर देखते हैं उधर वही दिखाई पड़ता है ।

आज का युवक हो या युवती, बहन हो या पत्नी, सभी पर शराब छायी है । वह कुछ ऐसी भायी है कि बिना उसके कुछ भी जमता नहीं । गली-गली गो-रस के स्थान पर शराब चलती है । गुंडा गर्दी बढ़ती है, दाम मिलते हैं, पर प्राण बिकते हैं । शान बढ़ती है, पर जान मिटती है ।

किसी ने कहा है कि When the wine is in, the wit is out—जब शराब भीतर तो बुद्धि बाहर । और मिल्टन ने कहा था कि "संसार की सारी सेनाएं मिल कर भी इतनी हानि सम्पत्ति व जन की नहीं करतीं जितनी की शराब ।" महात्मा गांधी ने शराब के पीछे जितना शोर मचाया, लगता है वह सब बेकार गया ।

और आज देश मधुशाला बन चुका है । गरीब अमीर सब शराब के प्रभाव में बह चुके हैं । कोई ढंग नहीं कि इसे रोका जाये ।

युवकों के हाथ अब ध्वंस के लिये रह गये हैं । आर्यों का काम रह गया है केवल भाषण । सबने चूड़ियाँ पहन ली हैं । इसलिए किसे कुछ कहें—किसका आह्वान कर पुकारें–कि भारत की भूमि से शराब का अस्तित्व मिटा दो ।

शराब न मिटी तो भारत मिट जायेगा, वह मिट रहा है पर किसे दर्द है इस मिटने का..........

प्रश्न मिटने का है । कौन किस लिये मिटता है । अपने लिये या देश के लिये । **शराब को मिटाने हेतु कौन तैयार है ?**

सन्ध्या-हवन और नित्य कर्म

हम बातें बहुत करते हैं । पर असर नहीं होता । हमारा उपदेश दूसरों के लिए होता है अपने लिये नहीं, इसलिये सब कुछ बेकार जा रहा है ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रत्येक "जन-ज्ञान" के सदस्य से हमारा आग्रह है कि वह प्रतिदिन प्रातः या सांय एक बार तो अवश्य ही सपरिवार मिलकर सन्ध्या करें। जो यज्ञ भी कर सकें तो बहुत उत्तम, अन्यथा आरम्भ सन्ध्या से करें।

एक साथ बैठ कर सन्ध्या करने के क्या लाभ हैं इसका अनुभव आप स्वयं ही एक मास पश्चात करेंगे। प्रभु आप को प्रेरणा करें कि आप व्यवहार में अपना जीवन बदल सकें।

सादगी का मार्ग

सुख-शान्ति और आनन्द की राह सादगी के भाव अपनाने से ही दीखती है। फैशन या सजावट व्यक्ति को अन्धा बना देते हैं। और वह इस मार्ग को देखने की शक्ति खो बैठता है। आज सर्वत्र फैशन की बाढ़ है। शरीर को सजाने की लहर ने आत्म-तत्व को गहरे अन्धकार कूप में डाल दिया है। सत्य क्या है, यह जानने की जिन्हें इच्छा हो, जो सुख की राह पर चलना चाहें वे जीवन में सादगी-सरलता लायें—परिणाम आप स्वयं अनुभव करेंगे।

जन-ज्ञान के सदस्यों से !

हमारी शक्ति का स्रोत "जन-ज्ञान" के सदस्य ही हैं। जो कुछ भी हम कर रहे हैं उस सब का श्रेय भी जन-ज्ञान के सदस्यों को ही जाता है। वेद भाष्य के प्रकाशन का साहस भी हमने आपके ही बल पर किया था।

आप स्वयं सोचिए कि आपने इस दायित्व को कहां तक निभाया है ? क्या यह महान् कार्य आप सफल देखने के लिये उत्सुक नहीं हैं ? क्या हमारे हजारों भाई इस पवित्र कार्य को अपना कार्य समझ कर हमारी उलझन नहीं सुलझा सकते।

हमने तो जो कहा है उसे प्राण देकर भी पूरा करेंगे। किन्तु क्या वेद का प्रचार आपका दायित्व नहीं है ?

सोचिये और निर्णय कीजिये—

—राकेशरानी

२२-२३ मई १६७३ को दयानन्द—संसद् के प्रथम अधिवेशन में भाग लेने गाज़ियाबाद पहुँचें।

●●●

३० अप्रैल तक पहुंचने को सूचना दीजिए !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिमालय के संत योगिराज स्वामी योगेश्वरानन्द जी का

आशीर्वाद

●

धर्म प्रेमी जन "वेद-भाष्य" प्रकाशन में पूर्ण सहयोग दें।

●

राष्ट्र के गौरव और महान् तपस्वी श्री स्वामीयागेश्वरानन्द जी [महात्मा आनन्द स्वामी जी के गुरू]के दर्शनार्थ हम गए और उन्हें छपा हुआ वेद भाष्य दिखाया। वेद भाष्य को देखकर और ८००० प्रतियां केवल ३५) में देने की बात सुनकर वे आश्चर्य चकित रह गए। उन्होंने कहा कि तुम सा मूर्ख मैंने दुनियां में नहीं देखा। इतना महान् ग्रंथ तुम कैसे ३५) में दोगे ? उनके चरणों में नत होकर हमारा उत्तर था कि यह कार्य प्रभु का है, प्रभु के भरोसे ही आरम्भ किया है, वही पूर्ण करेंगे।................

चलते हुए आशीर्वाद स्वरूप उन्होंने वेद भाष्य के लिए १०१) भेंट किए। उनके यह १०१) हमारे लिए १ लाख रु० से अधिक महत्त्व रखते हैं। यही नहीं उन्होंने अपने कर कमलों से लिख कर जनता के नाम अपना सन्देश भी दिया जो इस प्रकार है—

"चारों वेदों के भाष्य के लिए "दयानन्द-संस्थान" प्रयत्नशील है। यह एक महान् उपकार का कार्य मानव मात्र के लिए है। वेद ज्ञान प्रत्येक सम्प्रदाय और प्रत्येक मनुष्य के लिए कल्याण कारी है। जैसे सूर्य और चन्द्र मानव मात्र के लिए प्रकाश प्रदान कर रहा है। सृष्टि के आरम्भ में प्रभु ने यह ज्ञान मनुष्य मात्र के मार्ग प्रदर्शन हेतु दिया था। श्री भारतेन्द्र नाथ जी इस वेद के पवित्र भाष्य को प्रकाशित करके सर्व जन कल्याण के लिए दिव्य आलोक प्रकाशित कर रहे हैं।

यह कार्य अत्यन्त महान् है। **अतः सभी धर्म प्रेमी जनों को इस पवित्र ऐतिहासिक कार्य में सहयोग देना चाहिए। इनका उत्साह बढ़ाकर कार्य की सफलता के लिए हाथ बंटाना चाहिए।** मेरा हार्दिक आशीर्वाद और शुभ कामना इनके साथ हैं। मैं परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि जो कार्य आरम्भ हुआ है वह पूर्ण सफल हो—

आशीर्वाद—

ऋषिकेश

—योगेश्वरानन्द सरस्वती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द संस्थान द्वारा प्रकाशित

अंग्रेजी-साहित्य

1. Light of truth. अंग्रेजी भाषा में (दूसरा संस्करण) सत्यार्थप्रकाश (कपड़े की जिल्द में) अब मिल रहा है — मूल्य १२)
2. A short life story of Swami Dayananda Saraswati. मूल्य १)
3. Man and his religion. स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती लिखित वैदिक विचारधारा प्रसार के लिए महान् रचना मूल्य १)
4. What is yoga. योग क्या है ? इस संबन्ध में सही जानकारी देने वाली पुस्तिका मूल्य २० पैसे — १५) सैकड़ा
5. Teachings of Swami Dayananda. — मूल्य १)
6. The vedic fundamentals. Shri R. D. Sharma — मूल्य २.५०
7. Ten commandments. स्व० पं० चमूपति जी द्वारा लिखित आर्यसमाज के १० नियमों की प्रभावपूर्ण व्याख्या मूल्य १.००
8. The Ten principles of the Arya Samaj. १५) सैकडा
9. The Great Gaytri. २० पैसे — १५) सैकड़ा
10. Vedic-prayer. संध्या-हवन-स्वस्तिवाचन, शान्तिप्रकरण आदि की अंग्रेजी हिन्दी में विस्तृत व्याख्या — मूल्य २.५०
11. Life and teachings of Swami Dayananda. मूल्य १०-००
12. Vedic life. वेद के अनुसार जीवन कैसे विताएं ? वेद मंत्रों द्वारा हिन्दी और अंग्रेजी में प्रेरक मार्ग दर्शन मूल्य २.५०
13. Message of the Arya Samaj to the universe. मूल्य ५० पैसे
14. Dayananda the Great. १५ पैसे — १०) सैकड़ा
15. Christianity and Vedas. पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड द्वारा लिखित खोजपूर्ण ग्रन्थ—मूल्य १.५०
16. Bible in the balance. .15
17. A challenge to the christian faith. .05
18. An introduction to the Arya Samaj. .15
19. The Essence of Vedic Religion. .15

अंग्रेजी जन-ज्ञान के अधिक से अधिक सदस्य बना सहयोग दें।

जन - ज्ञान - प्रकाशन

१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ ~ भारतेन्द्र नाथ

चे ता व नी !

समय थोड़ा है और काम बहुत ! १९७५ तेजी से पास आता जा रहा है और हमारे कर्णधार आपसी संघर्ष और कागजी योजनाओं से आगे बढ़ने को तैयार नहीं ।

आर्यसमाज स्थापना शताब्दी भी पार्टी बाजी के षडयन्त्र की भेंट न चढ़ जाए और जागरण का यह स्वर्णिम अवसर भी कहीं हमारे स्वार्थों की वेदी पर न खो जाए यह चिन्ता सर्वत्र व्याप्त हो रही है । हमारे सामने दो मार्ग हैं, चुप रहें और शताब्दी को बीत जाने दें या कुछ स्वयंभू नेतानों की रुष्टता की चिन्ता किए बिना जनता का आवाहन करें और यत्न करें कि सारा देश उत्साह से शताब्दी समारोह मनाए !

बहुत विचार कर हमने आर्य समाज के सर्वोपरि हित में दूसरा मार्ग ही चुना है । हम चाहते हैं कि प्रत्येक ऋषि दयानन्द का अनुयायी इस समय ऋषि का उत्तराधिकारी बन अपना कर्तव्य पहचाने और अपने आप काम में लग जाए । अपना क्षेत्र चुन ले और अगले २५ मासों में कम से कम १०० व्यक्तियों को आर्यसमाज की बात बताए ।

देश के लाखों ग्रामों तक आर्यसमाज का संदेश पहुँचाने का लक्ष्य हमारे मस्तिष्क में होना चाहिए । **मारीशस या कहीं और प्रदर्शनात्मक सम्मेलन, जहाज यात्रा में लाखों रुपया व्यर्थ नष्ट करा कर हमारे नेतागण आर्यसमाज का कौन सा हित कर रहे हैं ?** बहुत सोचने पर भी हमारी समझ में यह नहीं आ सका । जो रूप रेखा आर्यसमाज स्थापना शताब्दी की आज तक प्रकट हुई हैं वह पूर्ण भी हो जाए तो क्या लाभ आर्य समाज को होगा ? यह हमारी समझ से परे है ।

हम चाहते हैं कि भारत के हर नागरिक को यह बताने का यत्न किया जाए कि—

१—आर्यसमाज क्या है ?
२—धर्म का सच्चा स्वरूप क्या है ?
३—महर्षि दयानन्द क्या थे ? और उनका संदेश क्या था ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३० करोड़ व्यक्तियों तक यह यह बात पहुँचाना साधारण कार्य नहीं है। इसके लिए जो श्रम, साधना और भावना अपेक्षित है उस का हम सर्वथा अभाव पाते हैं। आर्यसमाज के सर्वोच्च नेताओं की निष्ठा बंटी है। समय बँटा है। उनका एक-एक पल केवल आर्यसमाज के लिए ही होना चाहिए। उनकी कथनी और करनी में अन्तर होना अत्यन्त अहितकर प्रभाव डालता है।

आज ऐसे शीर्षस्थ नेताओं का अभाव सबसे बड़ी समस्या है जो अग्निपुंज बन कर अज्ञान को जला सकें। जो कम से कम अगले २५ मास केवल आर्यसमाज के लिए दे सकें। किन्तु यदि नेता कुछ नहीं करते तो भी आर्यजनता अपना कर्तव्य पालन करे, यह हमारी इच्छा है।

आज नहीं तो फिर कभी नहीं। यह निर्णायक घड़ी है, जो जाग सकें, अपने को बदल सकें, वे पूरी शक्ति से ऋषि के सैनिक बन कर काम में लग जाएं।

आर्यसमाज संगठन के नेताओं के **चरणों में हमारी विनम्र प्रार्थना** है कि वे इस समय राग-द्वेष पार्टीबाजी और व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर एक साथ मिलकर आर्यसमाज स्थापना शताब्दी मनाने का यत्न करें। जलसे और सम्मेलन मात्र करने को ही शताब्दी कार्यक्रम न बनाएं। कुछ ऐसा ढंग बनाएं कि सारे देश में ऋषि दयानन्द और वैदिक धर्म की जय के स्वर गूंज उठें।

स्वयं आत्म निरीक्षण कीजिए। जन्म गत जातिवादी पुछल्ले नामों के साथ लगा कर आर्यसमाज को कलंकित न कीजिए। अपनी पूर्ण निष्ठा और संपूर्ण कार्य शक्ति से केवल आर्यसमाज का ही कार्य कीजिए। आर्यसमाज के संदेश को कैसे फैलाया जाये, यही सोचिए और मार्ग बनाइए। हम पर, संसार पर ऋषि दयानन्द के जो महान् ऋण हैं उन्हें उतारने का समय आ गया। समय आ गया कि हम सिद्ध कर दें कि ऋषि के अनुयायी एक हैं, उनका लक्ष्य एक है, और वे अपने उद्देश्य के लिए बड़े से बड़ा त्याग कर सकते हैं।

आओ मेरे भाई! अगले २५ मास के लिए हम अपने को बदल दें, ताकि संसार के भाग्य को बदला जा सके। हम जलाएँ यज्ञाग्नि और अपनी संपूर्ण शक्ति से देश को वेद-धर्म और दयानन्द की स्वर लहरी से गुंजा सकें।

ऋषि दयानन्द की विजय के लिए अपने स्वार्थों की आहुति द आर्यसमाज स्थापना शताब्दी मनाने की तैयारी करो!

हमारी प्रार्थना

प्रत्येक आर्य समाज के सदस्य और अधिकारी से हमारी प्रार्थना है कि वह अपनी अंतरंग या साधारण सभा बुला कर अगले २५ मास का कार्यक्रम निश्चित करें।

१—कितने सत्यार्थप्रकाश, ऋषि जीवन और वेद भाष्य फैलाने हैं?
२—अपने नगर के कितने नए व्यक्तियों के विचारों को बदलना है।
३—कितने ग्रामों में प्रचार करना है?
४—कितने ट्रैक्ट बांटने हैं।
५—प्रचार–पोस्टर कितने लगाने हैं।

लक्ष्य निश्चित कीजिए। बैंकों की पूंजी को प्रचार में लगाइए। आगे बढ़ कर युग की चुनौती स्वीकार करो। ऋषि दयानन्द की विजय के लिए काम करो। आगे बढ़ो। प्रभु का आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। चलो उठो, विश्व विजय करने, यही आज की मांग है—

—भारतेन्द्रनाथ

जन-ज्ञान (मासिक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

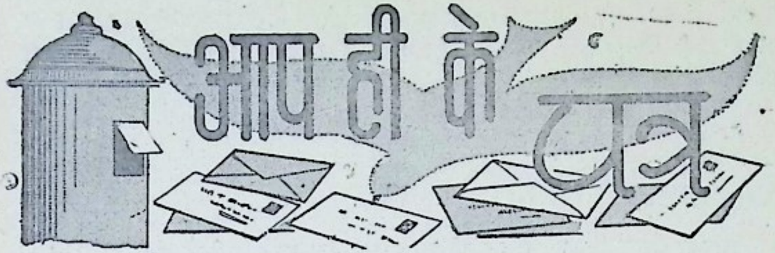

●●●

श्रद्धेय !   सादर प्रणाम ।

आपही के पत्र शीर्षक स्तम्भ में अपने प्रकाशित पत्र को पढ़ने के साथ ही—"मैं हृदय मंदिर से लिख रहा हूँ" शीर्षक जिसमें प्रचार के लिए व्यक्ति चाहियें" आपका हार्दिक और अत्यन्त मार्मिक अपील भी पढ़ा। मेरा मन छू गया। आपकी पवित्र भावनाओं से, ऐसा लगा कि पद लोलुपता की बढ़ती भावना और पद प्राप्ति हेतु भाषणों के माया जाल फैलाने वालों का अन्त होता। गलत व्यक्ति कभी सही नहीं कर सकते, करने दे भी नहीं सकते। निश्चिय ही क्रांति बलिदान चाहती है भाषण नहीं। तूफान निर्माण में बदल सकें, इसके लिए पवित्र भावनाओं से युक्त व्यक्तियों को कमर कसना होगा। जब मन में दृढ़ता और कर्म में विश्वास हो जाय तो व्यक्ति लक्ष्य तक पहुँच पाता है। ग्राम-ग्राम गली-गली और सर्वत्र ऋषि दयानन्द की जय के स्वर गूँज सकें, सचमुच ही इसके लिये कितनों को समय है, समय ही जाने।

इस पुण्य कार्य में सहयोग के लिये आपको दो-तीन व्यक्ति चाहियें, जो दिन-रात स्वामी दयानन्द के सन्देशों को फैलाते रहें। सम्वन्धित जीवन दानियों के दायित्वों का वहन संस्थान करेगा। यह जानकर तो इच्छुक पात्रों की कोई कमी नहीं होगी। किन्तु नहीं कह सकता मैं किस हद तक अपनी सेवा दे सकने में सक्षम बन सकूँगा। यदि मैं संस्थान के दायित्वों को निभा सकूँ तो अपना सौभाग्य मानूँगा। क्या मेरा सेवा स्वीकार करने की अनुकम्पा करेंगे ?

—देवनन्दन शर्मा

(पटना) (विहार)

आदरणीय महोदय,

मैं हर महीने प्रत्येक अंक को बड़े प्रेम से पढ़ता हूँ और फिर उस अंकको दूसरे को पढ़ने के लिए देता हूँ। मुझे बड़ी प्रसन्नता सी महसूस होती है। और ऐसा जान पड़ता है कि वैदिक काल के आदर्शों का प्रवाह भारत में आरम्भ हो गया है जो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रत्येक पाखण्ड को अपने साथ बहाकर समाप्त कर देगा। मैं वर्तमान अध्यक्ष और सम्पादक महोदय जैसे परिश्रमी कर्मठ धर्मनिष्ठ और त्यागी जन (दयानन्द संस्थान) के सभी कार्य कर्त्ताओं की दीर्घायु की ईश्वर से कामना करता हूँ जिससे ये देश की युवा पीढ़ी को नेता बनने के बजाए धर्म सेवा तथा देश सेवा की प्रेरणा दें सकें।

—रूपराम गहलौत,

आदरणीय-महोदया,

आपका ध्यान निम्न लिखित की ओर आर्कषित करने के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ। "सरिता अंक ४२६- फर्वरी (द्वितीय) १६७३ पृष्ठ ५७ से६०., श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा अज्ञात द्वारा "रक्त सने पृष्ठ" शीर्षक लेख"

इसमें लेखक ने न माँस भक्षण वरन् गो माँस भक्षण' का विधान वेदों' तथा अन्य ग्रन्थों में होना बताया है—महर्षि दयानन्द के भाष्य को भी उद्धृत किया है। यह कहां तक ठीक है ? महर्षि दयानन्द के अनुयायियों का इस संदर्भ में चुप रहना मेरी समझ में अवाँछनीय होगा। कृपया यथोचित् कार्यवाही करें।

—प्रश्न चन्द्र शर्मा

मान्यवर !

आपके द्वारा क्रियमान, वेद भाष्य का ऐतिहासिक प्रकाशन, अनेकों सुन्दर ग्रन्थों का अल्प मुद्रा में छापना तथा जनज्ञान अँग्रेजी संस्करण इत्यादि अनेकों कार्य हैं जिसने आर्य-समाज के किसी भी पुराने से पुराने सङ्गठनों के कार्यों को पीछे छोड़ दिया है। एतदर्थ हार्दिक बधाई और धन्यवाद स्वीकार करें। तिस पर भी आपके परिवार की दयानन्द के स्वप्नों को साकार बनाने की अद्भुत तड़प सभी आर्य पुरुषों के लिये अनुकरणीय है।

(इलाहाबाद) —ब्र० ज्वाला प्रसाद शास्त्री

आदर्श-ज्ञान

पूज्य भाई भारतेन्द्रनाथजी !

आपकी सेवा में कल ३७ रुपये मनीआर्डर द्वारा भेजे हैं। उसमें २५ रुपये कुमारी मंजू आयु १३ वर्ष कक्षा ६ में अपनी वर्ष भर की बचत वेद प्रचार के लिये दिये और संकल्प किया कि इसी तरह आगे भी अपनी आहुती इस महान यज्ञ में भेजती रहेगी। कुमारी मंजू के मन में धर्म के प्रति बहुत आस्था है। शेष ११ रुपये वेद प्रचार के लिये आप की सेवा में भेज रहा हूँ। जो भी मुझसे बन सकेगा आपकी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सेवा में भेजता रहूँगा। आपकी लेखनी में शक्ति है। आशा है आपके प्रयत्नों से शीघ्र आर्यों की एक ऐसी सेना बन जायेगी जिनकी कथनी और करनी एक होगी। आज जनता पर आर्यों का प्रभाव क्यों कम हो रहा है केवल इस लिये कि आज आर्य अपने भाईयों से पदों के लिये लड़ रहे हैं। न्यायालयों में झगड़ रहे हैं। जनता पर प्रभाव शाली बनने के लिये हमको स्वामी दयानन्दजी के गुणों को ग्रहण करना होगा। सच्चे आर्य बनना होगा। घर घर में नित्य हवन करना होगा। प्रभु हमको शक्ति दें कि हम सफल हों।

शिमला ४

—महाराज कृष्ण

श्रद्धेय अध्यक्ष महोदय,

आप के हृदय मंदिर की बात पढ़ कर मेरा मनमयूर नाच उठता है। मेराहृदय बालू की तरह गर्म होकर फिर ठंढा हो जाता है। कारण यह है कि जिस क्षेत्र का मैं निवासी हूँ, वहाँ खोजने पर भी आर्य समाज का कोई व्यक्ति नहीं मिल सकता, यहाँ तक की लोग आर्य समाज का नाम भी नहीं जानते हैं।

कुछ वर्षों से आनन्द मार्ग, हंस मार्ग का प्रचार बहुत तेज है। साथही संत मत का भी प्रचार होने लगा है। कबीर मत का तो प्रचार सदियों से है। इस अंधकार रूपी असार सागर में पथ भ्रष्ट हो कर भटक रहा था। अचानक जन-ज्ञान का सहारा मिला। जैसे "डूबता को तिनके का सहारा" मैं इस बोध दिवस पर संकल्प लेता हूँ कि सप्ताह में एक शाम उपवास रहकर भी आप के वेद प्रचार यज्ञ में अपनी आहुती बोध दिवस, श्रावणी,एवं दीपावली पर भेजता रहूँगा।

साथ ही प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि आपके जैसा ही कर्मठ, त्यागी पुरूष इस संसार को मिलता रहे ताकि ऋषि स्वप्न साकार होकर संसार का अंधकार दूर हो सके।

कटैयागोठ सहरसा

—महादेव प्र० आर्य

जो वतन पर निसार होते हैं
उनको हासिल कफ़न नहीं होता
माने जाते हैं वो वतन परवर
जिनमें दर्दे वतन नहीं होता
उनकी तुरबत पर एक दिया भी नहीं
जिनके खून से जले चिरागे वतन
जगमगाते हैं मकबरे उनके
जो शहीदों के बेचते थे कफ़न।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दक्षिण अमेरिका में स्थित सुरीनाम की प्रान्तिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं० रामप्रसाद जी सुखराज अपने साथियों सहित दयानन्द संस्थान में पधारे। संस्थान की ओर से सभी का स्वागत किया गया।

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

? ? ?

असंतोष की आग, अधिकारों की भूख,
सुख सुविधाओं के सागर में,
तरंगित होने की लालसा।
'स्व' के लिए स्वदेश से द्रोह
तंत्र अपना ही रहे यह मोह
न जाने देश को कहाँ ले जाएगा।
न जाने राष्ट्र को कितना झुलसाएगा ॥
कौन जाने यह दंभ और दिखावा
कब तक देता रहेगा हमें छलावा।
दर्शन की बात कर बहुत जीते हैं
दर्शन के भरे पूरे 'दर्शन' के रीते हैं।
यह आत्मवंचना है या प्रवंचना
हम चाहते हैं औरों को छलना
किन्तु भूल जाते हैं कि
हम स्वयं ही छले जा रहे हैं।
अपने को ही स्वयं आज
अनजाने में खा रहे हैं।
अजरता अमरता के गायक
स्वयं को मृत्यु पथ पर बढ़ा रहे हैं ॥
जब तक यह दंभ पलेगा
मनुष्य स्वयं को ही छलेगा
तब तक यह दिखावा
यह वंदनाओं का नाटक
न हमें बचा पाएगा
न हम किसी को बचा पाएंगे
आत्महन्ता जाति व राष्ट्र के
घातक हम
गीत भले ही 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के गाए गे
किन्तु स्वयं को पीड़ा देंगे
और दूसरों को भी
क्योंकि जो हमारे पास होगा
वही तो हम दूसरों को बांटेंगे

बनारसी सिंह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हृदय के तार !

जगती तल में वे जन अपना,
नाम अमर कर जाते हैं ।
जननी जन्म भूमि के हित जो.
जीवन धन दे पाते हैं ॥

दीन दुखी पर संकट हो जब,
काल वली मंडराया हो ।
धर्म देश पर दुर्दिन आए,
सब कुछ ही बिखराया हो ॥

ऐसे में जो दयानन्द सम,
अपना देते हैं वलिदान ।
वे बन जाते, मन मंदिर के,
जीवन ज्योतिर्मय वरदान ।

देश धर्म की रक्षा करना,
जिनका जीवन, लक्ष्य ललाम ।
वे होते हैं पूजित जन में,
न्योछावर करते जो प्राण ।

प्राण दान देकर ही मिलता,
गौरव मय जय जीवन-ज्ञान ।
आत्माहुति से सुरभित होता,
राष्ट्र वली का बल उद्यान ।

इतिहास प्रेरणा देता हम को,
अपनी भेंट चढ़ा दें हम ।
त्याग भाव से बढ़ते जाएं,
सबको सुखी बनाएं हम ॥

—श्रीमती राज एम. ए.

जन-ज्ञान (मासिक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कलियुगी पाखण्ड

बाप "हंस" और बेटा "बालयोगेश्वर"

✳ दीनानाथ सिद्धान्तालंकार ✳

पिछले कुछ वर्षों से भारत में नये नकली अवतार और भगवानों की बाढ़-सी आ गयी है। अन्य सम्प्रदायों और मतों की अपेक्षा हिन्दुओं में ही इनकी संख्या अधिक है। पिलखुआ जिला मेरठ के कट्टर सनातन धर्मी श्री भक्त रामशरणदास जी ने एक लेख में लिखा है कि—

"भारत में लगभग अढ़ाई सौ से ऊपर अवतार हैं और मैं सैकड़ों अवतारों से भेंट कर चुका हूं और इनसे मिल चुका हूँ कि जो अपने को भगवान् श्री राम का अवतार तो कोई अपने को भगवान् श्री कृष्ण, कोई अपने को भगवान् श्री शंकर का तो कोई अपने को भगवती श्री दुर्गा का अवतार बता-बता कर डोल रहे हैं और लूट रहे हैं स्वयं परब्रह्म परमात्मा जगत् पिता बन कर। फिर भी देश को व्यभिचार की भट्ठी में झोंक रहे हैं। हाय हाय कैसे रक्षा होगी। मेरे इस देश की और इस महान् परम पवित्र हिन्दू जाति की इन महान् धर्म कालनेमि पाखण्डी नकली अवतारों से ?

लगभग एक वर्ष हुआ, सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, पंजाब के महामंत्री और केन्द्रीय सनातन धर्म सभा के मंत्री स्वामी गुरु चरणदास जी महामंडलेश्वर ने गांधी मैदान में एक सार्वजनिक सभा में अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए कहा था कि केवल दिल्ली में पिछले ८-१० वर्षों से १४ ढोंगी व्यक्ति हिन्दुओं में खड़े हो गये हैं जो अपने को अवतार कहते और हिन्दू धर्म पर कुठाराघात कर रहे हैं।

भारत में इतने अवतार क्यों ?

पर प्रश्न, स्वभावतः उपस्थित होता है कि हिन्दुओं में ही बरसाती कीड़ों की तरह इतने सस्ते और बहुसंख्यक अवतार क्यों पैदा हो जाते हैं, अन्य मतों और सम्प्रदायों में क्यों नहीं ? यह समस्या आज की नहीं है, कई सदियों से हिन्दू जाति को खा रही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
है। भारत में इस्लामी राज्य की नींव को दृढ़ करने के लिए अकबर ने भी माथे पर टीका और गले में तुलसी की माला पहन अपने को "हिन्दू" कह "दीने इलाही" मजहब चलाया था। जिस समय अंग्रेज ने इस देश में अपने पैर जमाने प्रारम्भ किये, तब मद्रास में एक इटालियन पादरी ने पूर्णतः हिन्दू संन्यासी का रूप धारण कर और अपने को शिव का अवतार कह कई वर्षों तक हजारों हिन्दुओं को अपना शिष्य बनाया। फिर, एक दिन अपने समस्त शिष्यों को एकत्र कर घोषणा कर दी "मैं तो ईसाई पादरी हूं। इस लिए मेरे सब शिष्यों को भी अब ईसाई मत में आ जाना होगा। परिणाम स्वरूप, उसके सब चेले-चेलियां ईसाई बन गये। विश्व में सबसे बड़ा घुड़-दौड़ का जुआ खेलने वाले सर आग़ा खाँ ने मुसलमानों में अपने को पैगम्बर और हिन्दुओं में अपने को कृष्ण का अवतार कहकर हजारों-लाखों हिन्दुओं को अपना चेला बनाया। बम्बई और गुजरात प्रदेश में इसके चेलों की बहुतायत है। ये लोग आधे हिन्दू और आधे मुसलमान हैं और आग़ाखानी कहे जाते हैं।

समृद्ध वर्ग पर आगा खाँ का कितना प्रभाव है—इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि देश विभाजन से पूर्व कराची में इस स्थूलकाय अंग्रेजभक्त को एक बार सोने से और दूसरी बार सोने से भी अधिक महँगे प्लाटिनम और हीरे-जवाहरात से तोला गया। इसी प्रकार ईरान का "बहाई मत" आग़ा खाँ की तरह मुस्लिम होता हुआ अपने को हिन्दू अवतार का दम्भ करता हुआ, हिन्दुओं में धर्म प्रचार कर रहा है। इसका विशेष जोर, आज कल मध्य प्रदेश में है। इनके अति-रिक्त लाखों हिन्दू ऐसे हैं—जिनमें शिक्षितों की संख्या भी पर्याप्त है—जो मुसलमानों के पीरों, उनकी कब्रों और दरगाहों के अंधाधुन्ध पूजक हैं।

हिन्दुओं के ह्रास का हेतु-अवतारवाद : ऋषि दयानन्द की घोषणा

अवतारवाद का सिद्धान्त वर्तमान हिन्दू मत की सबसे बड़ी दुर्बलता है। जब तब हिन्दू मत इस सिद्धान्त का अनुयायी रहेगा तब तक परिस्थिति के अनुसार अवतार विभिन्नताओं से जनता को ठगते रहेंगे। यह पाखण्ड, लाख विरोध करने पर भी, रुक नहीं सकता है। इसका तो एक मात्र उपाय अवतारवाद के सिद्धान्त का ही मूलो-च्छेदन करना है। इसी लिए ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के सातवें समुल्लास में पूर्व पक्षी के इस प्रश्न पर कि:—

"जो ईश्वर अवतार न लेवे तो कंस, रावणादि दुष्टों का नाश कैसे हो सके

—निम्नलिखित अत्यन्त युक्तिसंगत उत्तर दिया है—

प्रथम जो जन्मा है वह अवश्य मृत्यु को प्राप्त होता है। जो ईश्वर अवतार शरीर धारण किये बिना जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय करता है, उसके सामने कंस और रावणादि कीड़ी के समान भी नहीं। वह सर्वव्यापक होने से कंस, रावणादि के शरीरों में भी परिपूर्ण हो रहा है, जब चाहे उसी समय मर्मच्छेदन कर नाश कर सकता है। भला इस अनन्त गुण, कर्म, स्वभाव युक्त परमात्मा को एक क्षुद्र जीव के मारने के लिए जन्म, मरणयुक्त कहने वालों को मूर्खपन से अन्य कुछ विशेष उपमा मिल सकती है? और जो कोई कहे कि भक्त जनों के उद्धार के लिए जन्म लेता है तो भी सत्य नहीं, क्यों कि जो भक्त जन ईश्वर की आज्ञानुकूल चलते हैं, उन के उद्धार करने का पूरा सामर्थ्य ईश्वर में है। क्या ईश्वर के पृथिवी, सूर्य, चन्द्रादि जगत् को बनाने धारण और प्रलय करने रूप कर्मों से कंस, रावणादि का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वध और गोवर्धनादि पर्वतों का उठाना वड़े कर्म हैं ? जो कोई इस सृष्टि में परमेश्वर के कर्मों का विचार करे तो "न भूतो न भविष्यति" ईश्वर के सदृश कोई न है, न होगा। और युक्ति से भी ईश्वर का जन्म सिद्ध नहीं होता। जैसे कोई अनन्त आकाश को कहे कि गर्भ में आया वा मूठी में धर लिया, ऐसा कहना कभी सच नहीं हो सकता। क्योंकि आकाश अनन्त और सबमें व्यापक है। इससे न आकाश बाहर आता और न भीतर जाता, वैसे ही अनन्त, सर्वव्यापक परमात्मा के होने से उसका आना जाना कभी सिद्ध नहीं हो सकता। आना व जाना वहाँ हो सकता है जहाँ न हो। क्या परमेश्वर गर्भ में व्यापक नहीं था जो कहीं से आया ? और बाहर नहीं था जो भीतर से निकला ? ऐसा ईश्वर के विषय में कहना और मानना विद्या हीनों के सिवाय कौन कह और मान सकेगा। इसलिए परमेश्वर का आना-जाना, जन्म-मरण कभी सिद्ध नहीं हो सकता, इसलिए "ईसा" आदि भी ईश्वर के अवतार नहीं, ऐसा समझ लेना। क्योंकि राग, द्वेष, क्षुधा, तृष,ा भय, शोक, दुःख, सुख, जन्म, मरण आदि गुण युक्त होने से वे मनुष्य थे।"

क्या श्री कृष्ण ने अपने को अवतार कहा है ?

अवतार के पक्ष में श्री कृष्ण का गीता के अध्याय ४ का श्लोक ७ प्रायः उद्धृत किया जाता है:—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

अर्थात्, जब जब धर्म की हानि और अधर्म की बढ़ोतरी होती है, तब-तब मैं शरीर धारण करता हूं। जब कृष्ण स्वयं धर्म रक्षा के लिए शरीर धारण की घोषणा करते हैं, तब अवतार मानने में क्या सन्देह हो सकता है ? महर्षि दयानन्द ने "सत्यार्थ प्रकाश" के इसी सातवें समुल्लास में इस शंका का निराकरण निम्न शब्दों में सयुक्तिक किया है:—

"यह बात वेद विरुद्ध होने से प्रमाण नहीं और ऐसा हो सकता है कि श्री कृष्ण धर्मात्मा और धर्म की रक्षा चाहते थे कि मैं युग-युग में जन्म ले के श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों का नाश करूं तो कुछ दोष नहीं। क्यों कि "परोपकाराय सतां विभूतयः" परोपकार के लिए सत्पुरुषों का तन, मन, धन होता है। तथापि इससे श्री कृष्ण ईश्वर नहीं हो सकते।"

पुराणों में देवताओं का गर्हित रूप

पुराणों में वर्णित ब्रह्मा, विष्णु, महादेव के गर्हित रूपों—जिनमें उनके एक सामान्य मानव से भी निम्न स्तर के चरित्र आदि लिखित हैं, जैसे अपने से अतिरिक्त दूसरे के भक्तों—अनुयायियों का अविलम्ब नरक में पतन, अपहरण, चोरी, काम-लीला इत्यादि—तब इस सदी के पाखण्डी और ढोंगी अपने को अवतार कहने वाले इसी मार्ग का आलम्बन करें, तो उनका क्या दोष ? इसका एक मात्र उपाय तो इस पाखण्ड लीला के मूल स्रोत का ही अन्त करना है। शिव के विषय में पुराणों में कहा गया है कि गंधमादन गिरि पर वे अपनी प्रिया पार्वती के साथ विहार करते हैं, जहाँ डर के मारे कोई प्रवेश नहीं कर सकता। ऐसे प्रबल योगी, निर्बाध संभोग में तल्लीन कि वे "अनंग इस प्रसंग" में खो जाते हैं, विष्णु क्षीरसागर में लक्ष्मी के सह-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शायी होते हुए काम क्रीड़ारत हैं और ब्रह्मा स्वयं अपनी पुत्री भारती पर ही आसक्त हो गये और भागवत में वर्णित कृष्ण और गोपी लीलाओं का अनुकरण करते हुए यदि अपने को आचार्य कहने वाला रजनीश अपनी पुस्तक में "संभोग से समाधि" के सरल-सीधे-सत्वर मार्ग की घोषणा करे तो उसमें कोई आश्चर्य नहीं हो सकता।

गंगा के नाम से ही मुक्ति

आज के ये सब पाखण्डी गुरु पाप के फल से बचने और सच्ची मुक्ति दिलाने का दम्भ करते हैं। "मुझ पर पूर्ण विश्वास ले आओ, मेरा ही पल्ला पकड़ लो, मैं तुम्हें तत्क्षण तुम्हारे सारे पाप क्षमा करा, सीधा मोक्ष धाम तक पहुँचा दूंगा"—ऐसी घोषणा ये निरन्तर करते रहते हैं। इन दम्भियों की इस गर्वोक्ति का स्रोत भी पुराण हैं। पद्म पुराण, अध्याय ८२ में कहा गया है:—

गंगा गंगेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥
ब्रह्मा चैव गोघ्नोवा, सुरापी बाल घातकः।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो दिवि याति च सत्वरम्॥

अर्थात्—जो १०० योजन (लगभग ४०० मील) की दूरी से भी "गंगा-गंगा" यह शब्द बोल देता है, वह सब पापों से मुक्त हो सीधा विष्णु लोक पहुँच जाता है। चाहे कोई ब्रह्महत्या, गौहत्या, बालहत्या करने वाला हो, अथवा शराबी हो, गंगा स्मरण से वह इन सब पापों के फल से शीघ्र छूट जाता है। इसी पुराण के पंचम खंड में कहा गया है—

विचार्य सर्वशास्त्राणि त्वढ़ीयानि मयोच्यते।
गंगाम्भसि सकृत् स्नात्वा, मोक्षमाप्नोति मानवः॥

अर्थ—सब शास्त्रों को विचार कर मैं कहता हूँ कि गंगा जल में एक वार भी स्नान करके मनुष्य मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

पुराणों के इस प्रकार के विविध देवी-देवताओं और गंगा-पीपल आदि जड़ वस्तुओं पर विश्वास करने से पाप मोचन और स्वर्ग व मोक्ष प्राप्ति की प्रेरणाओं की आड़ में आज के यह नये अवतार अगर भ्रष्टाचार, व्यभिचार, चोर बाजारी, स्मर्गलिंग अथवा भारत के शत्रु विदेशी राष्ट्रों की जासूसी करें तो इसमें किसी को आश्चर्य नहीं करना चाहिए।

पाखंडी का स्वरूप

मनुस्मृति के अ० ४ श्लोक १९५-१९६ में पाखण्डी के निम्न लक्षण अिये गये हैं—

(१) धर्मध्वजी सदा लुब्धश्छाद्मिको लोकदम्भकः।
वैडाल व्रतिको ज्ञेयः हिंस्रः सर्वाभिसन्धकः॥
(२) अधो दृष्टि नैष्कृतिकः स्वार्थ साधन तत्परः।
शठो मिथ्या विनीतश्च वकव्रत चरो द्विजः॥

इन दोनों श्लोकों में पाखण्डियों के १२ स्वरूप बताये गये हैं (१) धर्म के नाम पर ठगने वाला (२) सदा लोभी (३) कपटी (४) संसार में अपनी बड़ाई के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गपोड़े मारने वाला (५) विल्ली के समान धूर्त्त और नीच (६) हिंसा करने और दूसरों से वैर बुद्धि रखने वाला (७) सदा सब के साथ जोड़-तोड़ करने वाला (८) दूसरों के सामने सदा नीची दृष्टि रखने वाला (९) सदा दूसरों से बदला लेने के लिए प्राण तक की हिंसा करने वाला (१०) हठी (११) ऊपर से ही बड़ा विनम्र (१२) बगुले के समान ऊपर से भक्तिका ढोंग करने वाला।

स्वामी हंस की गोप लीला

भारत में आज कल जिन नये ढोंगी अवतारों का प्रादुर्भाव हो रहा है, उन पर ये सब लक्षण पूरी तरह से लागू होते हैं। हम यहाँ इन सब में से आज कल बहुचर्चित बालयोगेश्वर और उसके "डिवाइन लाइट मिशन" के कुछ काले कारनामों और धोखाधड़ी का उल्लेख करना चाहते हैं।

अपने को १४ वर्ष की आयु का कहने वाले "बालयोगेश्वर" का असली नाम "प्रेमपाल" है। यह देहरादून के किसी स्कूल में ८वीं या ९वीं कक्षा का छात्र था। अपनी आयु १४ वर्ष की प्रसिद्ध की हुई है यद्यपि इसकी सत्यता अत्यन्त संदिग्ध है। इस के पिता ने अपना नाम "स्वामी हंस महाराज" रख अपने को योगी और कृष्ण का अवतार प्रसिद्ध किया हुआ था। सिर पर मुकुट, हाथ में मुरली ले कृष्ण का स्वांग बना भक्त-भक्तिनियों के मध्य नाचते हुए यह गीत बोलते थे—

भक्ति का भरा भंडार नहीं,
मेरा राधा जैसा प्यार नहीं,
कहो कैसे मैं तुम को रिझाऊँ रसिया।

तब, भक्त-भक्तिनियां भाव विभोर हो इस गीत के अन्त में "**जरा डुमगी लगा दो मेरे रसिया**" की पंक्ति गुंजा देते थे। "डिवाइन लाइट मिशन" की पत्रिका "धर्म क्षेत्र कुरुक्षेत्र" मासिक के नवम्बर ७२ के अंक के अनुसार "आप भावावेश में आकर नाच उठते थे। हृदय इस कदर द्रवित हो जाता था कि उन्हें अपने शरीर तक की सुध नहीं रहती थी। और वह समय कुछ क्षण के लिए वृन्दावन के उस वातावरण में बदल जाता था कि जहाँ ग्वाल गोपिकाएँ कृष्ण की रासलीला का आनन्द लिया करती थीं।" सन् १९५४ में इन हंस जी ने अपने को कृष्ण का अवतार होने की घोषणा की और पत्रों, पोस्टरों ओर एजेन्टों द्वारा अपना खूब प्रचार कराया। जब देखा कि भूमि तैयार हो गयी, तब अपने सबसे छोटे लड़के (प्रेमपाल, जो अब बाल योगेश्वर बना हुआ है) को "बाल भगवान्" के रूप में सजा कर और कृष्ण सदृश वस्त्र पहना चांदनी चौक, दिल्ली में अपने साथ बैठा कर जलूस निकाला। यह जलूस अभी निकल ही रहा था कि "बाल भगवान्" को मल-मूत्र की इच्छा हुई। तब बाप-बेटा की पोल खुल गयी। तब जलूस को बीच में ही बन्द करना पड़ा। इस प्रकार सारे ढोंग का भण्डा फोड़ हो गया।

हंस स्वामी का पुत्र—बालयोगेश्वर

हंस स्वामी के सम्बन्ध में हमने यह विवरण इसलिए दिया है क्योंकि अपने को बालयोगेश्वर कहने वाला १४ वर्षीय बालक इसी व्यक्ति का सबसे छोटा पुत्र है। इसने अपने पिता के समस्त गुणों को विरासत में प्राप्त किया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारे देश में, प्राचीन इतिहास के अनुसार जितने अवतार हुए, वे सब अपने परिवार में एक मात्र ही थे। श्री राम और श्री कृष्ण स्वयं ही पुराणों के अनुसार अवतार माने गये हैं। उनके माता पिता, भाई बन्धु, पत्नी इत्यादि किसी को यह पद नहीं दिया गया। पर यह कलियुगी हंस अवतार निराले ही हैं। अपने को अवतार घोषित करने के अतिरिक्त अपनी पत्नी और तीन पुत्रों के सिर पर भी मरने से पहले अवतार होने का मुकुट बांध गये। इस प्रकार अवतार प्रोडक्शन का "होलसेल बिजनेस" यह संस्थापक हंस महाराज कर गये हैं। परिवार के इस बिज-नेस" का ब्योरा भी सुन लीजिए:—

"भगवान् एंड सन्स" कम्पनी लि०

सबसे पहले हंस जी की पत्नी जिन्हें "जगत् जननी" की उपाधि से विभूषित किया गया है। इनके सबसे बड़े पुत्र श्री सत्यपाल "बाल भगवान्" हैं। इनकी और शेष दो की शक्ति मिशन के मुख पत्र धर्म क्षेत्र-कुरु क्षेत्र" के नवम्बर ७२ अंक में= युगकी दिव्यतमविभूतियाँ "शीर्षक के अन्तर्गत इस प्रकार वर्णित की गयी हैं—

आनन्द के दाता होने के कारण भक्त समाज में आनन्द कन्द घन भी बाल भगवान् के नाम से सम्बोधित किये जाते हैं। इनकी सौम्यता सहनशीलता, गम्भीरता और मधुर मुस्कान की झांकी जिस पर भी पड़ गयी, बस वह निहाल हो गया। वे सन्त लोक के स्वामी हैं।

अब श्री प्रेम पाल (बालयोगेश्वर) के दूसरे भाई श्री महिपाल "शंकर" का अवतार बताये गये हैं। उनकी प्रतिभा का वर्णन लेख में निम्न शब्दों में किया गया है:—

"असुरों के पापों से बोझिल धरती का भार हरण हेतु संहार का ताण्डवनृत्य खेलने वाले तथा अपनी अद्भुत मस्ती में लीन रहने वाले श्री महिपालजी ! आप दीनों पर दया करने वाले, भक्तों के कष्ट हरण करने वाले और सब प्रकार से समर्थ ईश्वर हैं— इन्हें सारी दुनियां श्री भोले भण्डारी के नाम से विशेष जानती है।"

दिवंगत हंस जी के परिवार की एक तीसरी विभूति हैं श्री धर्म पाल। भला अवतारों से भरपूर इस परिवार में इनकी कैसे उपेक्षा हो सकती थी? इनके रूप और ऐश्वर्य की गुण गरिमा के गान की भी बानगी देख लीजिए।

"इनके नयनाभिराम मुख कमल की मनोहर छवि करोड़ों मनोजों को लज्जित करती है। जो एक बार देख लेता है वह आपका ही हो जाता है। आपके हाव भाव, चाल ढाल, विचार शैली एक राजा के गुणों से पूर्णतः मिलते हैं। उन्हें भक्त गण चक्रवर्ती राजा के नाम से पुकारते हैं। ये प्रजापति "ब्रह्म" के अवतार हैं।

चौथे प्रेम पाल (बालयोगेश्वर) हैं जो हवाई जहाजों और जैटों पर सैकड़ों विदेशी भक्त-भक्तिनियों के साथ भारत और भारत से बाहर सदा यात्रा करते रहते हैं।

बालयोगेश्वर का कच्चा चिट्ठा

भगवान् एंड भगवान्स सन्स प्राइवेट लिमिटिड।" के अवतारों की इस कम्पनी के चारों डायरेक्टरों की, जिनका वर्णन ऊपर किया गया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है—उल्लेखनीय विशेषता यह है कि किसी को भी तपस्वी, त्यागी और योग विद्या का पारंगत न कह कर प्रत्येक के शरीर के सौन्दर्य, हाव भाव, छवि और आकर्षक मुख मंडल का ही वर्णन ऐसे किया गया है, जैसे कामदेव का किया जाता है। सम्भवतः ऐसा इसलिए किया गया है ताकि कमल पर भ्रमर की तरह कामिनी कुल इनकी ओर आकृष्ट हो। बालयोगेश्वर का जो चित्र चमकदार पोस्टरों, पुस्तकों, मासिक पत्रों और "बालयोगेश्वर श्री सन्त जी महाराज की विश्व शान्ति यात्रा विवरण का सन् १९७१ का अंग्रेजी हिन्दी में प्रकाशित "डिवाइन लाइट मिशन" बी १९१३ शक्ति नगर, दिल्ली की ओर से प्रकाशित हुआ है—इन सबमें इसे सुन्दर नयनाभिराम और आकर्षक रूप में विभिन्न प्रकार की पोजों में चित्रित किया गया है—कहीं भी ध्यान मग्न, पद्मासनस्थित तापस रूप न्यूनतम परिधान में ईश्वरार्पित नहीं अंकित किया गया है। इस बात पर तो बार बार बल दिया गया है कि इस बालयोगेश्वर के तीस लाख अनुयायी सारे संसार में हैं पर यह कहीं भी संकेत नहीं किया गया है कि बालयोगेश्वर ने स्वयं वा उस के किसी शिष्य-शिष्या ने कितनी मात्रा तक ब्रह्मानन्द अनुभूति की है अथवा कहाँ तक यौगिक क्रियाओं का अभ्यास किया है ? इस साँसारिक भोग पूर्ण ढोंगबाजी का यह परिणाम है कि इस तथा-कथित मिशन के पास आज दिल्ली, मुरादनगर, ज्वालापुर आदि स्थानों में लाखों रुपये की सम्पत्ति जमा हो गयी है।

जम्बो जैट विमान का धन कहां से ?

१९७१ नवम्बर में जिस जम्बो जैट विमान द्वारा ३०० से अधिक गोरे विदेशी भक्त-भक्तिनियों के साथ यह कलयुगी अवतार दिल्ली आये थे, उसका किराया लगभग १० लाख रु० दिया गया। इस अवतार कम्पनी द्वारा प्रचुर साहित्य और कई मासिक पत्रिकायें भी प्रकाशित की जाती हैं। प्रश्न है कि इतना धन कहाँ से आता है ? १९७२ नवम्बर में इस अवतार कम्पनी के मुख्य डायरेक्टर प्रेमपाल सिंह रावत उर्फ कलियुगी "बालयोगेश्वर" ९०० से अधिक श्वेतांग भक्त-भक्तिनियों सहित दिल्ली पालम हवाई अड्डे पर उतरे थे। इस हवाई यात्रा का खर्च लगभग आधा करोड़ रु० हुआ। यह धन कहाँ से मिला ? क्या सरकार का यह कर्त्तव्य नहीं कि वह इस विशाल धन राशि के स्रोत का पता लगाये ? क्या यह अनुमान लगाना अशुद्ध होगा कि अमेरिका की सी. आई. ए.—जिसके द्वारा भारत में प्रति वर्ष लाखों-करोड़ों रुपया गुप्त रूप से दंगे फिसाद, विद्रोह इत्यादि के लिए खर्च किये जाते हैं उसी की ढोंगी को अवतार के रूप में खड़ा करने और विदेशों में भारत विरोधी प्रचार करने में प्रच्छन्न प्रेरणा और आर्थिक सहायता है।

'मैं हिन्दू नहीं हूं"

१९७१ के रामलीला मैदान में हुए जमघट में अन्तिम दिन इस "भगवान्" ने सिर पर मुकुट, हाथ में मुरली, गोपी वल्लभ के रूप में जब मंच पर से जनता को दर्शन दिये, तब भक्त जन इस मनोहर छवि पर मुग्ध हो गये। अगले दिन इस "दिव्यतम विभूति" से भट वार्त्ता के लिए प्रमुख भक्तों ने दिल्ली के एक सर्वाधिक भव्य होटल में पत्रकारों को आमंत्रित किया। यह "अवतार" महोदय निर्धारित समय से ६० मिनिट बाद ही वहां प्रकट हुए। पत्रकारों के प्रश्नों के उत्तर में आपने जहां अपने आपको "पूर्ण परमात्मा" घोषित किया, वहाँ यह भी कहा कि "मैं हिन्दू नहीं हूँ।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विश्व शान्ति का ढोंग : नवभारत टाइम्स पर हमला

अगले दिन यह भेंट वार्ता दिल्ली के समाचारपत्रों में प्रकाशित हुई। दैनिक नव भारत टाइम्स में प्रकाशित इस भेंट वार्ता के कुछ शब्दों पर इस "अवतार" के भक्तों को आपत्ति हुई। उन्होंने जो खंडन भेजा, वह भी इस पत्र में ठीक प्रकार प्रकाशित हो गया। पर विदेशी धन के मालपूओं पर उन्मत्त इन औंधी खोपड़ी वाले भक्तों को इससे शान्ति नहीं हुई और उन्होंने "नवभारत टाइम्स" कार्यालय के बाहर प्रदर्शन करते हुए उस पर हल्ला बोल दिया। समूचे विश्व में शान्ति की सरिता प्रवाहित करने का दम्भ करने वाले "योगेश्वर" के इन शिष्यों ने समाचारपत्र के कार्यालय पर ईंट-पत्थरों की वर्षा कर, भवन के शीशे तोड़ और कई निरपराधियों के सिर फोड़ प्रेमपाल सिंह रावत उर्फ "बाल योगेश्वर" के "विश्व प्रेम" और "प्रेम पारावार" का अनोखा परिचय दिया। अनेक पुलिस कर्मचारी और समाचार पत्र के कर्मचारी अमरीकी एजेन्टों के इस आक्रमण से घायल हो गये। एक कर्त्तव्यनिष्ठ पुलिस सिपाही को तो इन तथा कथित "शान्ति दूतों' के आक्रमण के फलस्वरूप अपने प्राणों से भी हाथ धोना पड़ा।

एक कर्त्तव्यनिष्ठ पुलिस सिपाही की मृत्यु

"टाइम्स भवन" पर हुए उस दिन के दृश्य को देख कर अनायास ही यह अनुमान होता था कि इस आक्रमण द्वारा भक्त जन अपने आराध्यदेव की भविष्यवाणी को सत्य सिद्ध करने की दिशा में "रिहर्सल" कर रहे हैं। बाल योगेश्वर की यह तो भविष्य-उक्ति है कि "सर्वत्र त्राहि-त्राहि मच जायेगी और वही लोग बचेंगे जो उस ज्ञान ज्योति रूपी कवच को धारण किये होंगे। बहादुर शाह जफर मार्ग पर उस दिन त्राहि-त्राहि तो मच उठी थी और गुरु देव का कवच पहनने के सौभाग्य से रहित पर कर्त्तव्य परायण एक पुलिस सिपाही को इन "शान्ति घोषक" उपद्रवियों के हाथों अकाल में ही यमलोक का वासी बनना पड़ा।

कस्टम पर लाखों की चोर बाजारी का माल

१९७२ नवम्बर के प्रथम सप्ताह में ६०० विदेशी यात्रियों सहित बाल योगेश्वर जिस जम्बो जैट विमान से दिल्ली पालम हवाई अड्डे पर अवतरित हुए, उसमें एक नया गुल खिला। "गुरुदेव" तो चुपके से दो-चार अन्य निकटस्थ शिष्य-शिष्याओं के साथ राल्स रायस द्वारा खिसक गये पर जब इस "महापुरुष" के सामान को लेकर इसके प्राइवेट सेक्रेटरी विहारीसिंह कस्टम पर आये और अधिकारियों ने एक बक्स को खोलने के लिए कहा, तब चालाक विहारीसिंह ने यह कह कर टालना चाहा कि "इस बक्स की चाबी तो मेरे पास नहीं है।" कस्टम अधिकारियों के आग्रह पर चाबी "गुरुदेव" के पास से मंगवाई गयी और उसमें सोना, हीरे, डालर इत्यादि लगभग १० लाख रुपये का चोरी का माल पकड़ा गया। विहारीसिंह ने यह कह कर छुटकारा पाना चाहा कि "यह विदेशी यात्रियों की सम्पत्ति है।" सुनते हैं, इस राशि के छुटकारे और सारे मामलों को दबा देने के लिए सरकार पर बहुत दबाव गया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"मैं ईश्वर हूं" : बालयोगी का दम्भ

विदेशों में जाकर यह ढोंगी अवतार कैसी डींगें मारता है और कैसे गपोड़े हांकता और अपने को क्या कहता है, यह "डिवाइन लाइट मिशन" बी १६/३, शक्तिनगर, दिल्ली द्वारा १ नवम्बर, १९७१ को प्रकाशित "विश्व शान्ति यात्रा का विवरण" से उद्धृत निम्न कुछ वाक्यों से स्पष्ट होता है—

(१) लंदन के "गोल्डर्स ग्रीन' में दिये गये भाषण की रिपोर्ट में कहा गया है—'बाल योगी जब तीन वर्ष के थे, इनके पिता जी का स्वर्ग वास हो गया। प्रत्येक दुःखी था और सब रो रहे थे। लेकिन बालक ने अपनी माता से रोना बन्द करने के लिए कहा तथा पूर्ण अधिकार के साथ घोषित किया कि "मैं वही हूँ।" तीन साल बाद उन्होंने एक बृहत् श्रोता समाज के बीच जीवन दर्शन पर अपना पहला प्रवचन देते हुए घोषित किया—"मैं ईश्वर हूं।" इससे पूर्व से ही वह अपने स्वर्गीय पिता जी के कार्य को आगे बढ़ा रहे थे जो योग द्वारा प्रेरित डिवाइन लाइट मिशन उत्तरी भारत के देहरादून नाम के स्थान से संचालित कर रहे थे। उनके इस अकाल-प्रौढ़ व्यवहार का किसी ने भी उपहास नहीं किया और अब १३ वर्ष की आयु में हजारों शिष्य उनके भारत वर्ष में हैं।" (पृ० ५९)

(२) अमेरिका के एक पत्र "डेनवर पोस्ट" रविवार, २९ अगस्त १९७१ में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार कहा गया है कि—

"बाल गुरु" ने दो साल की आयु से ही ध्यान करना प्रारम्भ कर दिया था और अढ़ाई साल की आयु से पब्लिक के सामने प्रवचन करना आरम्भ कर दिया था। महाराज जी ने प्रार्थना की और अपने पिता का ज्ञान प्राप्त किया जो भारत के अपने समय के एक प्रसिद्ध सन्त थे और जिनका १९६६ में देहावसान हुआ।" यहाँ अभिमान के साथ आप कहते हैं—"वे मेरे पास पानी पीने के लिए आ रहे है क्यों कि वे प्यासे हैं। वे सचमुच सन्तुष्ट हुए। मैंने उन्हें सुखी बनाने के लिए भारत छोड़ा और बहुतों को मैंने सुखी बनाया है।"

'बिहारी सिंह' के पत्र

इस विवरण में कई पत्र भी प्रकाशित हैं जो इनके भक्तों, शिष्यों और बिहारी सिंह ने "गुरु" को और "जगत् जननी माता जी" के नाम लिखे हैं। २६।७।७१ को अमेरिका से लिखे एक पत्र में बिहारी सिंह ने जिन्हें नमस्कार लिखा है उनके नाम और विशेषण ध्यान देने योग्य हैं—

"परम पूज्य, प्रातःस्मरणीया, परम आराध्य, पतित पावन, दयामयी श्री जगत् जननी माता जी, श्री बड़ी माताजी, श्री आनन्द कन्द श्री बाल भगवान् जी, भोले नाथ जी, श्री चक्रवर्ती राजाजी, सबके पावन पवित्र चरण कमलों में—सभी प्रेमियों का हाथ जोड़ कर साष्टांग दण्ड प्रणाम पहुँचे। "चाचाजी, कन्हैया, हरीराम, त्रिवेणी, फमीर, महावीर, इन्द्र सिंह, अर्जुन, पाल सिंह, देव, सुलक्षणा, बुढ़िया माई—सबको मेरा जय श्री सच्चिदानन्द।" (पृष्ठ ७५) इसी पत्र में बिहारी सिंह ने संत कृपाल सिंह के दो चेलों के सम्बन्ध में लिखा है "उन्हें उपदेश हो गया है। वे बहुत खुश हैं। कहते हैं, हमें सन्त कृपाल सिंह ने ज्ञान नहीं दिलाया, वे मंत्र ही बताते हैं।" पृष्ठ ७८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर चार अगस्त १६७१ सान्फ्रान्सिस्को, अमेरिका, से लिखा गुरु चरणानन्द का पत्र प्रकाशित है जिसमें महेश योगी के चेलों के सम्बन्ध में कहा गया है कि इन चेलों की तो अब सुरति उधर से हटकर सच्चे स्वामी के श्रीचरणों में चली आ रही है। खूब उपदेश ले रहे हैं।" जगत् जननी श्री माता जी को लिखे इस पत्र में गुरु चरणानन्द ने नौ गुरु भाइयों को नाम सहित "सादर जय सच्चिदानन्द" लिखा है। उद्धृत पत्र में बिहारी सिंह ने इस अवतार परिवार के १२ व्यक्तियों को और गुरु चरणानन्द ने गुरु भाइयों को नमस्कार लिख प्रकट कर दिया है कि स्वामीजी "हंस" जी की पत्नी "जगत् जननी माता जी" तथा दूसरी पत्नी बड़ी माता जी " इनकी सन्तान बालयोगेश्वर के तीनों बड़े भाई आनन्द कन्द श्री बालयोगेश्वर जी श्री भोले भगवान् और श्री चक्रवर्ती महाराज की—सारी "अवतार लिमिटेड कम्पनी" के कुल १२+६+५=२६ शेयर होल्डर हैं। इसके बाद कितने विदेशी शेयर होल्डर इसमें शामिल होंगे—यह अभी कौन कह सकता है ?

पृष्ठ ७६ पर बिहारी सिंह के ७–८ ७१ के सन् फ्रांसिस्को से लिखे पत्र में महेश योगी पर छींटाकशी करते हुए कहा गया है कि—महाराज ने सुनाया कि अगले साल पूरा परिवार इधर आयेगा"—तो लोग बहुत खुश हुए और खूब जयकार मनायी। लीजिए, अब पूरी "अवतार कम्पनी लि०" विदेश यात्रा के लिए आमंत्रित हो रही है यह मत पूछो, इसका खर्च कौन देगा ?पृ. ८३ पर बिहारी सिंह ने श्री १००८ श्री बाल भगवान् जी को जिन शब्दों से सम्बोधित किया हैं वे मौके के है—"परम पूज्य, भक्त वत्सल, घट-घटवासी, दीनबन्धु, दीनानाथ, जगत् के स्वामी, शान्ति दाता, मन मोहन, शक्ति के सम्राट्, प्राणनाथ।" इनसे कोई पूछे अब "बालयोगेश्वर" के लिए क्या खुशामदी विशेषण घड़ोगे ? पृ० ८६-८८ पर अमेरिका के बोल्डर कोलोरेडो से २१-८-७१ और २२-८-७१ के पत्रों में अपने गुरु की लीलाओं का जिक्र करते हुए लिखते हैं।

योगी की अमेरिका में लीलाएं

"श्री सद्गुरु देव इतने प्रसन्न हैं कि हर समय इन नये-नये प्रकार के भक्तों के बीच हर घड़ी नयी-नयी लीला दिखाकर इनको मोहित कर रहे हैं।" फिर इसी पत्र में बिहारी सिंह कहते हैं "जिस शक्ति ने संसार की रचना की है वह शक्ति साक्षात् रूप में श्री बालयोगेश्वर नाम से प्रसिद्ध है" बोल्डर कोलोरेडो के पहाड़ों पर "जो १६०० फुट ऊँचाई पर हैं, वहाँ दिन भर सैकड़ों भक्तों के साथ महाराज लीला करते रहे। करीब ५० कारें साथ में थीं और १०५ भक्त साथ में थे, रात्रि को वापस आये।" लन्दन से २० अक्तूबर १६७१ के पत्र में गुरुचरणानन्द इन लीलाओं के सम्बन्ध में लिखते हैं—श्री महाराज जी की अद्भुत लीलाओं को हम तुच्छ जीव तो क्या ब्रह्मा, विष्णु एवं महादेव भी नहीं समझ सकते। इस बार जो भक्तों के हृदय सम्राट् भूतल पर पधारे हैं नई और अद्भुत लीलाएं करने के लिए पधारे हैं। कैनाडा की एक लड़की के प्रश्न पर कि "भगवान् लीलाएँ क्यों करता है"—महाराज ने हँसते हुए जवाब दिया—"तब मैं क्या करूँ ?" अर्थात् भगवान् का काम केवल लीला करना ही है ?

इस यात्रा विवरण के अन्तिम पृष्ठ ६६ पर इस योगी का एक प्रवचन दिया गया है जिस के निम्न शब्द ध्यान देने योग्य हैं—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"तुम्हारे अन्दर मेरे प्रति यह श्रद्धा होनी चाहिए कि हाँ, मैं तुम्हें वह ज्ञान दूँगा। तब मैं तुम्हें ज्ञान दूंगा और तुम उस ज्ञान में जो मैं तुम्हें दूँगा, अपनी श्रद्धा रख सकते हो।"

गीता में श्री कृष्ण कहते हैं कि ईश्वर का भक्त उच्च, नीच और सबके प्रति विनम्र होता है पर यह "कलियुगी गुरु" अपने को भक्त न मान कर अपना पद ईश्वर से भी ऊपर समझता है !

बालयोगी के प्रचार में ईसाइयों का षड्यन्त्र

इस यात्रा विवरण को ध्यान से पढ़ने से एक यह रहस्य भी प्रकट होता है कि अमेरिका आदि विदेशों में इस "बालयोगी" का अधिकांश प्रचार ईसाई पादरियों ने किया और उनके गिरजाघरों व अन्य स्थानों में इसके भाषण हुए तथा ईसाई पत्रों में ही इसकी अधिकतः इश्तहारबाजी की गई। तब, यह सन्देह स्वाभाविक होता है कि "बाल योगेश्वर" ईसाइयों का एजेन्ट है और उन्हीं के धन से पुष्ट हो रहा है। ईसाइयों का इसमें स्वार्थ यही है कि हिन्दू धर्म को हीन बताया जाये। इसे योगी ने अपनी विदेश यात्रा के किसी भाषण में भी भारतीय सभ्यता, संस्कृति वा गौरव अथवा वेद, शास्त्र, गीता इत्यादि की उच्चता का किसी प्रकार सामान्य संकेत तक भी नहीं दिया है। आत्म स्तुति के अतिरिक्त ईसा और बाइबिल की प्रशंसा तो अवश्य की गई है पर इस समूचे यात्रा विवरण में एक शब्द भी आर्य सभ्यता की विशिष्टता और वैदिक आध्यात्मिकता के लिए इस "बालयोगी" ने कहने का कष्ट ही नहीं किया। निश्चय ही यह स्वयं और इसके भाषण तैयार करने वाले वैतनिक कर्मचारी वैदिक वाङ्मय और वैदिक सभ्यता से दूर का भी सम्पर्क रखते प्रतीत नहीं होते !

बालयोगी की भविष्यवाणी

"बालयोगेश्वर" भविष्यवाणी करने में उस्ताद हैं। इसकी एक बानगी निम्न शब्दों में देखिए:—

"अब तुम्हें अपनी प्रगति का फल शीघ्र मिलने वाला है।···बमों का विस्फोट ···भयंकर आवाजें···ज्वाला तथा मृत्यु आदि जैसी घटनाएं अब घटित होने वाली हैं। देखो ! देखो ! उस पुरानी घड़ी की ओर, टक टक करती हुई किस प्रकार तेजी से चल रही है। उसी प्रकार यह समय भी तेजी से जा रहा है। इन बमों के विस्फोट, अकाल और टैंकों की गड़गड़ाहट लेकर भयंकर घटनाएं घटेंगी। लाखों लोग मरेंगे, ज्वालामुखी फटेंगे···लोग तबाह हो जायेंगे और चारों ओर त्राहि-त्राहि मच जायेगी··· और वही लोग बचेंगे जो उस ज्ञान ज्योति रूपी कवच को ग्रहण करेंगे। इनके अतिरिक्त सब नष्ट हो जाएंगे" (धर्म क्षेत्र कुरुक्षेत्र मासिक नवम्बर, ७१)

एक ओर "बालयोगी" आधुनिक विचार और पाश्चात्य सभ्यता की इस प्रकार खिल्ली उड़ाते हैं और दूसरी ओर इस विकास प्रदत्त समस्त सुख-सुविधाओं का उपभोग करते हुए जम्बो जैट विमानों पर चढ़ भारत से विदेश और विदेशों से भारत भक्त-भक्तिनी मंडल सहित चक्कर लगाते रहते हैं। जीवन में कितनी विसंगति है !

(यहां हम उत्तर प्रदेश के एक एम. एल. ए द्वारा किये गये कुछ प्रश्न अविकल छाप रहे हैं। क्या कोई इनका उत्तर देगा ?—सम्पादक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बालयोगेश्वर के षड्यन्त्रों से सावधान रहना होगा।

क्या यह सत्य है ?—कि—

(१) बालयोगेश्वर 'पद्मासन' भी नहीं कर सकता।
(२) बालयोगेश्वर की एक वर्ल्ड पीस कोर (World Peace Corps) है जिसमें तीन लाख से अधिक सैनिक हैं, जिनका उद्देश्य भारत पर राज्य करना है।
(३) बालयोगेश्वर अपने आपको पूर्ण कलाओं का साक्षात् 'गुरु' मानता है।
(४) बालयोगेश्वर देहरादून के एक अंग्रेजी स्कूल के नवें स्टैण्डर्ड की परीक्षा में १०० अंक वाले दो पर्चों में केवल ५ और १३ अंक ही प्राप्त कर सका है ?
(५) बालयोगेश्वर और उसके भाई अपने आपको ब्रह्मा, विष्णु महेश का अवतार मानते हैं, जबकि पिछले वर्ष बालयोगेश्वर ने अपने हिन्दू होने से भी इनकार कर दिया।
(६) बालयोगेश्वर के लिए अमरीकी, चीनी भविष्य-वाक्तओं ने भविष्यवाणी की है कि भारतवर्ष के उत्तराखंड में उत्पन्न होने वाला यह 'अद्भुत मानव' भारत पर शासन करेगा।
(७) बालयोगेश्वर ने अपने 'धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र' अक्तूबर ७१ के अंक में भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी को 'शूर्पणखा' के नाम से सम्बोधित किया।
(८) बालयोगेश्वर, उसके चेले तथा उसकी तथाकथित जगत् जननी माँ ने पिछले वर्ष भारत विरोधी वातावरण फैलाया, जबकि भारत व पाकिस्तान के साथ बंगला देश के विषय में निर्णायक युद्ध चल रहा था।
(९) बालयोगेश्वर के हंसादेश, धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र तथा डिवाइन लाइट जैसे पत्रों में स्पष्ट सन्देश होता है कि उनका गुरु भारत पर एक दिन शासन करेगा।
(१०) बालयोगेश्वर के लाखों शिष्य विदेशों से आकर भारत में अनर्गल प्रचार करते हैं और उसके राजा होने की बात कहते हैं।
(११) बालयोगेश्वर अमरीका से जम्बो जेट में भरकर अपने शिष्यों के रूप में सी० आई० ए० के एजेण्टों को भारत लाता है, जो भारत सरकार और भारत की संस्कृति को समाप्त करने पर तुले हुए हैं।

जन-ज्ञान (मासिक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(१२) बालयोगेश्वर को जून ७२ में 'न्यूयार्क चाभी' न्यूयार्क (अमेरिका) में भेंट की गई। क्या सत्य नहीं है कि न्यूयार्क चाभी उन्हीं व्यक्तियों को भेंट की जाती है जो या तो अमेरिका के परममित्र होते हैं या अमेरिका के एजेंट।

(१३) बालयोगेश्वर के इशारों पर उसके चेलों ने कई लोगों को जान से मार दिया या मारने की धमकी दी अथवा बुरी तरह से पीटा। मुरादनगर (मेरठ), देवरिया, पटना और देहरादून में ऐसे मुकद्दमे चल रहे हैं!

(१४) बालयोगेश्वर सत्य का सामना कर ही नहीं सकता, यदि कर सकता है तो अपने योगेश्वर होने का प्रमाण प्रस्तुत करे।

(१५) बालयोगेश्वर महान् हो ही नहीं सकता, क्योंकि उसमें सत्य को सुनने और अपने बारे में कहे गये शब्दों को सहन करने की ताकत है ही नहीं। इसका प्रमाण यह है कि उसके द्वारा कई लोगों और संस्थाओं पर मुकद्दमे इसलिए चलाये गये हैं कि वे उनकी बात मान लें अन्यथा अपने पास जो धन उन्होंने अमरीका आदि पश्चिमी देशों से इकठ्ठा किया है वे उसका खुलकर प्रयोग करेंगे।

(१६) बालयोगेश्वर के घर पर एक ऐसा व्यक्ति है जिसे महाराष्ट्र का बताया जाता है। वही बालयोगेश्वर व इस संस्था के पीछे है।

(१७) बालयोगेश्वर के चेलों का कहना है कि भारत सरकार को जम्बो जेट में आने वाले शिष्यों से दस लाख डालर की विदेशी पूँजी मिलेगी लेकिन क्या इस बात से आँखें मूँदी जा सकती हैं कि इन विदेशियों में सी०आई०ए० के एजेण्ट भी हैं जबकि वे सीधे अमेरिका से आ रहे हैं। यदि भारत सरकार इसी पंजी के कारण इन्हें भारत में आने की आज्ञा देती है तो क्यों नहीं सीधे सी० आई०ए० से ही रुपये ले लेती इस तरह देश में अन्धविश्वास वातावरण उत्पन्न करवाने की क्या आवश्यकता है?

(१८) बालयोगेश्वर के पास करोड़ों की धन सम्पत्ति है तो क्या वह उस सम्पूर्ण देश में फैली हुए सम्पत्ति पर भारत सरकार को इन्कम टैक्स देता है?

(१९) बालयोगेश्वर भारत की संस्कृति को नष्ट करने, देशद्रोही भावना फैलाने और अपना शासन स्थापित करने का स्वप्न देख रहा है। प्रमाण में उसका ही साहित्य पर्याप्त है।

शिवानन्द नौटियाल

एम० एल० ए० उत्तर प्रदेश

प्रेस सुपरिटेंडेंट (फोरमैन से)—मैटर छपने में क्या देरी है?

फोरमैन—सॉब कम्पोज हो रहा है।

प्रेस-सुपरिटेंडेंट—अरे अर्जेन्ट मामला है, पहले इसे छपवा लो, कम्पोज बाद में होता रहेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अधिक से अधिक सत्यार्थप्रकाश वितरण कर महर्षि का संदेश फैलाइए।

अपनी

आवश्यकताओं

वर-वधू

नौकरी आदि

के लिये

जनज्ञान

में

विज्ञापन दीजिए

धन भेजते समय अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखें। वी० पी० न मंगाएं। पत्र मिलते ही धन भेज दें। —सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारतीय शिष्य ईसा

—०—

इस लेख के पढ़ने से पता लगता है कि जिस
ईसा का शिष्य सारा यूरोप है। वह इस बूढ़े
भारत का शिष्य था। उसने अपने जीवन
का अधिक भाग भारतवर्ष में ही व्यतीत
किया। उसका तीसरे दिन जो उठना
सर्वथा घटना के विरुद्ध है।

इसको Mr. N. Notovitch की पुस्तक से

मास्टर हरिद्वारीसिंह (बेदिल)

अध्यापक, महाविद्यालय ज्वालपुर

ने

अनुवाद किया।

ईसामसीह के अनुयायियों की गणना की जाय तो इस समय उनकी संख्या बौद्धों को छोड़ सब से अधिक है। ये लोग अपने आपको संसार में सब से अधिक सभ्य भी समझते हैं। परन्तु यह भी ये मानते हैं कि ईसा का जीवन-चरित्र यथार्थ रूप में आदि से अन्त तक कहीं भी उपलब्ध नहीं होता। इनकी बाइबिल भी ईसा की बाल्यावस्था तथा मृत्यु के पूर्व के दो वर्ष का वृत्तान्त बतला कर मध्य अवस्था के वृत्तान्त पर कोई प्रकाश नहीं डालती। रैनन जैसा ईसा के जीवन-चरित्र का लेखक भी कानों पर हाथ रखता है। इस में सन्देह नहीं कि जितने वर्षों का हाल इञ्जील में नहीं मिलता, उतने वर्ष ईसा भारतवर्ष में ही रहा है—इसी लिये उस के शिष्य उन वर्षों का हाल नहीं लिख सके। रूसी यात्री मिस्टर नोटोविच ने तिब्बत में बौद्धों की पुस्तक से ईसा के इन वर्षों के चरित को अनुवाद कर फ्रेंच भाषा में प्रकाशित किया था। पश्चात् महात्मा गांधी ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया। और उर्दू में भी इसका अनुवाद हो चुका था पर आज कल नहीं मिलता। सर्व साधारण को ईसाइयों की चालों और जाल से बचाने और सत्य वृत्तान्तों को प्रकट करने के अभिप्राय में हम इसका संक्षेप में भाषानुवाद करते हैं—आशा है कि पाठकों को यह अनुवाद रुचिकर और लाभदायक सिद्ध होगा।

बहुत शोर सुनते थे हम जिस मसिह का,
वह आखिर को भारत का शागिर्द निकला।

—हरिद्वारीसिंह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भूमिका

मैंने सन् १८७७ से १८७८ ई० तक अर्थात् तुर्किस्तान की लड़ाई के समय से पूर्व के देशों की ओर कई बार यात्रा की है। प्रायद्वीप की छोटी-छोटी जगहों को देखने के पश्चात् काफ पर्वत और फारस देश की यात्रा करता हुआ आखिर १८८७ ई० में हिन्दुस्तान की ओर चल दिया। इस देश को देखने की मुझे बचपन से ही बड़ी उत्कण्ठा थी। मैं इस यात्रा में यह चाहता था कि हिन्दुस्तानियों के रहन-सहन, रस्मो-रिवाज और आदतों से विज्ञ हो जाऊं और इस आश्चर्यजनक देश की पुरानी बातों की असलियत और इस के महत्त्व को मालूम करूं। मतलब यह है कि जगह-जगह घूमता हुआ मैं दर्रा बोलन के रास्ते से हिन्दुस्तान में पहुंचा और सिन्धनद को पार कर रावलपिंडी गया, वहां से पञ्जाब के जिलों में घूमता हुआ अमृतसर पहुंचा—और दरबार साहब को देखा—

इस के पश्चात् लाहौर में महाराजा रणजीतसिंह की समाधि देखकर कश्मीर गया, वहां से लद्दाख पहुंचा.........एक दिन जब कि मैं रास्ते में बौद्धों के एक मठ को देखने चला गया तो वहां के बड़े लामा से बातचीत करने से मालूम हुआ कि लामा पुस्तकालय में बहुत सी ऐसी पुरानी पुस्तकें रक्खी हैं कि जिन में ईसा और पाश्चात्य जातियों के वृत्तान्त लिखे हुए हैं—इन पुस्तकों की नकलें और उल्थे दूसरे बड़े मठों में भी मौजूद हैं.....................लद्दाख की राजधानी लेह में पहुंचने के बाद मैं हंसमठ को देखने गया...........................यहां मठ में लामा से मैंने कहा कि जिन हाथ की लिखी हुई पुस्तकों में ईसा का जीवन-चरित्र है, मुझ को सुनाई जावें और वे पुस्तकें मुझ को सुनाई गयीं...............मुझ को इन बातों के विश्वसनीय होने में जरा भी सन्देह नहीं; इसी कारण मैंने यूरोप में इन के प्रकाशित करने का इरादा किया।

शहर क्यू के नामी पादरी मिस्टर पलटन साहब मेरी इस तहकीकात को प्रशंसनीय समझा परन्तु मेरी हानि समझकर उस के प्रकाश करने से मुझ को रोका। पर इस हानि का कारण कोई भी न बतलाया। इसके एक वर्ष पश्चात् मैंने एक ऐसे पादरी को (जिस की पहुंच पोप तक बड़ी अच्छी तरह थी) रोम में अपना लेख सुनाया। उन्होंने कहा—इसके प्रकाशित करने से क्या लाभ होगा? क्योंकि कोई इन बातों पर विश्वास नहीं करेगा और बहुत से लोग तुम्हारे शत्रु हो जावेंगे। तुम अभी नवयुवक हो यदि कुछ रुपये की आवश्यकता हो तो मैं इस लेख के बदले में आप को दिलवा दूंगा, जिससे तुम्हारी मिहनत का फल मिल जावेगा। मैंने इससे इन्कार कर दिया।

इस के पश्चात् पेरिस में पादरी रोटेली साहब से अपना इरादा प्रगट किया, उत्तर मिला "अभी इस का समय नहीं है। पहले ही ईसाई मत को नास्तिक लोगों के हाथों हानि पहुंच रही है। तुम ईसाई धर्म के छिद्र-दर्शकों और शत्रुओं के हाथ में एक और नया हथियार दे दोगे, इस कारण से मैं आप को सारे ईसाई सम्प्रदायों की भलाई के लिये कहता हूं।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसी प्रकार मैंने यह पुस्तक अन्य एक प्रसिद्ध पादरी को दिखाई। उसने कहा कि "पुस्तक को मेरे पास छोड़ जाओ", मैंने यह समझ कर कि मुफ्त में यह अपना ही नाम करना चाहता है पुस्तक को छोड़ जाने से इनकार किया। उस **पादरी** की मृत्यु के एक वर्ष पश्चात् इसके छपवाने का प्रबन्ध किया।

इससे पहले, कि मेरी प्रकाशित की हुई बातों पर अंगुली उठाई जावे, मुनासिब यह होगा कि कोई विद्या-प्रेमियों की सभा कुछ विद्वानों का कमीशन भेजकर इस बात की तहकीकात करावे कि जिन बातों को मैंने पब्लिक के सम्मुख रक्खा है वे बौद्धों की पुस्तकों में लिखी हुई भी हैं या नहीं।

नोटोविच

महात्मा ईसा का पूर्व वृत्तान्त

अध्याय १

१. इस कारण से कि इसराइलियों के देश में एक महापाप हुआ है, पृथ्वी काँपी और आकाश गूँज उठा।

२. वह पाप यह है कि उस देश में लोगों ने ईसा जैसे महापुरुष और न्यायशील को सताकर मार डाला, जो महात्मा था।

३. जो केवल इस कारण से साधारण मनुष्यों की सूरत में पैदा हुआ था कि उनके गन्दे विचार दूर हों और उन की भलाई हो।

४. जो लोग अपने पापों के कारण गिर चुके थे उनको शांति और आराम का जीवन फिर नसीब हो और वह एक पूर्ण ब्रह्म की तरफ जिसकी दया अनन्त और अपरम्पार है, झुकें।

५. इसराइली व्यापारियों का बयान इसके सम्बन्ध में क्या है, वह सुनो!

अध्याय २

१. इसराईली लोग जो ऐसे उपजाऊ देश में बसते थे जिसमें एक साल के अन्दर दो फसलें होती थीं और जिनके पास भेड़-बकरियों के बड़े-बड़े गल्ले थे, उनके कुकर्मों से परमात्मा के क्रोध का उन पर वज्रपात हुआ।

२. इस कारण से परमात्मा ने उनको कड़ा दण्ड दिया अर्थात् उनका देश, उनकी भेड़-बकरी और तमाम माल-असबाब छीन लिया। इसराइली लोग फारऊन जैसे मिश्र के बलवान् और धनवान् राजा की प्रजा के दास बन गये।

३. जिन्होंने उनके साथ पशुओं से भी बुरा बर्ताव किया अर्थात् उनसे कड़े काम कराये, बन्दीगृहों में रक्खा और उनके शरीर पर बेंत लगवा कर लहूलुहान और जख्मी कर दिये और भूखे-प्यासे मैदानों में रक्खे।

४. उनको हर समय डराते धमकाते रहे और कोई भी मनुष्यों जैसा सुलूक उनके साथ न किया गया।

५. ऐसी कठिनाई के समय पर इसराइलियों ने आसमानी बाप को याद किया और सच्चे दिल से उसकी कृपा और दया के प्रार्थी हुए।

६. उस समय मिश्र देश में फराऊन का राज्य था। उसने अपनी बड़ी-बड़ी विजयों, धन और अपने दासों से विशाल भवन बनवा लेने के कारण नाम पा लिया था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

७. इस फारऊन के दो बेटे थे जिनमें से छोटे का नाम मूसा था। विद्वान् इसराइलियों ने उसको विद्या पढ़ाई।

८. वह (इसराइली) मिश्र देश में मूसा को प्रेम की दृष्टि से देखते थे क्योंकि वह बहुत भला था और दुःखी लोगों पर दया करता था।

९. मूसा यह देख कर कि इसराइली लोग कड़ी तकलीफों और बड़ी कठिनाइयों को झेलते हुए भी अपने परमात्मा को नहीं छोड़ते और मिश्र वालों के देवताओं को, जो मनुष्यों के बनाये हुए थे, नहीं पूजते।

१०. उनके निराकार परमात्मा पर विश्वास ले आया जिसने उनके रहे-सहे बल को नष्ट न होने दिया।

११. इसराइली विद्वानों ने मूसा के विश्वास को और पक्का किया और उससे अपने सहधर्मियों की फराऊन से सिफारिश करने को कहा।

१२. इस कारण से राजपुत्र मूसा अपने पिता के पास गया और उसने इन दुखियों की दीन अवस्था पर दया करने की प्रार्थना की; परन्तु फराऊन उससे क्रोधित हुआ और इसराइली दासों को अधिक सताने लगा।

१३. कुछ दिन पश्चात् मिश्र पर एक बड़ी मुसीबत आई, अर्थात् युवा और वृद्ध, निर्बल और बलवान् सब पर एक मरी पड़ी और फराऊन ने समझा कि हमारे ही देवता हम पर अप्रसन्न हो गए हैं।

१४. परन्तु राजपुत्र मूसा ने अपने पिता से कहा कि यह इसराइली परमात्मा का कोप है जो मिश्रियों को इसराइलियों पर अत्याचार करने का दण्ड दे रहा है।

१५. इस पर फराऊन ने अपने अपने पुत्र मूसा को कहा कि वह सारे इसराइली दासों को देश से बाहर ले जाकर राजधानी से बहुत दूर एक शहर बसावे और वहां उनके साथ जाकर आबाद हो।

१६. मूसा ने इसके पश्चात् इसराईली दासों को संदेशा दिया कि उसने उनको उन्हीं के परमात्मा के नाम पर स्वतन्त्र करा दिया है और उनको साथ लेकर बाहर गया और मिश्र देश को छोड़ दिया।

१७. वह उनको उस स्थान पर ले गया जहां से कि पापों के कारण वे निकाले गये थे। पश्चात् उनको नियम बना दिये और निराकार परमात्मा से, जिसकी कृपा और दया अपरम्पार है, सदैव प्रार्थी रहने की ताकीद की।

१८. राजपुत्र मूसा के मरने के बाद इसराइलियों ने उसके नियमों की पूरी-पूरी पाबन्दी की और परमात्मा ने उन पर ऐसी दया की कि वे सारी पिछली मुसीबतों को भूल गये, जो परमात्मा ने मिश्र देश के अन्दर उन पर डाली थीं।

१९. उनका राज्य सारे भूगोल पर सबसे बलवान् हो गया। उनके राजा बड़े धनवान् होने के कारण संसार भर में सुप्रसिद्ध हो गये और इसराइलियों में बहुत मुद्दत तक शान्ति रही।

अध्याय ३

१. इसराइलियों के धनी होने की चर्चा चहुं ओर संसार में फैल गयी और पड़ोस के लोग उनसे ईर्ष्या करने लगे।

२. कारण यह था कि परमात्मा स्वयं उनकी विजयशील सेना को राह दिखाने वाला था और मूर्तिपूजक उन पर हमला करने का साहस न कर सकते थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३. शोक ! कि मनुष्य सदा सच्चाई पर दृढ़ नहीं रहता; इसी तरह इसराइली लोगों ने भी परमात्मा के साथ अपनी प्रतिज्ञा को देर तक दृढ़ न रक्खा ।

४. वे परमात्मा की सारी दया को भूल गये, उसका नाम लेना कम कर दिया और ज्योतिषियों व जादूगरों के प्रभाव में आने लगे ।

५. राजाओं और नेताओं ने मूसा के नियमों के स्थान में अपने-अपने नियम जारी कर दिये और मन्दिरों व पूजा के ढंग को छोड़कर भोग-विलास में लग गये और अपनी पवित्रता से हाथ धो बैठे ।

६. जब उनको मिश्र छोड़े सैकड़ों वर्ष हो गये तो परमात्मा ने फिर उनको दण्ड देने की ठानी ।

७. विदेशी लोग इसराईलियों के देश पर चढ़ आये और उसको लूट-खसोट कर गांवों को उजाड़ दिया और वहां के रहने वालों को कैद करके ले गये ।

८. एक बार समुद्र-पार रूम देश से मूर्त्तिपूजक आये और उन्होंने इसराइलियों पर विजय प्राप्त करके अपने सेनापति उन पर नियत किये जो सैन्दर राजा के नाम पर राज्य करते थे ।

९. उन्होंने तमाम मन्दिरों को तोड़ डाला और इसराइलियों को निराकार की पूजा से रोका और अपने देवताओं पर पूजा चढ़ाने के लिये मजबूर किया ।

१०. उन्होंने अमीरों को सेना में भरती किया, विवाहित स्त्रियों को उनके पतियों से अलग किया और नीच लोगों को दास बनाकर हजारों की गणना में समुद्र पार भेज दिया ।

११. अब शेष रहे बच्चों को मार डाला और थोड़े ही समय में इसराइलियों के देश में सिवाय रोने-पीटने के कुछ न सुनाई दिया ।

१२. इस कठिन समय में लोगों ने अपने परमात्मा को याद किया और उससे दया और करुणा के प्रार्थी हुए, उस सच्चे बाप ने प्यार की दृष्टि से प्रार्थना को स्वीकार किया ।

अध्याय ४

१. अब वह समय आया कि कृपालु और न्यायशील परमात्मा ने अपना अवतार मनुष्य की योनि में लेना चाहा ।

२. और वह अनादि व अनन्त आत्मा, जो कर्म्मों से रहित और आनन्दस्वरूप था, अपने नित्य रूप से नामालूम समय के लिये पृथक् हुआ ।

३. इस कारण से कि मनुष्य योनि में अवतार लेकर मनुष्यों के लिये उस एक परमात्मा और मोक्ष की प्राप्ति का साधन हो ।

४. और अपना नमूना दिखाकर लोगों को बताये कि मनुष्य किस प्रकार सदाचार से आत्मा को इस अनित्य शरीर से पृथक् करके उच्च पदवी को प्राप्त करे जो परिवर्तन कि आसमानी राज्य में पहुंचने के लिये आवश्यक है ।

५. इसके थोड़े ही दिन पश्चात् इसराइलियों के देश में एक अनोखा बालक पैदा हुआ । इस बालक के मुख से परमात्मा स्वयं ही बोला और शरीर को निरर्थक और आत्मा को महान् बतलाया ।

६. इस नये पैदा हुए बालक के माता व पिता यद्यपि निर्धन थे तथापि उनका वंश भगवद्भक्ति के लिये प्रसिद्ध था और अपने बाप-दादों के बडप्पन का घमण्ड न करके ईश्वर-आराधना में लगे रहते थे । परमात्मा परीक्षार्थ उन पर दुःख भेजता था

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ग्रौर वह उन के लिये धन्यवाद देते थे ।

७. इन सारे दुःखों के होते हुए भी उन्होंने परमात्मा को नहीं भुलाया, इस कारण से परमात्मा ने उनका हलौटा (ज्येष्ठ) पुत्र भाग्यशाली उत्पन्न किया ग्रौर शिर से पैर तक दोषों से लथपथ लोगों की सहायता ग्रौर दुखियों के दुःख-निवारण करने के वास्ते उस को चुन लिया ।

८. यह पवित्र बालक जिसका नाम ईसा रक्खा गया, बचपन ही से पतित लोगों को क्षमा मांगने के वसीले से पापों से छुटकारा पाने का उपदेश देकर एक परमात्मा का प्रचार करने लगा ।

९. लोग चहुं ग्रोर से उसका उपदेश सुनने को ग्राया करते थे ग्रौर इस बालक की बातों को सुनकर दांतों में ग्रंगुली दबा कर रह जाते थे । इसराइली लोग सर्वसम्मति से यह मानते थे कि इस बालक के ग्रन्दर एक ग्रनुपम ग्रात्मा है ।

१०. जब ईसा की ग्रवस्था १३ वर्ष की हुई जिस ग्रवस्था में कि इसराईली लोग विवाह करते थे ।

११. तब धनी ग्रौर सरदार लोग उस के माँ-बाप के ग्राश्रम पर, जहां वह जीवन-निर्वाह करने को व्यापार करते थे ग्राकर इकट्ठे हुए ताकि सर्वशक्तिमान् परमात्मा का उपदेश करने में जिस ईसा का नाम प्रसिद्ध हो चुका था, उस को ग्रपना दामाद बनावें ।

ग्रध्याय ५

१. परमात्मा से भाग्यशाली बनाया हुवा युवा ईसा चौदह वर्ष की ग्रवस्था में सिन्धू नद के इस पार ग्राया ग्रौर परमात्मा के प्यारे देश में ग्रार्य्यों के साथ रहने लगा ।

२. इस ग्रनोखे बालक का चर्चा सारे उत्तरीय सिन्ध में फैल गया ग्रौर जब वह पंजाब ग्रौर राजपूताने में होकर गया तो जैन मत के लोगों ने उस को ग्रपने पास रखने की इच्छा की ।

३. परन्तु वह जैन मत के गुमराह पुजारियों के पास न रहा ग्रौर उड़ीसा में जगन्नाथ को चला गया । जहां व्यास कृष्ण की ग्रस्थियाँ गड़ी हुई थीं । इस जगह के ब्राह्मणों ने उसकी खूब ग्राव-भगत की ।

४. उन्होंने उसको वेद पढ़ा कर ग्रर्थ समझाये ग्रौर मन्त्रों से झाड़ना, लोगों को वेद शास्त्रों का पढ़ाना ग्रौर समझाना, लोगों में से भूत-प्रेत निकाल कर चंगा करना सिखलाया ।

५. जगन्नाथ, राजगृह, बनारस ग्रौर दूसरे तीर्थों में ६ वर्ष रहा । प्रत्येक मनुष्य ईसा को प्रेम करता था क्योंकि वह वैश्यों ग्रौर शूद्रों के साथ मुहब्बत से वर्ताव करता था ग्रौर उनको वेदों ग्रौर शास्त्रों का उपदेश देता था ।

६. परन्तु ब्राह्मणों ग्रौर क्षत्रियों ने उस से कहा कि उनको परमात्मा की ग्रोर से इस बात का निषेध है कि वे उन लोगों से वर्त्ताव रक्खें जो उसकी ऊरू ग्रौर पैरों से पैदा हुए हैं ।

७. यह भी कहा कि वैश्यों को केवल वेदों के सुनने का ग्रधिकार है ग्रौर इतना भी केवल त्यौहारों पर ।

८. ग्रौर कहा कि शूद्रों को केवल वेदों के सुनने का ही निषेध नहीं बल्कि दर्शन करने का भी । क्योंकि उनका धर्म ब्राह्मणों, क्षत्रियों ग्रौर वैश्यों की सेवा सेवकों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की ही हैसियत से करना है।

९. यह भी कहा कि परमात्मा की आज्ञा है कि वह (शूद्र) मरने के बाद ही सेवा धर्म से छूट सकते हैं इस कारण से तुम इनको छोड़ो, हम से मिलो और देवताओं की पूजा करो। जो तुम उनकी आज्ञा का उल्लंघन करोगे तो वे तुम पर क्रोधित होंगे।

१०. परन्तु ईसा ने उनके कहने को न माना और शूद्रों ही की तरफ चला गया। ब्राह्मणों और क्षत्रियों के विरुद्ध बोलने लगा।

११. उसने किसी मनुष्य के इस वचन को,—"मुझे दूसरे लोगों के अधिकार छीन लेने का अखत्यार है"—बहुत बुरा बतलाया, क्योंकि उसने कहा कि परमात्मा जो सब का बाप है, अपनी औलाद में कोई भेद नहीं करता। उसको सब ही एक जैसे प्यारे हैं।

१२. ईसा वेदों और पुराणों के अपौरुषेय होने से इन्कारी था। क्योंकि वह अपने शिष्यों से कहता था कि एक धर्म-पुस्तक (law) पहले से मनुष्यों को रहनुमाई के लिये मिल चुका है।

१३. परमात्मा से डरो और उसकी पूजा करो और उस के ही सामने भेंट रक्खो।

१४. ईसा त्रिमूर्ति पर विश्वास नहीं रखता था और यह नहीं मानता था कि विष्णु, शिव और दूसरे देवता परमात्मा के अवतार थे, क्योंकि उसका कथन था कि—

१५. सदैव का स्वामी दुनिया की आत्माओं का आत्मा एक अखण्ड परमात्मा है, वह ही जगत् का रचयिता और स्थिर रखने वाला और बल देने वाला है।

१६. उसी की इच्छा से यह दुनिया हुई है और वही अनादि व अनन्त है। आकाश और पृथिवी पर कोई उस जैसा नहीं।

१७. उस परमात्मा ने किसी प्राणी मात्र को भी अपनी शक्ति में सम्मिलित नहीं किया तो किसी अप्राणी को क्या करता? जैसा तुम को बताया गया है वह सर्वशक्तिमान् है।

१८. उस ने इच्छा की और सृष्टि हो गई उसने अपने ध्यान में सब पानी को जमा किया और दुनिया भर के खुश्क हिस्से को उस से जुदा किया वह इस अचम्भा दिलाने वाले मनुष्य योनि का, जिसमें उसने अपनी आत्मा का प्रवेश किया, कारण है।

१९. उसने थल, जल, प्राणी और सारे जगत् को मनुष्य के अधीन किया और आप सदैव एकरस रहता है। हर वस्तु के पैदा होने के लिये एक समय नियत किया हुआ है।

२०. जल्दी ही मनुष्य पर परमात्मा का कोप होगा क्योंकि वह अपने स्वामी को भूल बैठा है। उसने परमात्मा के मन्दिरों को अपवित्र वस्तुओं से भर रक्खा है और जिन पदार्थों को परमात्मा ने मनुष्य के अधीन किया है वह उन की ही पूजा करता है।

२१. वह पत्थर और धातु की मूर्तियों के लिये मनुष्यों का बलिदान करता है जिस में उस महान् परमात्मा की आत्मा प्रवेश कराई हुई है।

२२. क्योंकि वह तरह तरह की बहुमूल्य वस्तुओं को खाने वालों की सहायता और दया को हासिल करने के लिये दिन-रात परिश्रम करने वालों को गिराता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२३. जो लोग अपने भाइयों को बड़े-बड़े आरामों से वंञ्चित रखते हैं वे आप ही उनसे वञ्चित रहेंगे। ब्राह्मण और क्षत्रिय शूद्र होंगे और शूद्रों के साथ परमात्मा सदैव रहेगा।

२४. क्योंकि बदला मिलने के दिन शूद्र और वैश्य अपनी अज्ञानता के कारण बहुत-कुछ क्षमा किये जाएंगे और जो लोग दुरभिमान से ईश्वरीय बातों के दावेदार हो बैठे हैं उन को परमात्मा मुसीबत में डालेगा।

२५. वैश्य और शूद्र लोग ईसा की ऐसी बातों को सुनकर हैरान होते और प्रशंसा करते न थकते थे और ईसा से पूछते थे कि हम अनन्त जीवन (मोक्ष) के लिये क्योंकर प्रार्थना करें?

२६. ईसा ने कहा—मूर्ति मत पूजो क्योंकि वह सुन नहीं सकती। वेदों को सुनना छोड़ दो क्योंकि उनमें सचाई के गले पर छुरी चलाई गई है। अपने आप को सब से बड़ा न समझो और अपने पड़ौसी का अपमान न करो।

२७. गरीबों की सहायता करो। निर्बल लोगों की रक्षा करो। किसी का नुकसान न करो और दूसरों की चीजों पर लालच न करो।

अध्याय ६

१. जो उपदेश कि ईसा शूद्रों को किया करता था, उसको सुनकर ब्राह्मणों और क्षत्रियों ने उस के मार डालने का इरादा किया और उन्होंने इसी निमित्त अपने सेवक नवयुवक उपदेष्टा की खोज में भेजे।

२. परन्तु शूद्रों ने ईसा को यह बात पहिले ही बतला दी थी। वह रातों ही रात जगन्नाथपुरी से निकल गया और गौतम के शिष्यों के पहाड़ी इलाके में, जहां कि शाक्य मुनि बुद्ध पैदा हुआ था और जहाँ के लोग परमात्मा को मानते थे, जा बसा और उनके साथ रहने लगा।

३. पाली भाषा का विद्वान् बन कर न्यायशील ईसा सूत्रों की पुस्तकों को पढ़ने लगा—

४. छः साल के बाद ईसा ने, जिसे बुद्ध भगवान् ने अपने शास्त्र को फैलाने के वास्ते चुन रक्खा था, इन धर्म-ग्रन्थों की व्याख्या करने में पूरी योग्यता प्राप्त करली थी।

५. इस समय ईसा नैपाल और हिमालय के पहाड़ियों को छोड़ राजपूताने में आ गया और लोगों को यह उपदेश देता हुआ कि मनुष्य में पूर्ण बनने की योग्यता है, पश्चिम की ओर चला गया।

६. ईसा ने बतलाया कि बुद्ध पद को प्राप्त होने का कारण निस्सन्देह पड़ौसी से भलाई करना है और कहा कि जो मनुष्य सच्ची पवित्रता को प्राप्त करेगा, वह पापों से छुटकारा पाकर निर्वाण पायेगा और उसी को परमात्मा के महत्त्व का ध्यान करने का अधिकार होगा।

७. मूर्ति-पूजकों के देश में से जाते हुए ईसा निराकार का उपदेश करता गया और कहा कि साकार देवताओं की पूजा परमात्मा की आज्ञा के विरुद्ध है।

८. और इस का कारण यह बतलाया कि यद्यपि लोगों को परमात्मा की मूर्त्ति बनाने की आज्ञा नहीं है, तथापि परमात्मा की जगह बहुत से देवता मान लिये हैं।

९. इसलिए उनकी महान् व अखण्ड पवित्रता के महत्त्व को उसके बनाये हुए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राणियों और मनुष्य के हाथों से बनाये हुए पत्थर और धातु की मूर्तियों से कम ठहराना आत्मा के विपरीत है।

१०. वह अनादि ज्ञानदाता एक ही है, सिवाय उसके और कोई परमात्मा नहीं— न तो इस जगत् के रचने में उसने किसी को अपने में सम्मिलित किया और न अपने इरादों को किसी पर प्रगट किया।

११. जिस तरह बाप अपने बच्चों से सुलूक करता है इसी तरह परमात्मा मनुष्यों का उनकी मृत्यु के पश्चात् अपनी कृपा से न्याय करेगा—वह कभी भी अपने बच्चों को ऐसा नहीं गिरावेगा कि उसकी आत्मा को किसी पशु-योनि में डाले।

१२. भगवान् ने ईसा के मुख से कहलवाया कि मूर्त्ति या पशुओं के सामने मनुष्य को भेंट चढ़ाना धर्म के विरुद्ध है क्योंकि मैंने दुनिया के सारे पशु और दूसरी वस्तुओं को मनुष्य के लिये उत्पन्न किया है।

१३. सारी वस्तुएं मनुष्य पर निछावर की गई हैं क्योंकि वह मेरे साथ, जो कि उस का बाप हूं, घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है। जो मेरे बच्चे को मुझ से छीनेगा उसको कड़ा दण्ड दिया जायगा।

१४. जिस प्रकार मनुष्य न्यायशील परमात्मा की अपेक्षा गिरा हुआ है, इसी प्रकार पशु मनुष्य की अपेक्षा गिरा हुआ है।

१५. इसी कारण से मैं तुमको कहता हूं कि मूर्तिपूजा को छोड़ो और अपने मालिक से जुदा करने वाली और परमात्मा के दर से निकाले हुए पुजारियों से मिलाने वाली रस्में न मिलाओ।

१६. क्योंकि इन पुजारियों ने भी तुम को उस सत्यस्वरूप परमात्मा से दूर किया है और उन के ही वहमों और अत्याचारों ने तुम्हारी आत्मा को खराब कर रक्खा है और तुम्हारे तमाम धार्मिक खयाल को बिगाड़ रक्खा है।

अध्याय ७

१. ईसा जिन-जिन देशों में होकर गया वहां-वहां के मूर्तिपूजकों पर उसके उपदेश का खूब प्रभाव पड़ा और उन्होंने मूर्ति-पूजा को छोड़ दिया।

२. इस को देखकर पुजारियों ने सत्य स्वरूप परमात्मा के उपदेश करने वाले ईसा से लोगों के सामने उन कैड़े और सख्त शब्दों का जो वह उनके लिये प्रयोग करता था, प्रमाण मांगा और मूर्तियों के शक्ति-रहित होने का कारण पूछा।

३. ईसा ने उत्तर में कहा कि यदि तुम्हारी मूर्तियों और पशुओं में कुछ दम है और सचमुच वे कोई विशेष शक्ति रखते हैं, तब वह मुझे इसी दम मार डालें।

४. पुजारी लोगों ने उससे करामात दिखाने को कहा और कहा कि यदि हमारे देवता तुम्हारे परमात्मा की मान-हानि करते हैं तो वह उनको तितर-बितर कर दें।

५. परन्तु ईसा ने उत्तर दिया मेरे परमात्मा की करामात जगत् की उत्पत्ति के समय से प्रारम्भ हैं और अब भी प्रति दिन और हर समय होती रहती है। जो मनुष्य उनको अनुभव नहीं करता, वह जीवन के विशेष लाभ से वञ्चित रहता है।

६. परमात्मा का कोप पत्थर धातु और कपड़े के टुकड़ों पर नहीं होगा—वे जड़ हैं, हाँ मनुष्यों पर होगा—इसलिये यदि तुम मोक्ष चाहते हो तो अपनी घड़ी हुई मूर्त्तियों को तोड़ डालो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

७. जिस प्रकार पत्थर और बालू जो मनुष्य की दृष्टि में तुच्छ हैं वह उनको विशेष समय में प्रयोग करता है और उन से लाभदायक वस्तुएं बनाता है।

८. उसी प्रकार परमात्मा भी मनुष्यों को एक विशेष समय पर उनके अच्छे कर्मों का फल देता है।

९. ऐ मनुष्य के शत्रुओ! यदि तुम्हारे ऊपर परमात्मा की दया की जगह क्रोध का वज्रपात हो तो शोक है—अपने ऊपर जो परमात्मा के बल की परीक्षा के वास्ते करामात चाहते हो।

१०. कारण यह है कि परमात्मा अपने कोप से मूर्त्तियों को नष्ट नहीं करेगा, परन्तु मूर्त्तियों के बनाने वालों के दिल सदैव की अग्नि में जलेंगे और उनका शरीर उन से छूट कर जंगली पशुओं की खुराक बनेगा।

११. परमात्मा अपने रेवड़ में से अपवित्र लोगों को दूर कर देगा परन्तु उन लोगों को जो अज्ञानवश भटक गये होंगे, वापस ले लेगा।

१२. मूर्तिपूजक लोग अपने अगुआओं की कमजोरी को देखकर ईसा की बातों पर अधिक विश्वास करने लगे और परमात्मा के क्रोध से भयभीत होकर मूर्तियों को तोड़ डाला और अगुआ लोग सर्वसाधारण के कोप से डर कर भाग गये।

१३. ईसा ने मूर्त्तिपूजकों को उपदेश किया कि वे परमात्मा को इन भौतिक आंखों से देखने की इच्छा न करें और आत्मा को पवित्र कर के अपने आप को उस के अनुग्रह का पात्र बनायें।

१४. उसने उनको कहा कि तुम केवल मनुष्य की बलि चढ़ाना ही न छोड़ो बल्कि किसी भी पशु को मत मारो, क्योंकि सारा चराचर जगत् मनुष्य को लाभ पहुंचाने के लिये है।

१४. अपने पड़ौसी का माल मत चुराओ क्योंकि उसने परिश्रम से उसे कमाया है और उससे उसको वञ्चित न रखना चाहिये।

१६. किसी को धोखा मत दो जिससे कि कोई तुम को भी धोखा न दे। कयामत के दिन से पहले ही अपने को शुभ कर्म्मों के द्वारा पवित्र करो क्योंकि फिर समयनहीं रहेगा। व्यभिचार में मत पड़ो क्योंकि ऐसा करना परमात्मा के नियमों के विरुद्ध चलना है।

१८. स्वर्ग केवल अपने को पवित्र बनाने से ही प्राप्त नहीं होगा बल्कि दूसरे लोगों को ठीक मार्ग पर लाने से भी।

अध्याय ८

१. ईसा के उपदेश की चर्चा आस-पास के देशों में फैल गयी और जब वह फारस देश में गया तो पुजारियों ने डर कर लोगों को उसका उपदेश सुनने से मना किया।

२. परन्तु जब उन्होंने देखा कि सारे ग्रामीण लोग उस से बड़ी प्रसन्नता से मिलते और उसके उपदेशों को दिल लगा कर सुनते हैं तो उसे पकड़वा कर बड़े पुजारियों के पास लाये और वहां उससे निम्नलिखित प्रश्न किये गये—

३. तुम कौन से नये परमात्मा का उपदेश करते हो? ऐ बदनसीब! क्या तुम्हें मालूम नहीं कि केवल जरथुश्त ही एक नेक मनुष्य है जिसको परमात्मा की तरफ से ज्ञान मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४. उसने फरिश्तों को आज्ञा दी हुई है कि ईश्वरीय आज्ञा अर्थात् उन बातों को जो जरथुश्त को स्वर्ग में दी गई थीं, लोगों के लाभ के लिये लिखते जायँ।

५. इसलिये, तुम हमारे परमात्मा का अपमान करने वाले कौन हो? और विश्वासी लोगों के अन्दर अविश्वास का बीज क्यों बोते हो?

६. ईसा ने उत्तर दिया—मैं किसी नये परमात्मा का उपदेश नहीं करता बल्कि उस आसमानी बाप का उपदेश करता हूं जो अनादि और अनन्त है।

७. मैंने उन लोगों को, जो बच्चों की तरह से हैं और केवल अपनी बुद्धि से परमात्मा को नहीं जान सकते और न उस के ऐश्वर्य और महत्त्व पहिचान सकते हैं।

८. परन्तु जैसे हाल का पैदा हुआ बालक अपनी माता की छाती को अंधेरे में ढूंढ़ लेता है उसी तरह तुम्हारे लोगों ने, जो तुम्हारे विश्वास और रस्मों के कारण भटके हुए हैं, उस परमात्मा को कि जिसका मैं पैगम्बर हूं, परमात्मा मान लिया है।

९. उस सत्यस्वरूप परमात्मा ने मेरे हाथों तुम्हारे लोगों को हुक्म भेजा है कि तुम सूर्य की पूजा मत करो, क्योंकि वह इस जगत् का केवल एक भाग है जिसको मैंने मनुष्य के लिये बनाया।

१०. सूर्य तुम को काम करने के समय बल देने को निकलता है और आराम देने के लिये छिप जाता है। यह सब कुछ मेरी आज्ञानुसार है।

११. जो कुछ तुम्हारे पास है और जो कुछ तुम्हारे उधर ऊपर नीचे है यह सब कुछ मेरे ही कारण है।

१२. इस पर पुजारियों ने पूछा—अगर सच्चे मार्ग-प्रदर्शक न हों तो लोग क्यों कर न्याययुक्त नियमों पर चल सकें?

१३. ईसा ने उत्तर दिया—जब सच्चे मार्ग-प्रदर्शक नहीं होते तब जिन नियमों में बँधा हुआ यह प्राकृतिक जगत् स्थित है, उनसे लोगों की आत्मा पवित्र रहती है।

१४. उन का आत्मा परमात्मा के साथ रहता है और जब कभी वह उससे प्रार्थना करना चाहते हैं तो मूर्ति पशु या अग्नि की सहायता के मोहताज नहीं रहते।

१५. तुम मनुष्यों के वास्ते सूर्य की पूजा आवश्यक बतलाते हो और उसको नेकी व बदी की आत्मा मानते हो, परन्तु तुम्हारा यह सिद्धान्त गलत है क्योंकि वह स्वय कुछ नहीं करता, बल्कि उस निराकार परमात्मा की इच्छानुसार चलता है जिसने उसे बनाया है।

१६. और जिसकी इच्छा यह कि मुझे दिन में प्रकाश दे और मनुष्यों को परिश्रम के योग्य करे और फसलों को पकावे।

१७. वह सदैव रहने वाली आत्मा प्राणियों की आत्मा है, तुम उसको नेकी और बदी की आत्मा बताकर बड़ा पाप करते हो, क्योंकि वह परमात्मा केवल नेकी है।

१८. जो बाप की तरह अपने बच्चों को नेकी की ओर करता है और लज्जित होने पर उन के दोषों को क्षमा करता है।

१९. वदही आत्मा पृथ्वी पर उन लोगों के दिलों में रहती है जो परमात्मा की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

औलाद को सच्चे मार्ग से पृथक् करते हैं।

२०. इस वास्ते मैं तुम से कहता हूँ कि कयामत से डरो क्योंकि परमात्मा उन लोगों को जिन्होंने उस के बच्चों को सीधी राह से हटाकर उन के दिल में वहम और पक्षपात डाला है, कड़ा दण्ड देगा।

२१. उन लोगों को भी दण्ड देगा जिन्होंने आंखों वालों को अन्धा बनाया, भले-चंगों को बिगाड़ा और जिन वस्तुओं को परमात्मा ने मनुष्यों की भलाई और लाभ के लिये उन्हें दीं, उन की पूजा कराई।

२२. इसलिये तुम्हारा सिद्धान्त तुम्हारी गलतियों का फल है क्योंकि सच्चे परमात्मा के मिलने की इच्छा से तुमने झूंठे देवता गढ़ लिये हैं।

२३. उस की बातों को सुनकर पुजारियों ने यह फ़ैसला दिया कि उसको कोई दुःख न दिया जावे। परन्तु रात के समय जबकि सारा शहर सो रहा था, उसकोशहर के कोह के बाहर ले गये और इस विचार से उसको सड़क पर छोड़ आये कि हिंसक पशु खा जायेंगे।

२४. परन्तु परमात्मा की दया से ईसा ने बिना किसी प्रकार की तकलीफ के अपना रास्ता लिया।

अध्याय ६

१. ईसा, जिसको परमात्मा ने रास्ते से भटके हुए लोगों को ठीक राह पर लाने के लिए पैदा किया था, उनतीस वर्ष की अवस्था में इसराइलियों के देश में लौट आया।

२. ईसा के चले जाने के पश्चात् मूर्तिपूजक लोगों ने इसराइलियों को और अधिक कष्ट दिये थे और अब वे लोग अत्यन्त निराश हो गये थे।

३. उन में बहुत सों ने निर्दयी अधिकारियों के लिये अपने परमात्मा और मूसा के नियमों को छोड़ना आरम्भ कर दिया था।

४. इस तंग समय में ईसा ने अपने देशवासियों को विश्वास दिलाया कि निराश मत हो क्योंकि बदले का दिन समीप है और इस प्रकार उन का विश्वास उनके पैतृक परमात्मा पर दृढ़ कराया।

५. आसमानी बाप ने ईसा के मुख से कहा, "ऐ बच्चो ! निराश मत हो क्योंकि तुम्हारी पुकार मैंने सुनी है और तुम्हारा रोने-पीटने का शब्द मेरे पास तक पहुंच गया है।

६. ऐ मेरे बेटो, मत रोओ क्योंकि तुम्हारे दुःख ने तुम्हारे बाप के दिल पर चोट पहुंचाई है, उसने तुमको तुम्हारे बड़ों की तरह क्षमा कर दिया है।

७. कुटुम्ब को छोड़ कर पाप में मत डूबो, अपने पवित्र भावों को मत त्यागो, और जो मूर्तियां तुम्हारा शब्द नहीं सुन सकतीं उन की पूजा मत करो।

८. अपने दिल को, जो मेरी उपासना की जगह है, आशा और धैर्य से भरपूर करो और अपने पैतृक धर्म को मत छोड़ो, क्योंकि मैंने ही उनको मार्ग दिखलाया और उनको भाग्यशाली बनाया।

९. जो गिर गये हैं उनको उठाओ, जो भूखे हैं उनको खिलाओ, जो बीमार हैं उनकी सहायता करो जिससे कि तुम कयामत के दिन जिसके वास्ते मैं तुमको तैयार कर रहा हूँ बेदाग साबित हो।

१०. ईसा का उपदेश सुनने को इसराईली लोग झुण्ड के झुण्ड आये और पूछा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि आसमानी बाप की पूजा हम कहां करें, क्योंकि शत्रुओं ने हमारे मन्दिरों को तोड़ दिया है और उनका सब सामान अपवित्र कर दिया है।

११. ईसा ने उत्तर दिया कि परमात्मा की इच्छा कृत्रिम मन्दिरों से नहीं थी बल्कि दिलों से थी जो कि सच्चे मन्दिर हैं।

१२. अपने आपे पर ध्यान दो। नेक भाव, धैर्य और दृढ़ विश्वास से जो तुमको अपने पिता पर करना आवश्यक है उसको मन्दिर बनाओ।

१३. और जिन पवित्र वर्तनों का तुम जिकर करते हो वे तुम्हारे बाहू और आंखें हैं। देखो और पड़ौसियों की भलाई करो जो परमात्मा की इच्छा है, क्योंकि पड़ौसियों से भलाई करना ऐसा काम है जो तुम्हारे पैदा करने वाले परमात्मा के रहने की जगह को प्रकाशित करता है।

१४. इस कारण से कि परमात्मा ने तुम को अपनी सूरत पर बेगुनाह अर्थात् पवित्र आत्मा और नेक दिल वाला पैदा किया है जिसके पैदा करने का प्रयोजन गन्दे भाव बनाने से नहीं, बल्कि यह है कि इसको प्यार और न्याय का घर बनाया जावे।

१५. इसलिये मैं तुम से कहता हूँ कि तुम अपने दिल को अपवित्र मत करो, क्योंकि परमात्मा वहां सदैव रहता है।

१६. यदि तुम प्रेम और परमात्मा से डरने के कामों में लगे रहना चाहते हो तो बिना रोक-टोक स्वतंत्रता से रहो और सदा निष्काम कर्म किया करो।

१७. क्योंकि दुनिया की कामनाओं को सामने रख कर काम करना मोक्ष पाने में तुम्हारा सहायक न होगा, बल्कि तुम्हारी आत्मिक निर्बलता उस दर्जे तक हो जायगी जिसमें झूठ, चोरी और वध अच्छे समझे जाते हैं।

अध्याय १०

१. ईसा उन इसराइलियों को जो निराश होने वाले थे, परमात्मा के उपदेश से दृढ़ बनाता हुआ गांव-गांव में घूमा और हजारों लोग उस का उपदेश सुनने को उस के पीछे हो लिये।

२. परन्तु शहर के अध्यक्षों ने उससे भयभीत होकर जेरोशिलम में रहने वाले बड़े अध्यक्ष को खबर दी कि ईसा नाम का एक मर्द इस देश में आया है और अपने उपदेशों से अध्यक्षों के विरुद्ध जोश फैलाता है, लोग बड़े शौक से उसे सुनते हैं और सरकारी कामों में आलस्य से काम लेते हैं और कहने लगे हैं कि देश जल्दी ही बलात्कार से अधिकार जमा लेने वालों के हाथ से निकल आवेगा।

३. इस पर जेरोशिलम अध्यक्ष ने, जिसका नाम प्लातूस था, ईसा को पकड़कर शहर में लाने और न्यायाधीश के सामने खड़ा करने की आज्ञा दी—परन्तु सर्वसाधारण में नाराजगी फैलने के विचार से उसने पुजारियों और विद्वान् ईरानी लोगों को मन्दिर में बैठकर उसका मुकदमा फैसला करने का हुक्म दिया।

४. इसी समय में ईसा भी उपदेश करता हुवा जेरोशिलम में पहुंचा और शहर के तमाम रहने वाले जिन्होंने उसका नाम पहले ही से सुन लिया था, उसके आने की खबर पाकर स्वागत के लिये गये।

५. उन्होंने बड़ी नम्रता और दीनता के साथ उसको प्रणाम किया और अपने मन्दिरों के दरवाजे खोल दिये ताकि वह अपना उपदेश, जो इसराइलियों के देश के दूसरे हिस्सों में करता आया था, उनको भी सुनावे।

६. ईसा ने उन से कहा कि मनुष्यमात्र धर्म के अभाव के कारण नष्ट हो रहे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं क्योंकि तमोगुण और झगड़ों ने मनुष्यरूपी भेड़ों को तितर-बितर कर दिया है, उनका चरवाहा खो गया है।

७. मगर ये झगड़े और तमोगुण सदैव नहीं रहेंगे, आकाश फिर साफ निर्मल हो जायगा और परमात्मा के प्रकाश की किरणें पृथिवी पर फिर पड़ेंगी और भटकी हुई भेड़ें अपने चरवाहे को फिर पा लेंगी।

८. अंधेरे रास्ते को तलाश मत करो—ऐसा न हो कि तुम गढ़े में गिर जाओ। हां, गये हुए बल को फिर से प्राप्त करके एक-दूसरे की सहायता करो, इस से तुम को प्रकाश मिलेगा।

९. जो मनुष्य पड़ौसी की सहायता करता है वह मानो अपनी सहायता करता है। और जो मनुष्य अपने घर की चौकसी करता है वह मानो जाति और देश की चौकसी करता है।

१०. विश्वास रक्खो, अंधेरे से निकलने का दिन समीप आ रहा है, तब तुम सब मिलकर एक कुटुम्ब बनोगे और तुम्हारा शत्रु जो परमात्मा की कृपा से बेपरवाह है, मारे डर के कांपेगा।

११. जो पुजारी और बड़े लोग उसका उपदेश सुन रहे थे उन्होंने चकित हो कर पूछा, क्या यह बात ठीक है तुम ने लोगों को अध्यक्षों के विरुद्ध भड़काने का यत्न किया है, जैसी रिपोर्ट कि प्लातूस को हुई है?

१२. ईसा ने उत्तर दिया कि क्या अंधेरे में ठोकरें खाने वालों को कोई एक मनुष्य राजविद्रोह के लिये तय्यार कर सकता है? मैंने केवल इन बदनसीब लोगों को सचेत किया है जैसा कि इस मन्दिर में कर रहा हूँ कि वे अंधेरे रास्ते पर चलना छोड़ दें क्योंकि उनके रास्ते में एक खाई है—

१३. संसार की शक्ति की दृढ़ता नहीं—इस में बहुत कुछ परिवर्त्तन हुआ करते हैं, इसलिये इसके विरुद्ध विद्रोह करना व्यर्थ है—प्रत्येक शक्ति दूसरे से परास्त होती है और यह चक्र सदैव जारी रहेगा—

१४. बल्कि इसके विपरीत क्या तुम नहीं देखते कि शक्ति और धन वाले लोग इसराइलियों में आसमानी सदैव बनी रहने वाली शक्ति के विरुद्ध विद्रोह की बुनियाद रख रहे हैं।

१५. उस पर सरदारों ने पूछा—तुम कौन हो और कहां से आये हो, हम ने तुम्हारी चर्चा पहले कभी नहीं सुनी और न तुम्हारे नाम को जानते हैं?

१६. ईसा ने उत्तर दिया मैं इसराइली हूं। मेरा जन्म स्थान जेरोशिलम है—मैंने सुना कि मेरी बिरादरी के लोग सेवक बने हुए रो रहे हैं और मेरी बिरादरी की औरतें अधर्मियों के हाथ में आकर रो-पीट रही हैं।

१७. मेरी आत्मा को यह देखकर कि मेरे भाई उस सत्यस्वरूप परमात्मा को भूल बैठे हैं, बड़ा क्लेश हुआ—मैं लड़कपन में ही अपने बाप के घर से निकल कर विजातियों में जा बसा था।

१८. परन्तु यह मालूम करके कि मेरे भाई बहुत कुछ तकलीफ में हैं, मैं अपने पिता के देश को लौट आया ताकि अपने भाइयों को पैतृक धर्म पर लाऊं जिस का उद्देश्य यह है कि हम इस संसार में सन्तोष और धैर्य से निर्वाह करें जिससे कि अन्त में पूर्णानन्द के अधिकारी ठहरें।

१९. फिर विद्वान् लोगों ने उससे पूछा कि लोग तुमको मूसा-नियमों से इन्कारी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बतलाते हैं और तुम लोगों को परमात्मा का मन्दिर छोड़ देने का उपदेश करते हो—

२०. ईसा ने जवाब दिया जो कुछ आसमानी बाप ने दिया है उसको कोई मिटा नहीं सकता और न उस चीज को जिसको पापी तबाह कर चुके हैं—परन्तु मैंने मन को तमाम बुराइयों से दूर रखने का उपदेश किया है क्योंकि परमात्मा का सच्चा मन्दिर यही है।

२१. बाकी रही मूसा के नियमों की बात, सो मैंने तो उनको नये सिरे से लोगों को समझाने का प्रयत्न किया है परन्तु आप लोग उनके असली अभिप्राय को नहीं समझते चूंकि वह बदला लेने के सिद्धान्त को नहीं सिखलाते बल्कि क्षमा करना बतलाते हैं। लोगों ने उनका आशय उलटा समझा है जिसके कारण मुझ पर मिथ्या दोष लगाते हैं।

अध्याय ११

१. पुजारियों और विद्वान् लोगों ने ईसा का उत्तर सुनकर परस्पर यह निश्चय किया कि उससे कोई जवाब तलब न किया जाये, क्योंकि उसने किसी को हानि नहीं पहुंचाई इसके पश्चात् जेरोशिलम के अध्यक्ष प्लातूस ने, जिसको रोम देश के मूर्ति-पूजक महाराजा ने नियत किया था, पास जाकर यह कहा।

२. हम उस मनुष्य से जिसको आप प्रजा को राजद्रोही बनाने का अपराधी बतलाते हैं मिल आये हैं और उसके वचनों को भी सुना है और हमको विश्वास हो गया है कि वह हमारा ही देशवासी है।

३. परन्तु बाहिर के अध्यक्षों ने आपको झूठी रिपोर्ट पहुंचाई है, क्योंकि वह मनुष्य सच्चा है और लोगों को परमात्मा के वचन का उपदेश करता है उसके हालात मालूम करने पर हमने उसको छोड़ दिया है जहां उसका जी चाहे जाये।

४. इस पर प्लातूस क्रोधित हुआ और अपने सेवकों को भेस बदल कर ईसा के पास जाने की आज्ञा दी और उसके व्यवहार और उपदेशों के खयाल रखने और उसके व्याख्यान के एक-एक शब्द की रिपोर्ट अध्यक्ष को करने की ताकीद की।

५. इस समय में ईसा इधर-उधर के शहरों और गांवों में जाकर परमात्मा का सत्य मार्ग लोगों को बतलाता रहा। और इसराइलियों को समझाता रहा, सन्तोष करो, तुमको बहुत शीघ्र छुटकारा मिलेगा।

६. जहां वह जाता था लोगों की भीड़ उसके पीछे लग जाती थी और कुछ तो उससे जुदा न होकर उसकी ही सेवा में रहते थे।

७. ईसा यही उपदेश करता था—लोगो, तुम इन्सानों की करामात पर विश्वास मत करो क्योंकि केवल वह सब का मालिक परमात्मा ही असाधारण कामों को कर सकता है, यहां तक कि मनुष्य आंधी को भी तो नहीं रोक सकता और न अपनी इच्छानुसार वर्षा कर सकता है।

८. इस पर भी एक करामात है जो मनुष्य के हाथ में है और वह यह है कि दृढ़ विश्वास होने पर यह सारे बुरे भावों को दिल से दूर करने के लिये उद्यत हो जाता है और अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए फिर बदी की राह को ग्रहण नहीं करता।

९. सारे काम जो परमात्मा को भूल कर किये जाते हैं, वह दुराचरण राज-विद्रोह और बदी को भड़काने वाले हुआ करते हैं जिससे यह पता लगता है कि इस प्रकार के काम करने वाले आदमियों का आत्मा बेशर्मी, झूठ और अपवित्रता से किस कदर आच्छादित होता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१०. अदृष्ट की बातों पर ईमान मत लाओ क्योंकि भविष्य का जानने वाला केवल परमात्मा ही है जो ज्योतिषियों और रमल फेंकने वालों के पास घूमता है वह अपने दिल के मन्दिर को तोड़ता है और अपने मालिक पर अपनी बेईमानी प्रकट करता है।

११. ज्योतिषियों और रमल फेंकने वालों की बातों पर विश्वास करने से मनुष्य की स्वाभाविक सादगी और बच्चों जैसी जो पवित्रता होती है वह दूर हो जाती है और एक पिशाच शक्ति उस पर आक्रमण करती है जो हर प्रकार का पाप और मूर्तिपूजा उस से करा लेती है।

१२. हमारा परमात्मा एक सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञ और सर्व न्यायकर्त्ता है तमाम ज्ञान और प्रकाश उसी को प्राप्त है—

१३. रंज में तसल्ली और दिलासा कार्य्य में सहायता बीमारी में आरोग्यता प्राप्त करने को उसी से प्रार्थना करो जो उसकी शरण में आयगा उसको अवश्य सहायता मिलेगी।

१४. इस जगत् का भेद परमात्मा ही के हाथ है क्योंकि जहां यह अपनी इस सूरत में आने से पहिले उसके ज्ञान में मौजूद था उसकी इच्छा से ही इस कर्मरूप में परिणत हुआ है।

१५. जब तुम उससे प्रार्थना करो तो बच्चों की तरह भोले हो जाओ क्योंकि तुमको भूत भविष्य और वर्तमान का ज्ञान नहीं और परमात्मा सर्वज्ञ है।

अध्याय १२

१. जेरोशिलम के अध्यक्ष के दूतों ने ईसा से कहा—ऐ महाराज! हमें बतलाओ कि हम अपने महाराजा की इच्छा पर चलें या शीघ्र मिलने वाली स्वतन्त्रता की प्रतीक्षा करें।

२. ईसा उनके दूत होने को ताड़ गया और उत्तर दिया कि मैंने तुमको कैसर (महाराजा रोम) से छुटकारा पाने को नहीं कहा बल्कि वदी में डूबा हुवा दिल ही छुटकारा पावेगा।

३. जिस तरस कोई भी कुटुम्ब बिना एक बुजुर्ग के नहीं हो सकता इसी तरह प्रजा राजा के बिना शान्ति से नहीं रह सकती। हाकिम के हुक्म की पाबन्दी बिला हुज्जत करनी चाहिये क्योंकि वह हाकिम ही परमात्मा के रूबरु उत्तर दाता होगा।

४. दूतों ने फिर पूछा कि क्या महाराजा को भी परमात्मा की तरफ से हक है और क्या वह दूसरे सारे मनुष्यों से उच्चतम है।

५. मनुष्यों में कोई बढ़कर नहीं परन्तु दुःखी लोग भी हैं और उनकी खबर लेना उन का काम है जो इस काम के लिये चुने गये हैं ताकि वह धर्म में बतलाये हुये यत्न काम में लावें।

६. राजा के बड़े गुण दया और न्याय दो हैं और यह गुण यदि सदैव उसमें रहें तो उस का नाम जगमगाता रहेगा।

७. परन्तु जो इसके प्रतिकूल काम करता है वह अधिकार की सीमा से बढ़ता है यहां तक कि उनकी जान को खतरे में डालता है और परमात्मा को अप्रसन्न करता है और मनुष्यों की दृष्टि में उसके महत्त्व को घटाता है।

८. इस जगह एक बुढ़िया ईसा की बात सुनने के लिये भीड़ में घुस आई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और उस दूत को पीछे कर के आप उस के आगे हो गई।

९. इस पर ईसा ने कहा कि बच्चे को मां को धक्का देकर पीछे हटा देना और आप आगे हो जाना कभी भी योग्य नहीं—क्योंकि माता को हक आगे रहने का है। जो मनुष्य अपनी माता की, जो परमात्मा के बाद दूसरे दरजे पर है, इज्जत नहीं करता, वह बेटा कहलाने का अधिकारी नहीं।

१०. इस उद्देश्यको सुनो कि स्त्री का सत्कार आवश्यक है क्योंकि वह जगत् की पैदा करने वाली है और सृष्टि का कारण है।

११. सारी भलाई और खूबसूरती उसी से निकलती है और वही जीवन और मृत्यु की जड़ है—वही सारे मनुष्यों का आधार है क्योंकि स्वाभाविक और सामाजिक लिहाज से वही एक सहारा है।

१२. वह तुम को दुःख उठाकर पैदा करती है। बड़ी मेहनत से तुम्हें पालती है और मरते समय तक तुम्हारे लिये विचारती रहती है—उस को धन्यवाद दो और उस का मान करो, क्योंकि दुनिया में वही तुम्हारी सहायक और रक्षक है।

१३. उसकी इज्जत और तरफदारी करो। इस से वह तुम को प्यार करेगी और तुम पर वारी जायगी। परमात्मा भी तुमसे प्रसन्न होगा और तुम्हारे बहुत से पापों को क्षमा करेगा।

१४. इसी तरह अपनी पत्नियों से प्यार करो और उन का मान बढ़ाओ क्योंकि वे भावी माता हैं, और थोड़े ही दिन बाद एक-एक स्त्री एक-एक जाति की पैदा करने वाली होगी।

१५. स्त्री के साथ नम्रता से वर्ताव करो। उस की मुहब्बत मनुष्य को सभ्य बनाती है और सख्त दिल को नर्म कर देती है, उसके तमोगुण को दूर करके भेड़ के बच्चे की तरह गरीब बना देती है।

१६. स्त्री और माता परमात्मा के दिये हुये बहुमूल्य पदार्थ हैं और दुनिया के सब से सुन्दर भूषण हैं, उनकी ही औलाद से दुनिया आबाद होगी।

१७. जिस तरह सृष्टिकर्ता ने पहिले प्रकाश को अंधेरे से और थल को जल से जुदा किया, वैसे स्त्री मनुष्य के शुभ विचारों को दुर्भावों से पृथक् करने की शक्ति रखती है।

१८. इस कारण से मैं तुम को कहता हूं कि माताओं और स्त्रियों को परमात्मा से दूसरे दर्जे पर समझो! स्त्री ही परमात्मा का ऐसा मन्दिर है जहां तुम को अपूर्व आनन्द आसानी से नसीब होगा।

१९. इसी मन्दिर से तुम आत्मिक महत्व को प्राप्त करो। वहीं से तुम अपनी मुसीबतों और नाकामयाबी के दुःखों को भूल जाओगे और उसी जगह तुम्हारी गई हुई शक्ति जो पड़ोसियों की सहायता के लिये आवश्यक है फिर से प्राप्त होगी।

२०. उस का अपमान मत करो क्योंकि ऐसा करने से स्वयं अप्रतिष्ठा होगी और प्रेम के भावों को खो बैठोगे! जिनके बगैर दुनिया में कोई प्राणी जिन्दा नहीं रह सकता।

२१. अपनी पत्नी की रक्षा करो जिस से वह तुम्हारी और तुम्हारे कुटुम्ब की रक्षा कर सके, तुम जो सेवा और मान अपनी माता अपनी पत्नी, किसी विधवा या किसी दुखिया स्त्री का करोगे, समझो कि वह मानव सेवा तुमने परमात्मा की की है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अध्याय १३

१. ईसा इस प्रकार इसराईली लोगों के शहरों और गाँवों की सड़कों और मैदानों में उपदेश करता रहा, और उसने जो कुछ कहा वह ही हुआ।

२. इस समय में प्लातूस के दूत उसकी सारी कार्रवाई को देखते रहे। परन्तु ईसा की जुबान से एक भी ऐसा वाक्य न सुना कि जो इधर उधर के अध्यक्षों की रिपोर्टों की सच्चाई का गवाह होता, जो ईसा के विरुद्ध की गई थीं।

३. परन्तु प्लातूस ईसा के अत्यन्त सर्वप्रिय होने से भयभीत हुआ। जिसके लिये लोगों को यह गुमान था कि वह सर्व साधारण को स्वयं राजा बनने के लिये भड़काता है उसने एक दूत को आज्ञा दी कि वह ईसा पर एक बोहतान बांधे।

४. उस समय सिपाहियों को ईसा के पकड़ने की आज्ञा मिली और उन्होंने उसे पकड़ कर अंधेरे बन्दीगृह में रक्खा जहां उस को तरह-तरह के दुःख दिये गये जिस से कि मजबूर होकर अपने अपराध को स्वीकार करे और सूली पावे।

५. ईसा ने अपने भाइयों की सदैव की खुशी को लक्ष्य रखकर धैर्य और धन्यवाद के साथ परमात्मा के लिये सारे दुःखों को झेला।

६. प्लातूस के नौकर उसको बराबर दुःख देते रहे यहां तक कि वह बहुत ही निर्बल हो गया परन्तु परमात्मा उसके साथ था इसलिये उस को वहां मौत न आई।

७. बड़े-बड़े पुजारियों और विद्वान् लोगों ने ईसा के दुःखों और मुसीबतों का हाल सुनकर प्लातूस से प्रार्थना की कि आने वाले बड़े त्योहार की खुशी में ईसा को छोड़ दिया जावे।

८. परन्तु हाकिम ने साफ इन्कार किया। तब उन्होंने यह प्रार्थना की कि ईसा को बड़े लोगों की सभा में लाये जाने की आज्ञा दीजिये, जिसे कि त्योहार से पहिले ही यह फैसला हो जावे कि वह अपराधी है या छोड़ देने के योग्य, इसको प्लातूस ने मान लिया।

९. दूसरे दिन प्लातूस ने बड़े नेताओं, पुजारियों विद्वानों और नीतिज्ञ लोगों को इकट्ठा किया जिससे कि वे लोग ईसा का फैसला करें।

१० ईसा बन्दीगृह से निकाला गया और प्लातूस के सामने दो चोरों के बीच में जिन का मुकद्दमा अभी फैसला होने को था लाकर खड़ा किया गया। दो चोरों को ईसा के साथ इसलिए खड़ा किया गया था जिससे कि सर्वसाधारण इस सभा की बैठक केवल ईसा ही के लिये न समझे।

११. प्लातूस ने ईसा से कहा—ऐ मनुष्य ! क्या यह ठीक है कि तुम लोगों को अध्यक्ष के विरुद्ध भड़काते हो, जिस से इसराईलियों के देश के तुम्हीं राजा बन जाओ।

१२. ईसा ने कहा कोई आदमी अपनी खुशी से राजा नहीं हो सकता और आपको जो मेरे विषय में लोगों को भड़काने की रिपोर्ट की हुई है मैंने सिवाय आसमानी बाप के और किसी का जिकर नहीं किया और मैं लोगों को उस की ही उपासना का उपदेश करता हूँ।

१३. क्योंकि इसराईली लोग मानसिक पवित्रता को छोड़ चुके हैं और यदि वे सत्यस्वरूप परमात्मा की तरफ न लौटेंगे तो बरबाद हो जावेंगे और उनका मन्दिर नष्ट भ्रष्ट हो जावेगा।

१४. राजा इस जगत् में शान्ति रखता है और इस वास्ते ही मैं लोगों को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहता हूँ कि वे इस बात को न भूलें मैं उनको बतलाता हूँ कि वे अपने अधिकार और हैसियत के मुआफिक जिन्दगी गुजारें जिससे कि सर्वसाधारण की शान्ति को नष्ट करने वाले न बनें और मैंने उन को यह उपदेश भी किया है कि उनके आत्मा में अशान्ति का राज्य हो रहा है।

१५. इसी से ईश्वर ने उनको दण्ड दिया है और उन के अपने राजा को परास्त कराया है तो भी मैंने उन से कहा है कि यदि तुम अपने भाग्य पर ही ही सन्तुष्ट रहोगे तो आसमान पर का राज्य इस के बदले में तुम को ही मिलेगा।

१६. इस समय गवाह लाये गये जिनमें से एक ने कहा कि तुमने सर्वसाधारण को बतलाया है कि दुनिया का राजा उस राजा की अपेक्षा तुच्छ है जो इसराईलियों को मूर्तिपूजक की गुलामी से शीघ्र ही छुड़ावेगा।

१७. ईसा ने कहा—धन्य हो, तुम ने सच बोला है। आसमान पर का राजा दुनिया के राजा से महान् और बलवान् है और उस का राज्य दुनिया के राज्य से बहुत बड़ा है।

१८. और वह समय निकट है जब परमात्मा की इच्छानुसार इसराईली लोग अपने पापों से अपने को पवित्र करेंगे क्योंकि पहिले यह कहा गया है कि एक पथ-दर्शक लोगों को स्वतन्त्रता की खबर देने को आवेगा और सब को एकत्रित करेगा।

१९. इस पर प्लातूस ने कहा तुम लोग सुनते हो इसराईली ईसा अपने अपराध को स्वीकार करता है। इसलिये अपने नियमों के अनुसार उसको मौत का हुक्म दो।

२०. पुजारियों और विद्वानों ने कहा हम उसको अपराधी नहीं ठहरा सकते, आप ने अभी अपने कानों सुना है कि उसका अभिप्राय आसमानी राजा से है उस ने इसराईली लोगों को कोई ऐसी शिक्षा नहीं दी जिस को नियमों की रुह से अपराध कह सकें।

२१. तब प्लातूस ने उस गवाह को बुलवाया जिस ने उसकी आज्ञा से ईसा को पकड़ा था वह आदमी आगे आया और ईसा को कहा कि तुमने जो यह बात कही थी कि जो आसमान पर राज्य करता है उसने लोगों को तैयार करने के वास्ते ईसा को भेजा है क्या इस में तुमने अपने आप को इसराईलियों का राजा होना प्रकट नहीं किया।

२२. फिर ईसा ने उसको धन्यवाद देकर कहा कि तुम क्षमा के योग्य हो क्योंकि जो कुछ तुम कह रहे हो अपने मन से नहीं कहते और प्लातूस से कहा क्यों प्रभाव को धब्बा लगाते हो और क्यों अपने सेवकों से झूठ बुलवाते हो! विशेष कर जब कि बिना ऐसा किये भी निरापराधी को फांसी देने का तुम्हें अधिकार है।

२३. इन शब्दों को सुनकर प्लातूस क्रोध से आग बबूला हो गया और ईसा को फांसी का हुक्म दिया और दोनों चोरों को छोड़ दिया।

२४. सभासदों ने आपस में बात चीत करके प्लातूस को कहा कि हम लोग एक निरपराधी को मारने और चोरों को छोड़ने का महापाप अपने ऊपर नहीं ले सकते यह नियमों के विरुद्ध है।

२५. इसलिये जैसा आप की इच्छा में आवे वैसा ही कीजिये यह कहकर पुजारी और विद्वान् सभासद बाहर चले गये और एक पवित्र बरतन में हाथ धोकर कहा कि हम इस सच्चे आदमी की मौत के पाप से अलहदा हैं यह कहकर चले गये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अध्याय १४

१. सिपाहियों ने प्लातूस की आज्ञा से ईसा और उन दोनों चोरों को पकड़ लिया और फांसी की जगह पर ले गये और जमीन में गड़ी हुई फाँसियों पर उनको चढ़ा दिया।

२. दिन भर ईसा और दोनों चोरों की लाश लटकती रही। यह बड़ा भयानक दृश्य था सिपाहियों का उनपर बराबर पहरा रहा। लोग चहुं ओर खड़े रहे और फांसी पाने वालों के सम्बन्धी उनके लिए रोते और प्रार्थना करते रहे।

३. सूरज छिपने के समय ईसा का दम निकला और इस नेक मर्द की आत्मा शरीर से निकल कर परमात्मा में जा मिली।

४. इस तरह उस सदैव की आत्मा की जिन्दगी का खातमा हुआ जिसने मनुष्य की शक्ल में पैदा होकर बड़े-बड़े पापियों को मोक्ष दिलाई और बेहद मुसीबतें उठायीं।

५. इस समय प्लातूस अपने कुकर्म के कारण सर्व साधारण की भीड़ से डरा और ईसा की लाश उस के माता पिता को दी जिन्होंने फांसी की जगह के पास ही उस को गाड़ दिया लोगों के ठट के ठट उसकी कबर पर प्रार्थना करने को आने आरम्भ हुये और उनके रोने पीटने से आसमान गूंज गया।

६. तीन दिन बाद सर्वसाधारण के बलवे से डर कर प्लातूस ने अपने आदमियों को आज्ञा दी कि लाश को छिपा कर वहाँ से निकाल लें और किसी और जगह गाड़ दें।

७. दूसरे दिन लोगों ने कब्र को खुला हुवा और खाली पाया और फौरन यह अफवाह फैल गई कि उस सत्यस्वरूप परमात्मा ने अपने गणों (फरिश्तों) को भेज कर लाश को उठवा लिया है जिस में आसमानी आत्मा का हिस्सा दुनियां में मौजूद था।

८. जब इस अफवाह की खबर प्लातूस को हुई वह बहुत ही डरा और आज्ञा दी कि जो मनुष्य ईसा का नाम लेगा या उस के वास्ते परमात्मा से प्रार्थना करेगा उसको गुलामी और मौत का दण्ड मिलेगा।

९. परन्तु मनुष्य बराबर रोते पीटते रहे और अपने मालिक के वास्ते चिल्ला कर प्रार्थना करते रहे यहां तक कि बहुत से लोग बन्दीगृह में डाले गये और बड़े दुःख देकर मारे गये।

१०. तब ईसा के बहुत से शिष्य इसराईलियों के देश को छोड़ कर बाहर चले गये और विधर्म्मियों में जा बसे और इस बात का उपदेश करते रहे कि वे अपने पापों को छोड़ दें और मोक्ष पाने का प्रयत्न करें और उस आनन्द स्वरूप का ध्यान धरें जो बहिश्त में लोगों को मिलेगा। जहां वह सर्वेश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप में अपने महत्त्व और तेज के साथ मौजूद है।

११. मूर्तिपूजक लोग उन के नेता और सेनापति इन उपदेशकों के उपदेश को सुनते रहे और अपने झूठे सिद्धान्तों को छोड़ते रहे अपने पुजारियों और मूर्तियों को छोड़ कर उस जगत् के मालिक और राजाओं के महाराज के गुण गाने लगे जिसकी दया और कृपा अपार है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनुवादकीय निवेदन

किसी मत में भी श्रद्धालु और भक्त आदमियों की कमी नहीं है, और न श्रद्धा स्वयं ऐसी चीज है जिसको घृणा की दृष्टि से देखा जावे, परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि श्रद्धालु भाइयों को जो अपनी कम समझ के कारण किसी ऐसी वैसी बात पर विश्वास कर बैठते हैं सीधा और सच्चा रास्ता दिखला दिया जाय, भटकने और ठोकरें खाने से बचा दिया जाय।

इस समय इन्जील और ईसा पर विश्वास रख कर जितने ईसाई भाई काम कर रहे हैं वे किसी से छिपे हुए नहीं हैं। और मनुष्य जाति के सुधार के वास्ते उन में से जो-जो कष्ट उठाते हैं हम उनको बड़े आदर और प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखते हैं। पर आंख बन्द करके सबको एक ही लाठी से हांकना ईसा के रेवड़ में जैसे भी हो सके सम्मिलित करने का यत्न करना और इस अपने यत्न में सफलता प्राप्त करने की नियत से घिनौने कार्य कर बैठना, ऐसी बातें है जिनको अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जा सकता।

और जो लोग इन बातों को अच्छी दृष्टि से नहीं देखते उनका कर्तव्य यह होना चाहिये कि उनकी बुराइयों को ईसाई काम करने वालों पर स्पष्ट रूप से प्रकट कर दें। जिससे उनको सोचने और विचारने का भली प्रकार से अवसर मिल सके, हम को आशा है कि यदि ये कार्य परस्पर प्रीति के साथ किया जावे तो वहुत कुछ खराबी दूर हो सकती है।

उदाहरण के निमित्त हम आपको बहुत से भोले भाइयों को बतला देना चाहते हैं। एक समय था जब ईसाई लोग चौदह इंजील प्रामाणिक मानते थे, और ज्यूं-ज्यूं इनको पता लगता गया उन में से एक-एक करके छोड़ते गये, और इस प्रेमपूर्वक विचार का प्रभाव यह है कि अब केवल चार ही इंजीलों को प्रामाणिक माना जाता है और शेष १० अप्रामाणिक कही जाने लगी हैं। इन चौदह इंजीलों के नाम यह हैं—[१] बर्तुलमा की इंजील [२] तूमा की इंजील [३] पनरस की इंजील [४] यहुन्ना की पहिली इंजील [५] दूसरी इंजील [६] इन्द्रमा की इंजील [७] मति की इजील [८] फिलिप की इंजील [६] लूका की इंजील [१०] मसीह के बचपन की इंजील [११] याकूव की इंजील [१२] मरकस की इंजील [१३] मीता की इंजील [१४] बर्णावास की इंजील।

एक प्रश्न आजकल ईसाईयों के सामने यह उठ रहा है कि जब पिता पुत्र और पवित्र आत्मा तीन ही हैं फिर इंजील ४ क्यों हों! इस प्रश्न पर विचारते हुए लूका की इंजील कई एक लोगों की दृष्टि में खटकने लगी है और बराबर पड़ताल की जा रही है। इस छोटी सी पुस्तक में इतना स्थान नहीं है कि हम उनकी सारी बहस को लिखें पर एक बात लिखते हैं वह यह कि लूका की इंजील अध्याय १ आयत १—४ में लिखा है 'उसने उन चीजों का हाल उन लोगों से जो आंख से देखने वाले थे सुन कर लिखा और इसलिये कि वह सब चीजों से वाकिफ था उसने मुनासिब समझा कि वह बातें पिछली आने वाली पुश्तों को पहुँचावे।"

इस कथन से स्पष्ट है कि लुका ने सुनी सुनाई बातें लिखीं और उसकी लिखी हुई बातों को इस सूरत में लाने वाला कोई और ही है। इस कारण से यह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रामाणिक किताब नहीं हो सकती। और वह समय समीप ही मालूम होता है कि जब इस इंजील को भी जबाब मिल जायगा। और यदि इसी तरह पड़ताल होती रही तो एक दिन अवश्य आवेगा जब सारी इंजीलें रद्द हो जावेंगी—क्योंकि इन इंजीलों को हम पढ़ते हैं तो पता लगता है कि—(१) ईसा क्वांरी मरियम के पेट से पैदा हुआ।

(२) १२ साल की आयु में वह यरूशलम के मन्दिर में खो गया (३) ३० साल की आयु के लगभग उस ने उपदेश करना आरम्भ किया और लगभग २ साल के उपदेश करने के पश्चात् फांसी पर चढ़ाया गया। (४) और तीसरे दिन कब्र में से उठ खड़ा हुआ।

(१) क्वांरी के पेट से पुत्र का होना कहाँ तक सम्भव है इसको बुद्धिमान् लोग स्वयं विचार सकते हैं।

(२) १२ वर्ष की आयु में यरुशलम जैसे शहर में खोया जाना मामूली बात है। आज कल भी बच्चे बड़े-बड़े शहरों और मेलों में खोये जाते हैं। पर यह बात अधिक विश्वसनीय है कि वह अपने माता पिता के पास से भाग कर व्यापारियों के साथ सिंध में चला आया हो कारण यह है कि चारों इंजीलें इस के बाद चुप हैं। पर इस लेख के पाठकों को पता लग गया होगा कि ईसा अपने देश में लौट जाने से पहिले भारतवर्ष से सीखता और सिखलाता रहा। और ३० साल तक की आयु उसने इसी देश में काटी। कोई कारण ऐसा मालूम नहीं होता कि हम बौद्धों के कथन को इञ्जीलों के कथन से अधिक विश्वसनीय क्यों न समझें?

(३) २ साल के लगभग अपने देश में उपदेश करने और फांसी दिये जाने पर सब का बयान एक जैसा है।

(४) तीसरे दिन कब्र से जी उठने पर विश्वास रखना जैसा बुद्धि के विपरीत है ऐसी दुनिया में बहुत ही कम बातें होंगी। उस समय के किसी इतिहासकार ने ऐसी बड़ी घटना को अपनी पुस्तक में स्थान नहीं दिया। सिवाय ईसा के उन शिष्यों के जो बड़े ही डरे और सहमे हुये थे। और कोई इस बात का गवाह नहीं। और उन में भी स्त्रियें हैं जिन के अन्दर बहुत काल तक ईसाई लोग जीवात्मा ही नहीं मानते थे। इस के विपरीत बौद्धों का यह कहना कि ईसा पर राजद्रोही होने का अभियोग चलाया गया था। और इस अपराध में ही उसको फाँसी मिली थी इस कारण से जब लोग उस की कब्र पर आकर बड़ी हलचल करने लगे तो न्यायाधीश ने उसके मृतक शरीर को चुपके से कबर में से पृथक् करा देना ही उचित समझा और आज-कल भी जब हम देखते हैं कि राज के प्रबन्धकर्ता लोगों को ऐसे कार्य प्रजा के अन्दर अशान्ति रोकने के लिए करने पड़ते हैं तो हमको बौद्धों के कथन पर विश्वास ही करना पड़ता है।

जो इञ्जील के श्रद्धालु भक्त यह समझते हों कि ईसा ने भारतवर्ष में शिक्षा नहीं पाई वह भाई इस बात की खोज करें कि ईसा ने अपनी आयु के बीच के भाग को किस स्थान में और किस दशा में व्यतीत किया?

और इञ्जील इसका वर्णन क्यों नहीं करती? फिर सब कुछ स्वयं ही प्रत्यक्ष हो जायगा और हमारे ख्याल में उनकी श्रद्धा सीधे और सच्चे मार्ग पर आ जायगी। प्रस्तुत लेख हम इसलिए प्रस्तुत कर रहे हैं कि सत्य प्रगट हो सके—उपदेशों से सहमति आवश्यक नहीं।

अनुवादक—हरिद्वारी सिंह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक राजनीति का आधार

—मनोहर विद्यालंकार—

दर्शन का अर्थ दृष्टिकोण है। किन्तु सामान्यतया इसका प्रयोग जीवन के सम्पूर्ण कला-व्यवहार को आसानी से सहज रूप में व्यतीत करने के लिए अपनाए हुए दृष्टिकोण के लिए होता है। भारत की दर्शन परम्परा अति प्राचीन है। यहाँ के न्याय-वैशेषिक आदि षड् आस्तिक दर्शन भी जीवन यापन का एक पृथक्-पृथक् दृष्टि-कोण उपस्थित करते हैं।

सामान्यतया मनुष्य को इतना अवसर नहीं होता कि वह अपने जीवन यापन के लिए स्वयं सोच विचार करके अपना दृष्टिकोण अथवा दर्शन बनाए। संसार में जो धर्म चले हुए हैं, उनमें से वह किसी एक को चुन लेता है और उस धर्म के अनुसार जो मान्यताएँ स्थिर हुई हैं, उन्हीं के आधार पर वह अपनी जीवन-यात्रा प्रारम्भ कर देता है। इस प्रकार चालू धर्मों में से किसी एक को चुन लेना भी असा-धारण है। बहुत थोड़े ही लोग किसी धर्म को चुनते हैं। सामान्य लोग तो जिस धर्म को मानने वाले माता-पिता के घर में उत्पन्न होते हैं, उसी धर्म के रीति-रिवाजों के अनुसार, अपना सारा जीवन गुजार देते हैं। उन्हें अपने धर्म के दार्शनिक अंश की तरफ ध्यान देने की आवश्यकता ही नहीं होती। उनसे अगर कोई पूछे कि तुम्हारे जीवन का दर्शन क्या है? तो वे इसका अर्थ भी नहीं समझ सकेंगे। हाँ अपना धर्म तो बतला ही देंगे और असल में वह धर्म ही उनका दर्शन होता है।

आजकल जगत् में प्रधान रूप से ४ धर्म प्रचलित हैं—ईसाई, मुस्लिम, बौद्ध तथा हिन्दू। हिन्दू धर्म वास्तव में कोई नहीं, अपितु उपर्युक्त तीनों धर्मों को न मानने वाले भारतीयों को हिन्दू मान लिया गया है, क्योंकि हिन्दू धर्म में अनेक दर्शनों का समावेश है।

ईसाई और बौद्ध दर्शनों को सहचारी धर्म माना जा सकता है। क्योंकि दोनों के प्रवर्त्तकों को शान्ति और अहिंसा का अवतार माना जाता है। मुस्लिम धर्म इसके विपरीत शान्ति और अहिंसा को एक तरफ रख कर अपने विरोधियों को नष्ट करने का समर्थक है और व्यावहारिक माना जा सकता है। ईसाई और बौद्ध धर्मा-वलम्बी देश भी सिद्धान्त रूप में कुछ ही कहें, किन्तु व्यावहारिक रूप में तो वे भी विरोधी को नष्ट करने में ही विश्वास करते हैं। बीसवीं शताब्दी के गत दोनों महायुद्ध इस बात का प्रमाण हैं।

हमारा देश इसका अपवाद है। कम से कम दो हजार वर्ष से हमारा देश व्यवहार में भी महात्मा बुद्ध, महावीर और स्वामी शंकराचार्य के विचारों के कारण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शान्ति और अहिंसा का मानने वाला रहा है। इन तीनों महापुरुषों के विचारों की प्रतिक्रिया का प्रकार यद्यपि भिन्न-भिन्न रहा। किन्तु परिणाम एक हुआ।

महात्मा बुद्ध के क्षणिकवाद 'सर्वं दुःखं' 'सर्वं क्षणिकं' 'सर्वं हेयं' ने हमें इस लोक की उन्नति के प्रति उदासीन बनाया। महावीर स्वामी की अहिंसा की चरम सीमा ने हमें भोजन के प्रति उपेक्षा सिखाई। लोगों ने मुंह बांधना, रात में न खाना शुरू किया। जो आदमी खाने के प्रति उदासीन है, वह पार्थिव उन्नति के प्रति कैसे अग्रसर होगा ? स्वामी शंकराचार्य के 'जगन्मिथ्या' के सिद्धान्त के प्रचार का परिणाम यह हुआ कि इस देश से रहा सहा पुरुषार्थ भी चला गया।

इसके बाद राजनीति के क्षेत्र में हमारे सबसे प्रमुख मार्गदर्शक रहे महात्मा गांधी। वे भी अहिंसा के पुजारी थे। परिणाम यह हुआ कि हमारा देश, इस दिशा में बढ़ते-बढ़ते पंचशील और सह-अस्तित्व के मोहक नारों में अपने शील और अस्तित्व को भूल गया। अपने देश की भूमि और मन धीति विदेशियों को समर्पित करने जा रहा है।

भूमि के दुश्मन चीन, पाकिस्तान प्रत्यक्ष अनुभूत हैं। मानसिक नीति अपहरण कर्त्ताओं का नाम लेने की आवश्यकता नहीं। विदेशी भाषा और संस्कृति का प्रभुत्व तथा अपनी भूमि के छिनने को मामूली सी घटना समझने वाली मनोवृत्ति इतनी जाज्वल्यमान है कि आने वाला शताब्दियों का इतिहास, हमारी पीढ़ी को क्षमा नहीं करेगा ।

भारतीय संस्कृति पर निष्ठा का अभाव

हमारी इन कमियों का एक मात्र कारण यह है कि हमारे लोकमानस में अथवा लोक-नेताओं में अपनी संस्कृति के प्रति निष्ठा का अभाव है।

हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे कर्णधार, जिनके हाथ में इस समय नेतृत्व है, वे अपनी संस्कृति में जो निष्ठा रखते हैं, वह स्वदेशी गुरुओं द्वारा नहीं स्थापित की गई। वह निष्ठा विदेशी गुरुओं तथा इतिहासकारों द्वारा दी गई है।

हमारे विदेशी शासक हमें बुद्ध से आगे ले जाना ही नहीं चाहते थे। उन्होंने तो अशोक महान् और महात्मा बुद्ध दो आदर्श चरित्र हमारे सामने स्वर्णिम रूप में उपस्थित किये हैं। इनसे पहिले का इतिहास या दर्शन वे हमें देना ही नहीं चाहते थे। जबकि वास्तविकता इसके बिलकुल विपरीत है। उन्होंने तो हमें अहिंसक और शान्तिप्रिय बनाना चाहा था जिससे कि हम उनके विरुद्ध खड़े होने का विचार ही न कर सकें।

किन्तु हमें आभार मानना चाहिये स्वामी दयानन्द और लोकमान्य तिलक का, जिन्होंने अपनी संस्कृति के उद्गम का शुद्ध जल स्वयं पान किया और हमें पान कराकर अपने देश तथा संस्कृति के प्रति सजग किया और उनके पद चिह्नों पर चल कर महात्मा गाँधी ने अहिंसा को नीति के रूप में स्वीकार किया।

महात्मा गांधी की अहिंसा, क्या महात्मा बुद्ध और स्वामी महावीर की अहिंसा थी ? जिन्होंने स्वयं बछड़े (साक्षात् गोपुत्र) को मरवा दिया। और समय पड़ने पर हमारे वर्तमान नेताओं के हिचकने पर, प्रेरणा देकर अपनी फौजों को हवाई जहाज द्वारा काश्मीर भिजवाया था। उनकी अहिंसा का आदि स्रोत अपनी संस्कृति का अपने आप किया हुआ मनन था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारतीय या वैदिक दर्शन

यदि हमें अपनी संस्कृति के तत्व को समझना है, तो उसका प्रचार करने वाले स्वामी दयानन्द और लोकमान्य तिलक को प्रेरणा देने वाले, अपने मूल ग्रन्थों (वेद संहिताओं) को देखना होगा। उनका विलोडन करना होगा, और उनकी भावना को समझ कर उसे अपने जीवन यापन का आदर्श 'दर्शन' स्वीकार करना होगा।

उसे स्वीकार करने का कारण यह है कि अन्य सब दर्शन एकांगी हैं। एक Extreme अति या सीमा पर रहते हैं, किन्तु वैदिक दर्शन आध्यात्मिक और व्यावहारिक दोनों है। वह किसी एक सीमा पर टिका हुआ नहीं है।

वह आदर्श रूप में ईसा का भ्रातृत्व उपस्थित करता है; बुद्ध की हेयता और महावीर की अहिंसा स्थापित करता है—किन्तु व्यावहारिक दशा में शत्रुओं को नष्ट करने में मुस्लिम संस्कृति से भी एक कदम आगे चलता है।

आदर्श दर्शन

मनुष्य को वेद के अनुसार अपना जीवन आदर्श निम्न रूप में निश्चित करना चाहिए:—

हे परमेश्वर ! तू हमारा पिता है, और हम सब तेरी सन्तान हैं।

त्वं पितासि नस्तव जामयो वयम्। ऋ० १।३१।१०

भूमि मेरी माता है, और मैं पृथिवी का पुत्र हूँ।

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः। अथर्व० १२।१।१२

तात्पर्य यह है कि चाहे हम आस्तिक हों, परमात्मा में विश्वास रखते हों और चाहे नास्तिक हों, केवल दृश्य जगत् को मानते हों। किन्तु हम सब मनुष्य भाई भाई हैं। हमें भाई की तरह से मिल कर रहना है। आपस में द्वेष नहीं करना, एक दूसरे की सहायता करनी है। मित्र दृष्टि रखनी है, अगर किसी से कोई गलती या अपराध हो जाता है तो उसकी मित्र की न्याईं उपेक्षा करनी है।

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा। अ० ३।३०।३

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे। यजु० ३६।१८

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते

सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय। ऋ० ५।६०।५

आपस में बड़प्पन व छुटपन की भावना, श्वेत व कृष्ण का भेद, गरीब और अमीर की दूरी को दूर करके सौभाग्य के लिए प्रयत्न करना, और बढ़ना है। छूत-छात की भावना को कोई स्थान न देकर सबको भोजन और पान का समान अवसर देना है।

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः। अ० ३।३०।६

जरूरत पड़ने पर हमें एक दूसरे की सहायता करनी है। यदि हम भाई और मित्र के सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकते, तो भी हमें पड़ौसी के नाते एक दूसरे की सहायता व रक्षा करनी आवश्यक है। प्रत्येक देश एक दूसरे के सम्बन्ध से पड़ौसी है। यदि एक देश पर कोई दैवी आपत्ति आई है तो हमारा कर्त्तव्य है कि हम उसकी रक्षा करें, उसको भोजनाच्छादन दे यदि हम ऐसा नहीं करते तो मित्र और पड़ौसी के कर्त्तव्य की अवहेलना करते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुमान् पुमांसं परि पातु विश्वतः । ऋ० ६।७५।१४

न स सखा यो न ददाति सख्ये
सचाभुवे सचमानाय पित्वः ।
अपास्मात्प्रेयान्न तदोको अस्ति
पृणन्तमन्यमरणं चिदिच्छेत् ॥ ऋ० १०।११७।४

इन कर्त्तव्यों को निभाते हुए यदि कोई हमारा पड़ौसी, भाई या मित्र हमारे साथ ईर्ष्या, द्वेष या विरोध करता है, तो हम उसकी उपेक्षा कर दें। यह समझें कि शायद कोई गलतफहमी हो गई है।

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । यजु० २५।२१

हम किसी के बारे में अभद्र सुनने का प्रयत्न ही न करें। इससे अधिक आदर्श और उदार दर्शन क्या हो सकता है। जीवन को यापन करने का संक्षेप में आदर्श दृष्टिकोण यही है।

ईसा और बुद्ध के दृष्टिकोण भी इससे अधिक उदार नहीं हैं। किन्तु ईसा के और बुद्ध के दृष्टिकोण में इसके बाद भेद प्रारम्भ होता है। ईसा और बुद्ध का दर्शन यहाँ समाप्त हो जाता है। इसके बाद वह कोई आदेश नहीं देता। उसका विचार है कि बुरे से बुरा व्यक्ति, बड़े से बड़ा शत्रु भी प्रेम व्यवहार और शान्ति के उपायों द्वारा अच्छा बन सकता है, मित्र हो सकता है।

वैदिक दर्शन का व्यावहारिक रूप

पहले वेद ने जीवन को बिताने के लिए आदर्श दृष्टिकोण पेश किया। सभ्य समाज को, भले आदमियों को उसी दर्शन के अनुकूल रहना चाहिये। अपने शासन को उसी के अनुकूल बनाना चाहिये।

यह एक प्रकार से **यूटोपिया** या आदर्श-कल्पना मात्र है। कई यूटोपिया लिखे गए, लेकिन वे कभी अमल में आते नहीं देखे गये। इसी प्रकार ईसा, बुद्ध और महावीर के सिद्धान्तों को भी **यूटोपिया** कहा जा सकता है। उनके आधार पर शासन न कभी चला और न कभी चल सकता है।

सामान्य जनता पर शासन करने का तो स्वर्णिम सिद्धान्त **"दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वाः"** की नीति का अंगीकरण ही है। जो राष्ट्र अपने शासन में दण्ड के बदले प्रेम और अहिंसा अपनाना चाहते हैं, वे देर तक सफल नहीं होते। उनके यहां भाई-भतीजावाद और भ्रष्टाचार का बोलबाला हो जाता है, व्यक्तियों का नैतिक स्तर गिर जाता है। और अनैतिक स्तर के लोग अपने दुश्मन से मुकाबला नहीं कर सकते। इसके साथ समझौते की, सह अस्तित्व की, पंचशील की बातें करते हैं। इस नीति का अन्तिम परिणाम अनिवार्य रूप से असफलता है। वे स्वयं असफल होते हैं और अपने देश को असफल करते हैं। यदि इस नीति के मानने वालों को स्थानान्तरित न किया जाय तो लोगों में क्रान्ति उत्पन्न हो जाती है। और यदि लोगों का स्तर इतना गिर गया हो कि उनमें क्रान्ति ही संभव न हो तो उनका परतन्त्र होना, दूसरों के द्वारा पददलित होना प्रायः निश्चित है।

इस संभावना से बचने के लिए लोगों का नैतिक स्तर ऊँचा उठाने के लिए, शासन को मजबूत और दृढ़ करने के लिये वेद ने जो आदर्श उपस्थित किया है— उसमें अपराध के लिए क्षमा नहीं दण्ड, दया नहीं दमन का प्रतिपादन किया है। अपने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शासन को पवित्र रखने के लिये आवश्यक है कि:—

समाज में से असत्य भाषण और असत्याचरण निकल जाएँ। लोग झूठी गवाही न दें, झूठी वकालत न करें। यदि झूठी वकालत की इजाजत होगी तो झूठी गवाही कैसे रुक सकती है? और यदि झूठी गवाही दण्डनीय नहीं है—तो समाज से झूठ को किस तरह हटाया जा सकता है। इसलिये वेद कहता है कि:—

त्रिर्यातुधानः प्रसितिं त एतु ऋतं योऽग्नेऽनृतेन हन्ति। ऋ० १०।८७।११
ब्रह्मद्विषस्तपनो मन्युमीरसि। ऋ० २।२३।४

हे राजन्, हे न्यायाधीश, जो व्यक्ति सत्य को असत्य के द्वारा, बोल कर, गवाही देकर या वकालत करके मारता है; वह आपके बन्धन में पहुंच जाये। क्योंकि आप ज्ञानद्वेषी, असत्याचरण करने वाले को दुःख देने वाले हैं।

यहाँ असत्य बोलने वाले को ब्रह्मद्वेषी, और यातुधान कहा है। और बन्धन **त्रिः** तीन प्रकार का कहा है। अर्थात् तीनों व्यक्ति सत्यद्वेषी हैं।

आजकल समाज में कुछ ऐसा रिवाज हो गया है कि बुराई रूपी वृक्ष के पत्तों को नष्ट किया जाता है, किन्तु जड़ों को सींचा जाता है।

(१) काला बाजार के लिये—छोटे दुकानदारों को तो सजा मिलेगी और मिल मालिकों को चन्दा लेकर मान प्रदान किया जाएगा।

(२) झूठ बोलने वाले को सजा, और उसकी वकालत करने वाले को मान।

(३) सामान्य देशवासी को सजा, और शासक को उस पद से हटाना या स्थान परिवर्तन। परिणाम यह हुआ है कि मनुष्य सत्याचरण की ओर प्रवृत्त न होकर मिल मालिक, वकील और मिनिस्टर बनने का प्रयत्न करता है।

वेद के—**ऋतं पिपर्ति अनृतं निपाति।** (अ० ६।१०।२३) ऋत, सत्य व नैतिकता का पालन, पोषण तथा अनृत, असत्य व अनैतिकता का पतन होना चाहिये। **सत्यं धूर्वन्तमचितं न्योष।** (ऋ० १०।८७।१२) सत्य की हिंसा करने वाले को तो बिना बताए ही जला देना चाहिये।

ब्रह्मद्विषो हन्त्यनानुविष्टः। ऋ० १।६०।४

असत्याचरण करने वाले को तो यदि मांग न की गई हो तो भी मार देना चाहिये। ये ऊपर के पद पर पहुंचे हुए व्यक्ति मिलमालिक, वकील और मिनिस्टर ही वास्तव में ब्रह्मद्विट् हैं, क्योंकि ये ज्ञान के द्वेषी हैं, जानते हैं किन्तु आचरण नहीं करते।

उपर्युक्त बात या सिद्धान्त केवल असत्य के लिए नहीं है। असत्य तो अनैतिकता की प्रत्येक बात का उपलक्षण है। हमें अपने राष्ट्र, शासन व समाज को पवित्र नैतिक व देशभक्त बनाने के लिए कठोर दण्ड देने की आवश्यकता है।

वेद तो इतना आगे बढ़ता है कि वह कहता है कि असत्याचरणी को तो गवाह, वकील करने की आज्ञा भी नहीं होनी चाहिये।

अघायतम् अपि नह्या मुखानि। अथर्व० १०।६।१

पाप करने वालों के मुख बन्द कर दो। उन्हें बोलने ही मत दो। वकालत का तो सवाल ही नहीं उठता।

यो नो द्वेष्टि तमद्धयग्ने। अथर्व० १२।२।३

जो व्यक्ति हमारे समाज या देश से द्वेष करता है, द्रोह करता है, उसे तो अग्नि में जिन्दा जला देना चाहिए। स्पष्ट कथन है कि ऐसे व्यक्ति को हे अग्नि! तू खा ले।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यदि हम इतना कठोर दण्ड देंगे तो समाज में सत्य और नैतिकता बढ़ेगी और हरेक देशवासी सच्चा नैतिक व सत्याचरणी बन जाएगा, तब किसी भी व्यक्ति को देशद्रोही नहीं बनाया जा सकेगा। हमारा कोई आदमी दुश्मन के जाल में नहीं फंसेगा। अपने स्वार्थ के लिए देश के साथ द्रोह नहीं करेगा। और तभी हम वैदिक दर्शन के अनुसार अपने शत्रुओं के साथ यथायोग्य वैदिक व्यवहार कर सकेंगे।

शत्रु के साथ वैदिक व्यवहार

वेद में, आरम्भ में मित्र भावना का प्रतिपादन है, लेकिन जब यह निश्चित हो गया है कि अमुक व्यक्ति या अमुक देश हमारा शत्रु है—उसके बाद सह-अस्तित्व और भ्रातृ-भावना या पंचशील के मोहक मन्त्र देश को केवल पथ भ्रष्ट करने वाले हैं। अथवा ऊंचे स्वार्थ के जिसमें लोकैषणा का मुख्य स्थान हैं—साधक मात्र हैं। इसलिए इनके मोहजाल में न फंसकर हमें शत्रु को शत्रु ही समझना होगा।

शत्रु कौन है

प्रश्न हो सकता है कि शत्रु का निर्णय कैसे हो ? हमारा शत्रु कौन है ? इसका स्पष्ट उत्तर है कि:—

योऽस्मान् चक्षुषा मनसा
चित्याकूत्या च योऽघायुर भिदासात्।
त्वं तानग्ने मेन्यामेनीन् कृणु स्वाहा॥ अथर्व० ५।६।१०

जो पापी हमारी तरफ बुरी निगाह से देखता है, मन में हमारे लिए बुरा सोचता है, जाने या अनजाने हमारे लिए बुरा विचारता है या हमें दास बनाने का संकल्प करता है—वह हमारा शत्रु है। हे अग्ने ! अपने अस्त्रों की सहायता से उन सबको निशस्त्र कर दे।

इसमें स्पष्ट निर्देश है कि जिसने हमारा बुरा किया नहीं, अपितु बुरा करने का संकल्प किया है, मन में विचार है या देख भाल कर रहा है, उसे भी शत्रु समझना है। जब हमें निश्चय हो जाए कि अमुक हमारा शत्रु है, अमुक हमारी बुराई में है तो हमारा कर्तव्य है कि हम अपने राजा, सेनापति की सहायता से उसको मसल कर रख दें।

इन्द्रेण युजा प्रमृणीत शत्रून्। अ० १३।१।३

यदि हमें निश्चय हो गया है कि अमुक हमारा शत्रु है तो हमारा कर्तव्य है कि अगले सूर्योदय से पहले ही उसे नष्ट कर दें, अथवा पकड़ कर अंधी कोठरी में बन्द कर दें। शत्रुता के निश्चय के बाद विरोध पत्र लिखना और बातचीत द्वारा हल निकालना अवैदिक और अभारतीय है।

उद्यंस्त्वं देव सूर्य सपत्नानव मे जहि।
अवैनानश्मना जहि ते यन्त्वधमं तमः॥ अ० १३।१।३२

इसके अतिरिक्त जब किसी देश या समाज से शत्रुता निश्चित हो गई है तो उनके रिश्तेदारों और मित्रों को अपने अन्दर नहीं रखना चाहिये। वेद के आदेश के अनुसार उन्हें राष्ट्रपति, महापौर, सेनाध्यक्ष, राज्यपाल आदि पदों पर रखने की तो बात ही क्या है ? उन्हें अपने किसी आन्तरिक प्रबन्ध में भी नहीं लेना चाहिए।

मान्तः स्थुर्नोऽरातयः। अ० १३।१।१२

जो हम से द्वेष करता है, शत्रुता की घोषणा कर चुका है और जिससे हम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

द्वेष करते हैं, शत्रुता की घोषणा कर चुके हैं; उसके प्राणों से तू अपने को बढा, उसके प्राण लेले। और हम उसके पशुओं के धन से बढ़े अर्थात् उसकी वस्तुओं का उपयोग करें।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं
द्विष्मस्तस्य त्वं प्राणेनाप्यायस्व।
आ वयं प्याशिषीमहि
गोभिरश्वैः प्रजया पशुभिर्गृहैर्धनेन॥ अ० ७।८१।५

शत्रुता का निश्चय हो जाने के बाद तो सन्देहास्पद व्यक्तियों को भी छोड़ना अनुचित है। एक भी निरपराधी न मरे चाहे १०० अपराधी छूट जाएं, वाला ब्रिटिश-न्याय केवल आदर्श और एकांगी है। जिस प्रकार उनका दर्शन तो है कि—यदि एक गाल पर कोई चपत मारे तो दूसरा आगे कर दो लेकिन व्यवहार में सदा विश्वयुद्ध के लिये उद्यत रहते हैं।

यदि हमें सिद्धान्त और व्यवहार में एक होना है, अपने समाज और देश को पवित्र रखना है, तो हमें दूसरे सिद्धान्त को अपनाना होगा। वेद भी इसी सिद्धान्त का समर्थन करता है उसका कथन है कि शत्रु यदि संदिग्ध है तो भी उसे मार ही देना चाहिए। अपने देश के हजार के जीवन की रक्षा के लिए एक के जीवन की पर्वाह नहीं करनी चाहिये। अपने इतिहास में हम मोहम्मद गोरी और जयचन्द से शिक्षा ले सकते हैं। हमारा कर्तव्य है कि उस तरह की भूल को न दुहराएं।

वज्रो विजघान संदिहः। ऋ० १।५१।६

आत्म-विश्वास

यो नो द्वेष्टचधरः सस्पदीष्ट।
यमु द्विष्मस्तमु प्राणो जहातु॥

यदि हमें अपना शासन दृढ़, निष्कण्टक और उज्जवल बनाना है, विश्व के राष्ट्रों की पंक्ति में अग्रणी बनना है तो अपने देश के एक-एक व्यक्ति में आत्म-विश्वास कूट-कूट कर भरना होगा। आत्म-विश्वास के आगे कोई बाधा टिक नहीं सकती। समुद्र तालाब बन जाता है और पहाड़ टीला बन जाता है। शत्रुओं की सशस्त्र फौज टिड्डी दल दिखायी देने लगती है। आत्मविश्वास को जगाकर ही हिटलर ने अपने पददलित देश को उठाकर विश्व के सारे सम्मिलित राष्ट्रों को थर्रा दिया था। और सब तरफ से हार ही हार के समाचारों से निराश ब्रिटिश साम्राज्य के प्रधान मंत्री चर्चिल ने अपने देश में दो उंगलियों के इशारे से आत्मविश्वास को जगा कर, हारी हुई बाजी को जीत में परिणित कर दिया था।

अपने प्रत्येक देशवासी के मन में यह भावना जमी होनी चाहिये कि जो हमसे द्वेष करेगा, हम से टकरायेगा, वह गिर पड़ेगा—और चूर-चूर हो जायगा। वह राष्ट्र संघ में पददलित हो जायगा। (आजकल प्रत्येक देश में आत्मविश्वास निहित है।) और अगर कहीं हम ने भी किसी से द्वेष कर लिया, तब तो उसके प्राणों की ही खैर नहीं। वह राष्ट्र तो जीवित ही नहीं रह सकता।

आज की तरह से नहीं कि जो हमसे द्वेष करेगा, उसके साथ हम सह-अस्तित्व की चर्चाएं करेंगे। और जिससे हम द्वेष करेंगे, वह हम पर सरासर झूठे आरोप लगाएगा। विदेशों में हमारे प्रधानमंत्री के सम्मुख प्रदर्शन करेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रत्येक राष्ट्र को यह निश्चय होना चाहिए, कि हमारा मारक ज्ञान इतना ऊंचा है कि हम सारे विश्व को नष्ट कर सकते हैं। हमारे दिल इतने मजबूत और कठोर हैं कि हम दुश्मनों को मारने में दया नहीं दिखाएंगे; हम सामूहिक हिंसा से हिचकिचाएंगे नही। ये भावनात्मक बातें नहीं हैं, हमारे हथियार इतने मजबूत व तैयार हैं कि उनका न कोई मुकाबला कर सकता है, और न कोई बच सकता है।

यदि ये तीनों बातें वास्तविक हुईं तो हमारा प्रत्येक देशवासी कहेगा कि ऐ दुश्मन ! तू सावधान रह, हम जिससे द्वेष करते हैं, उसे अपने ज्ञान से, अपने कर्म से और अपने हथियार से नष्ट भ्रष्ट करके रहेंगे।

बल्कि उसे ये बातें कहने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी; हमारे दुश्मन और राष्ट्र-संघ के अन्य सदस्य इस बात को स्वयं ही अनुभव करेंगे।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वधेयं तं
स्तृषीय अनेन ब्रह्मणाऽनेन कर्मणानया मेन्या। अ० १०।५।१५

गुप्तचर स्त्रियों के साथ व्यवहार

इस बात पर विचार करना भी आवश्यक है कि शत्रु-स्त्रियों के साथ क्या व्यवहार करेंगे। सामान्यतया उनके साथ मानवीय व्यवहार करना है। उन्हें उनके देश में पहुंचा देना है, लेकिन यदि वे अपने स्त्रीत्व से लाभ उठाकर गुप्तचर का काम करती हैं, हमारे देश को नुकसान पहुंचाती हैं तो उनके साथ कोई रियायत नहीं करनी है। उनका भी वध कर देना है। वध करते हुए हिचकिचाहट या दया या प्रतीक्षा नहीं करनी है। उनकी शत्रुता के निश्चय के बाद तो चाहे पुरुष हो चाहे स्त्री उसे अगला सूर्य दर्शन नहीं होने देना है। बल्कि इस तरह के व्यक्तियों को हल्ला-गुल्ला मचाकर या प्रचार करके नहीं मारना चाहिए। अपितु रात्रि के अन्धकार में उन्हें समाप्त करके चुप्पी साध लेनी चाहिए। अन्यथा गुप्तचरों या स्त्रियों को मारने के कारण, अन्तर्राष्ट्रीय दबाव के कारण या कोमल भावनाओं के जागृत हो जाने के कारण विरोधी वातावरण उत्पन्न हो सकता है। उस विरोधी वातावरण का बनना भी अभीष्ट नहीं। इससे देश को हानि हो सकती है।

इन्द्र जहि पुमांसं यातुधान-
मुत स्त्रियं मायया शाशदानाम्।
विग्रीवासो मूरदेवा ऋदन्तु
मा ते दृशन् सूर्यमुच्चरन्तम्। अथर्व०

आत्मविश्वास को उत्पन्न करने का उपाय

अपने देशवासियों में आत्मविश्वास को उत्पन्न करने का एक उपाय तो पहले बताया था कि उसमें दण्ड कठोर हो। अपराधी के साथ रियायत न बर्ती जाए। बड़े आदमियों की सिफारिश की न केवल सुनवाई न हो, अपितु उन्हें भी अपराधी माना जाए। जो बड़ा दीखने वाला यातुधान को बचाने का प्रयत्न करे, अथवा राक्षस होते हुए अपने को पवित्र अथवा निर्दोष स्थापित करने का प्रयत्न करे; राजा का कर्तव्य है कि उसे बड़े भारी वध से मार देवे; मारे समाज के सामने उसे पददलित किया जाये। ऐसे बड़े व्यक्ति को हल्ला गुल्ला मचाकर, खूब प्रचार करके सबके सामने पददलित करना चाहिए। जिससे सारा समाज व देश ऐसे देशद्रोह के कर्म करने की हिम्मत ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न कर सके, और यदि कोई करे तो कम से कम उसकी कोई सिफारिश करने की जुर्रत तो न करे।

यो मायातुं यातुधानेत्याह
यो वा रक्षाः शुचिरस्मीत्याह।
इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेन
विश्वस्य जन्तोरधमस्पदीष्ट। ऋ० ७।१०४।१६

इसका दूसरा उपाय यह है कि जनता में इस बात का प्रचार किया जाय कि शत्रु को मारने पर दण्ड नहीं, इनाम मिलेगा। शत्रु नाश पर आनन्दोत्सवों के आयोजन और उन उत्सवों में शत्रुवध तथा शत्रु को हानि पहुंचाने वाले वीरों को मान दिया जाए, ताकि हरेक मनुष्य यह प्रेरणा ले सके कि यदि हम भी शत्रु को चाहे, वह देश का हो या समाज का—मारेंगे, उसे नुकसान पहुंचाएंगें, उसकी शिकायत करेंगे, तो हम अनुकरणीय, वरणीय, प्रशंसित बनेंगे। हमारा मान बढ़ेगा, घटेगा नहीं।

हर्षस्व हन्तवे शूर शत्रून्। ऋ० १०।११२।१
वृत्रं जघन्वानभवद् वरेण्यः। ऋ० १०।११३।२

इसके साथ ही दूसरी भावना यह करनी है कि शरीर की उन्नति भी उतनी ही आवश्यक है, जितनी आत्मा की। आपको जैसा पहिले बताया हमारा दुर्भाग्य है कि महात्मा बुद्ध. महावीर और शंकराचार्य के दर्शनों का हमारे समाज और देश में यह असर हुआ कि हम शरीर की, शारीरिक उन्नति की तथा ऐहलौकिक ऐश्वर्य की अवहेलना करने लगे। केवल अध्यात्म और परलोक की चर्चा और उन्नति के उपायों का विचार होता रहा। इहलोक और शरीर को त्याज्य, हेय और उपेक्षणीय मानते रहे। उसका परिणाम हुआ पराधीनता और राष्ट्रों की दौड़ में हम बहुत पिछड़ गए।

यदि हमें आगें बढ़ना है, तो हमें इस बात का प्रचार करना होगा कि यह लोक, यह दुनिया त्याज्य नहीं वास्य है, उपेक्षणीय नहीं, भोग्य है और उसके लिए शरीर की उन्नति अनिवार्य है। जो शरीर की उपेक्षा करता है, वह अत्मा की रक्षा नहीं कर सकता, उन्नति नहीं कर सकता। आत्मा की उन्नति के लिए शरीर की उन्नति आवश्यक है।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किं च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥ यजु० ४०।१
ईशा=प्रकृति—**ईशावशस्य या जाया।** अथर्व०
त्यक्तेन=दत्तेन :
आत्मदूषिस्तनू दूषिः। अथर्व० १६।१।३

शासक का कर्तव्य और प्रजा की मांग

राजा और प्रजा परस्पराश्रित हैं। राजा वीर होगा तो प्रजा वीर होगी—यथा राजा तथा प्रजा। राजा न्यायी और सदाचारी होगा तो प्रजा स्थायी और सदाचारी होगी। साथ ही जैंसी प्रजा होगी वैसा राजा होगा क्योंकि कारण के गुण कार्य में आते हैं। राजा को चुनने वाली, अंकुश रखने वाली प्रजा है। प्रजा में से ही राजा=शासक तथा उसके सहयोगी बनते हैं। इसलिए प्रजा का भी कर्तव्य है कि वह समय-समय पर राजा को चेताती रहे। उससे ऐसी माँग करती रहे कि वह चौकन्ना रहे। उसमें शिथिलता आने ही न पावे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजा की मांग हो कि विजय की तैयारी रहे। हमारी सेनाएं इतनी सशक्त हों कि दुश्मन हमारी ओर आंख ही न उठा सके। इसे किसी प्रकार का भय न हो। न तो शत्रु का भय हो, न दैवी प्रकोप, अतिवर्षा, अनावृष्टि, बाढ़ आदि का भय हो। ये चीजें तो कालक्रम से आएंगी ही, लेकिन उनके प्रतिरोध का उपाय पहिले से ही किया होना चाहिये।

हमारे चारों ओर विश्व में कहीं भी शत्रु न हों। अपने मित्रों की सदा सहायता और वृद्धि में तत्पर रहें ताकि यदि कभी कोई दुश्मन अपनी फौज लेकर हम पर आक्रमण करना चाहे तो हम उसका मुकाबला कर सकें, उसे दूर खदेड़ सकें। और कोई हिम्मत करके हमारे देश में सेना सहित घुस आए तो फिर उस सेना में से एक भी आदमी बचकर न जाने पावे। उनकी लाशों को तो कुत्ते गीधं ही खाते दिखाई दें। उनकी औरतें बाल बिखेर कर रोती कलपती ही नजर आएं।

(१) अस्मान् सुजिग्युषस्कृतम्। ऋ० १।३।७

(२) यतो भयमभयं तन्नोऽस्तु

अवदेवानां यज हेडोऽग्ने। अ० १९।३।४

इन्द्र निपाहि विश्वतः। आरे अस्मत्

कृणुहि दैव्यं भयमारे हेतीरदेवीः। ऋ०८।६१।१६

(३) जहि शत्रूंरप मृधो

नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः। ऋ० ३।४७।२

परा णुदस्व मघवन्नमित्रान्,

भवा वृधः सखीनाम्॥ ऋ० ७।३२।२५

योऽस्माँ अभिदासत्यधरं गमया तमः। ऋ० १०।१५२।४

(४) अभिष्याम पृतन्यतः। ऋ० २।८।६

(५) शरव्ये ब्रह्म संशिते—

गच्छामित्रान्प्रपद्यस्व मामीषां कञ्चनोच्छिषः॥ य० १७।४५

(६) अन्धा अमित्रा भवता शीर्षाणोऽहय इव। साम उत्तर०

साम उत्तराचिक का अन्तिम २१ वां अध्याय शत्रुओं का बुरी तरह नाश करने का प्रतिपादन कर रहा है। सामवेद शान्ति वेद है। शान्ति के प्रतिपादन के अन्त में शत्रुनाश का वर्णन इस बात का संकेत है कि बड़े-बड़े शत्रु नाश के लिए समर्थ सामर्थ्य को बनाए बिना शान्ति असभव है। हमारा शान्ति दूत बनकर पंचशील का प्रचार करना "क्षान्त न क्षमया" वाली बात होगी।

कुछ मजदूर लंच-टाइम में बैठे खाना खा रहे थे। एक मजदूर जल्दी खाना खाकर नल पर कुल्ला करने गया तो बड़े जोर से चिल्ला पड़ा। साथियों ने वहीं से पूछा, "क्या हुआ रे ?"

"बंबा लग गया भैया सिर में...खून बह रहा है।" "तो पट्टी क्यों नहीं बाँध लेता सिर पर ?" "क्या ? लंच-टेम क्यों बिगाड़ूं ?"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—डा० हरिदत्त शास्त्री एकादश तीर्थ—

दर्शन दिग्दर्शन

प्रस्तुत लेख में विद्वान् लेखक ने सिद्ध किया है कि भारतीय दर्शन ही जीवन की गुत्थियों को सुलझा सकता है। इस रोग की चिकित्सा पाश्चात्य विचारकों के बस की नहीं। भारतीय दर्शन ही जीवन में सत्य की स्थापना द्वारा उत्कर्ष की मंजिल तक पहुंचा सकता है। —सम्पादक

भारत वसुन्धरा का भावुक प्राणिवर्ग जगत् क्या है ? यह क्यों बना ? किन उपादानों से बना? इसका और मेरा कब से सम्बन्ध हुआ? कब तक रहेगा? इत्यादि विचारों में निमग्न होकर दृश्य या अदृश्य पदार्थों के ज्ञान के लिए ज्ञान साधनभूत प्रमाणों की अपेक्षा करता है। प्रमाणों की संख्या एक से लेकर ८ या १० तक मानी गई है। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थाप्रत्ति, सम्भव, अभाव, प्रत्यभिज्ञा एवम् चर्वणा है। अन्तिम प्रमाण आलंकारिकों को अभीष्ट है तथा उपान्त्य प्रत्यभिज्ञावादियों को।

ये प्रमाण प्रमेय की प्राप्ति के साधन हैं। प्रमेय की प्राप्ति के अनेक मार्ग हैं, इनकी संख्या का निर्धारण इसलिए भी नहीं हो सकता, क्योंकि गन्तव्य स्थान की प्राप्ति कोई घोड़े की सवारी से करता है, कोई खच्चर की, कोई ऊंट की। किन्तु सबका उद्देश्य जिस प्रकार लक्ष्य तक पहुंचना है, उसी प्रकार प्रमाणों द्वारा आत्मानात्म विवेक करते हुए परमात्मा रूपी लक्ष्य की प्राप्ति करनी है। आत्मदर्शन के उपायों में प्रत्यक्ष प्रमाण की साधनता ऋषि दयानन्द से पूर्ववर्ती दार्शनिकों ने इतने स्पष्ट रूप से नहीं मानी, जितने विषद वर्णन के साथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के सप्तम समुल्लास में उल्लिखित है। वहां लिखा है :—

प्रश्न—आप ईश्वर२ कहते हो, परन्तु उसकी सिद्धि किस प्रकार करते हो ?
उत्तर—प्रत्यक्षादि प्रमाणों से।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रश्न—ईश्वर में प्रत्यक्षादि प्रमाण कभी नहीं घट सकते।

उत्तर—**इन्द्रियार्थ सन्निकर्षोत्पन्नम्०।**.........अब विचार करना चाहिए कि इन्द्रियों और मन से गुणों का प्रत्यक्ष होता है, गुणी का नहीं। जैसे चारों त्वचा आदि इन्द्रियों से स्पर्श, रूप, रस, और गन्ध का ज्ञान होने से गुणी जो पृथ्वी उसका आभायुक्त मन से प्रत्यक्ष किया जाता है, वैसे—इस प्रत्यक्ष सृष्टि में रचना विशेष आदि ज्ञानादि गुणों के प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है।......अच्छे कामों के करने में अभय, निःशङ्कता और आनन्दोत्साह उठता है, वह जीवात्मा की ओर से नहीं, परमात्मा की ओर से है। और जब जीवात्मा शुद्ध हो के परमात्मा का विचार करने में तत्पर रहता है उसको उसी समय दोनों प्रत्यक्ष होते हैं। इत्यादि ॥

परमात्मा के अतिरिक्त अन्य अदृश्य वस्तुओं का ज्ञान अनुमानादि प्रमाणों से भी किया जाता है।

प्रमाण संख्या के विषय में कुछ लोगों का यह आक्षेप है, कि ऋषि दयानन्द ने ऐतिह्य को प्रमाण बतलाते हुए गौतम मुनि के पूर्वपक्ष के सूत्र को सिद्धान्त पक्ष का मानकर प्रस्तुत किया है। वह सूत्र है—**'न चतुष्ट्वमैतिह्यार्थापति सम्भवाभाव प्रामाण्यात्।'** न्याय० अ० २। सू० १ ॥

मेरी समझ में यह शङ्का तात्पर्यानिवबोध निमित्तक है, क्योंकि इस सूत्र में ऋषि ने ऐतिह्यादि भी प्रमाण हैं, इतना ही प्रकट किया है। यह नहीं कि प्रमाण आठ ही होते हैं। इस मान्यता को इस सूत्र से सिद्ध करने पर वे तुले हैं। अन्यथा आगे अर्थापत्ति, सम्भव और अभाव की गणना करें तो चार प्रमाण रह जाते हैं। वे ये वाक्य न लिखते—अतः सिद्ध है कि आर्य दर्शन में प्रमाणों की संख्या चार ही है, आठ नहीं। प्रमाणाष्टक का प्रदर्शन अनुमान में ऐतिह्यादि प्रमाणों के अन्तर्भाव के प्रदर्शन मात्र के लिए नहीं। साथ ही ऐतिह्यादि प्रमाणों के दृष्टान्त भी ऐसे हैं, जो उनके स्वरूप को जगत्प्रसिद्ध ऐतिह्यादि के उदाहरणों से पृथक् करते हैं। ऐसा होने पर भी वास्तविक प्रमाण संख्या चतुष्ट्वावच्छेदकता की सीमा को अतिक्रान्त नहीं करती। वस्तुतः 'सत्यार्थ प्रकाश' सरल भाषा में लिखा हुआ एक महान् दर्शन है। इस दर्शन में ऐहिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार की चर्चाएं की गई हैं। लोक समस्याओं तथा आध्यात्मिक उलझनों का इसमें विशेष रूप से विचार किया गया है। 'सत्यार्थ प्रकाश' का यह डिण्डिम घोष है कि **"यस्तर्केणानुसन्धत्ते स धर्मं वेद नेतरः** ॥ इति ॥

संसार में दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ हैं—प्रज्ञामूलक और प्रतिभामूलक (Intutionalistic) प्रवृत्ति तथा तर्कमूलक या रैशनलिस्टिक (Rationalistic) प्रवृत्ति। ये दोनों प्रवृत्तियाँ मिलकर ही तत्त्व निर्णय किया करती हैं। यह आर्य दर्शन की मीमांसा है।

जीवन दर्शन की जैसी सुन्दर व्याख्या 'सत्यार्थप्रकाश' में मिलती है, वैसी अन्यत्र नहीं। दर्शन शब्द का अर्थ समय परिवर्तन के अनुसार बदलता रहा है। प्रथमतः केवल छः ऋषियों द्वारा प्रणीत दर्शनों को ही दर्शन कहा जाता था। दृश् धातु के अर्थ को देखते हुए, दृष्टि, दर्पण, गुण, ज्ञान, इत्यादि अर्थों में भी दर्शन शब्द आता है। वह विचारधारा या ज्ञान परम्परा जो हमें अलौकिक आत्मा आदि पदार्थों के साक्षात्कार के विषय में सहायक हो। अतः अध्यात्म विद्या ही दर्शन शब्द का पारमार्थिक अर्थ है। छान्दोग्य उपनिषद् के ७।१।२ प्रकरण में ब्रह्मविद्या को ही दर्शन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहा गया है। आत्मदर्शन में सहायक होने के कारण ही Spiritualistic Metaphysics के प्रतिपादक सांख्यादि दर्शन भी दर्शन कहे गये हैं।

आज दर्शन शब्द Philosophy का पर्यायवाची बन गया है। Philosophy शब्द Phylo–Love, Sophia—wisdom इन दो शब्दों से बना है। ज्ञानप्रवणता, ज्ञानोन्मुखता ही फिलासोफी या दर्शन है। अतः आज दर्शन शब्द व्यापक अर्थ में प्रयुक्त हो रहा है।

जगद्गुरु शंकराचार्य के समय में ६ आस्तिक दर्शन तथा ६ नास्तिक दर्शन थे। किन्तु जगद्गुरु दयानन्द के सामने दो नास्तिक दर्शन और अधिक बढ़ गये। उनमें से एक का नाम क्राइस्ट दर्शन व दूसरे का कुरान दर्शन है।

इन दोनों का मुंहतोड़ उत्तर या निष्पक्ष समीक्षण 'सत्यार्थ प्रकाश' के १३वें व १४वें समुल्लास में किया गया है।

दर्शन विकास

संसार शब्द का अर्थ है मारे-मारे फिरना। कौन ऐसा व्यक्ति है जो अपने दिमाग में विचार कण रखते हुए परेच्छा से मारे-मारे फिरने की परेशानी को दूर करने के लिए इच्छुक न हो। इसीलिए संसार को दुःख बतलाया गया है। संसार के मूलभूत मोह को 'पापीयान्' की गाली देकर बुद्ध ने याद किया है।

तेषां मोहः पापीयान् ना मूढ़स्येत्तरोत्पतेः ॥

न्यायदर्शन। अ० ४। आ० १। सू०।६

व्यास मुनि ने "संसाराङ्गारेषु पच्य मानेन मया" कह कर तथा उर्दू कविता के बाबा आदम ने दुःखमय कहकर संसार का वर्णन किया है। वे कहते हैं:—

क्या जानूं लोग कहते हैं किसको सरूरे कल्ब
आया नहीं इस जिन्दगी यह लफ्ज लुग्त में।

दुःख के परित्याग की दवा है "दर्शन"।

दर्शनकारों ने ६ प्रकार की दवायें प्रस्तुत की हैं। जो लोग प्रकृति और स्वरूप के अतिरिक्त ईश्वर के समझने में असमर्थ हैं उन्हें सांख्य दर्शन की शरण में आना पड़ता है। यही राजयोग है।

जो लोग शरीर व चित्त का परिकर्म करके ईश्वर की अनुकम्पा से विवेकी बनते हैं वे योगी या हठयोगी हैं। जो लोग कर्मों का ही फल मुक्ति मानते हैं तथा जीव के कर्म करने में स्वातन्त्र्य को अक्षुण्ण कहते हैं। वे हैं:—

"कर्मेति मीमांसकाः" इस वाक्य के अनुयायी।

कुछ लोग ऐसे भी थे जो प्रकृति का असली स्वरूप तथा ईश्वर का स्वरूप जान कर ही सुख मिलता है, यह कहते हैं। ऐसे व्यक्ति नैयायिक कहलाये तथा जिन्होंने आत्मा में या नित्य पदार्थों में विशेष गुण रहता है, यह स्वीकार किया, वे वैशेषिक कहे गये। आत्मा में मुक्ति काल में कौन-सा विशेष गुण रहता है, यह एक विचारणीय बात है, क्योंकि आत्मा में ज्ञान गुण की सत्ता भी मुक्तावस्था में नैयायिक या वैशेषिक नहीं मानते। किन्तु महर्षि दयानन्द आत्मा में सत्य ज्ञान और आनन्द की अनुभूति मुक्तावस्था में भी मानते हैं। लिखते हैं कि जो जीवात्मा अपनी बुद्धि और आत्मा में स्थित सत्यज्ञान और अनन्त आनन्द स्वरूप परमात्मा को जानता है, वह उस व्यापक रूप ब्रह्म में स्थित होके उस विपश्चित् अनन्त विद्या युक्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ब्रह्म के साथ सब कामों को प्राप्त कर लेता है अर्थात् जिस-जिस आनन्द की कामना करता है उन-उन कामों को प्राप्त कर लेता है। यही मुक्ति कहाती है।"

अस्तु यह विचार आगे किया जायगा। उसी प्रकार जो लोग ईश्वर और जीव के गुणों की समानता या एकता मानने लगे वे वेदान्ती कहलाये। सारांश यह कि सभी दर्शनकार ईश्वर के दर्शन या प्रकृति के दर्शन या विवेक दर्शन से सुख की प्राप्ति मानते हैं। यही छहों दर्शनों का एक प्रकार का समन्वय है, जो भिन्न-भिन्न वृत्ति वालों के लिए भिन्न-भिन्न मार्गों को प्रदर्शित कर रहा है।

भारतीय दर्शन की विशिष्टता

कुछ महानुभावों ने भारतीय दर्शन को निराशावादी दर्शन कहा है। पर विचार-पूर्वक देखने से यह बात नितान्त असत्य प्रतीत होती है, क्योंकि **"यतो ऽभ्युदयनिःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः या चोदना लक्षणोऽर्थो धर्मः"** इन सूत्रों के बनाने वाले भला कैसे निराशावादी हो सकते हैं।

उत्तिष्ठत'जाग्रत प्राप्यवरान्निबोधत

यह उपनिषदों का शंखनाद है। भारतीय दर्शन अपरोक्षानुभूति पर विशेष जोर देता है, श्रवण, मनन और निदिध्यासन द्वारा परानुभूति को स्वानुभूति में परिणत करने का यत्न किया गया है। वेद में प्रतिपादित सिद्धान्त सन्देहरहित हैं, क्योंकि उसके कर्त्ता में भ्रम 'प्रमाद, विप्रलिप्सा, आदि दोषों की कल्पना भी नहीं की जा सकती, परन्तु जब तक साधनों द्वारा या प्रमाणों द्वारा किसी वस्तु का ज्ञान न कर लिया जाये, तब तक उसे स्वीकार करना मननशील मनुष्य का कर्त्तव्य नहीं।

ऋषि दयानन्द और पाश्चात्य विद्वान्

पाश्चात्य विद्वान् चेतन आत्मा को नहीं मानते। वे तो मानव शरीर को जड़ तत्त्वों का समूह मात्र समझते हैं। उन्होंने विज्ञान द्वारा भी यही सिद्ध करना चाहा।

१८७४ में Tyndoll (टिंडल) महोदय "British Association for advancement of science" के सभापति थे। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा था कि कुछ दिनों में विज्ञान इतनी उन्नति कर लेगा कि भौतिकी (Physics) और केमिस्ट्री (Chemistry) के अध्ययन से बिना जीव या ईश्वर की सत्ता के आरम्भिक नेबुला (Nebula) के परमाणुओं से लेकर British Association की छोटी से छोटी कार्रवाई तक सभी गतियों की व्याख्या हो सकेगी।

यदि यह बात सत्य सिद्ध हो जाती तो शिक्षा में धर्म का कोई स्थान न रहता। ऋषि दयानन्द के "आर्य दर्शन" सत्यार्थ प्रकाश ने तो धर्म और दर्शन को अविभाज्य अङ्ग बतलाया है, तथा चैतन्य शक्ति शून्य जीवन को जीवन ही नहीं कहा है। जो लोग कहते हैं कि—

"जिन्दगी क्या है अनासिर की मुनासिब तरतीब।
मौत क्या है इन्हीं अजजा का परेशां होना॥

ऐसे व्यक्तियों को सत्यार्थ प्रकाश का १३वाँ समुल्लास ही दवा है। ऋषि ने पूना के व्याख्यानों में भी टिंडल (Tyndoll) के सिद्धान्तों का खण्डन किया था, जिस सुनकर मैक्स प्लेंक (Max Planck) को कहना पड़ा कि :—

Consciousness I regard as fundamental. I regard matters as derivatives from consciousness. We cannot get behind consciousness.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Everything that we talk about, everything that we regard as existing, postulates consciousness इत्यादि।

अर्थात् मैं चेतनता को मौलिक तत्त्व समझता हूं तथा प्रकृति को चेतना मानता हूं। हम चेतनता की पृष्ठ-भूमि से आगे नहीं जा सकते। वह प्रत्येक वस्तु जिसकी हम चर्चा करते हैं, जिसका हम अस्तित्व मानते हैं, वह चेतनता को ही सूचित करती है।"

वैज्ञानिकों की दृष्टि में जो यह महान् हिमालय सदृश परिवर्तन हुआ, वह शंकराचार्य के भाष्यों से नहीं, किन्तु ऋषि की सिंह गर्जना तथा सत्यार्थ प्रकाश के कारण हुआ जिसके कारण इन्हीं Max Planck को—"Where is science going" ?" नामक पुस्तक में लिखना पड़ा कि—

"The religious element in his nature must be recognised and cultivated if all the powers of the human soul are to act together in perspect, balance and harmony."

अर्थात् यदि मानवीय आत्मा को सब शक्तियों की पूर्ण समता और शान्ति से काम कराना है तो आत्मा की धार्मिक वृत्ति को मानना और उसका पूर्ण विकास करना होगा पूर्ण विकास का साधन एक मात्र अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि है, जैसा स्वामी जी ने आर्य समाज के ८वें नियम में प्रदर्शित किया है। योगवासिष्ठ में भी लिखा है कि—

"यावद्विचारदहनेन समूल दाहम्
दग्धा न जंजर लतेव बलादविद्या।
शाखाप्रतान गहनानि बहूनि तावद्,
नाना विधानि सुःखदुःख वनानि सूते।"
(योगवासिष्ठ)

अतः यह स्पष्ट है कि दर्शन वही है जो अैतवाद की समीचीन व्याख्या करे। अैतवाद एवं द्वैतवाद में कोई विशेष अन्तर नहीं। हमारे दर्शन जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति इन तीनों अवस्थाओं के चैतन्य की विशद व्याख्या करते हैं।

जाग्रत् दशा की व्याख्या करने से द्वैतवाद (duality) या बहुत्ववाद (Pluralism) का तत्त्व ज्ञान होता है। स्वप्नदशा की व्याख्या कर्त्तृत्व प्रधान या विषयी प्रधान है। तथा (Suligectinism) की जननी है। इसी प्रकार सुषुप्ति की मार्मिक और धार्मिक व्याख्या रहस्यवाद या (Mysticism) द्वारा होती है। पाश्चात्य दर्शन जाग्रत् दशा तथा तत्सम्बद्ध चैतन्य तत्त्व के विश्लेषण में विशेष व्यस्त है। पाश्चात्य मनोविज्ञान मन की अवचेतन अवस्था का कुछ-कुछ वर्णन करने लगा है। परन्तु पौरस्त्यदर्शन जाग्रत् आदि तीनों रूपों से भरपूर है। इसलिए अनुभव की पूर्ण व्याख्या चिन्तन धाराओं की विशेषताओं से स्थान-स्थान पर सुशोभित पाई जाती है। धर्म और दर्शन का संबंध हमारा ही दर्शन बतलाता है। अतएव महाभारतकार लिखते हैं:—

धर्मार्थकामा सममेव सेव्याः
यस्त्वेकभावः स नरो जघन्यः।
तयोस्तु दक्षं प्रवदन्ति मध्यं
स उत्तमो योऽभिरत्तस्त्रिवर्गे॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वह दर्शन ही क्या जो जगत् में पुण्डरीक-पत्र के समान निर्लेप निवास की शिक्षा न दे, या संसार से उदासीन या निराश होने के लिए प्रवर्तित करे। त्रिविध दुःखात्मक निवृत्ति यद्यपि पुरुषार्थ है पर वह संसार से विमुख होकर नहीं। न संसार को दुःखागार समझ कर ही अध्यात्म पथिक होना श्रेयस्कर है। गौतम मुनि ने मोह को "पापीयान्" कह कर कोसा है; किन्तु आत्म-मोह का परिवर्जन वे भी नहीं करते। अतः यह सिद्ध है कि त्रिवर्ग के साधन द्वारा जो अनन्त का दर्शन करावे, वही असली दर्शन है। महाभारत में भी लिखा है।

धर्ममूलः सदैवार्थः कामोऽर्थ फलमुच्यते।
मूलमेतत् त्रिवर्गस्य निवृत्तिः मोक्षमुच्यते॥

चाणक्य ने भी अपने सूत्रों में ऐसा ही लिखा है—

सुखस्य मूलं धर्मः,
धर्मस्य मूलं राज्यम्।
राज्यस्य मूलमिन्द्रियजयः,
इन्द्रियजयस्य मूलं विनयः
विनयस्य मूलं शास्त्रम्।

अतः समाज धर्म आदि त्रिवर्ग द्वारा उन्नत होता है। ये तीनों वर्ग दर्शन के स्वाध्याय से जाने जाते हैं। कोरा प्रकृति का उपासक विज्ञानवादी इस तत्त्व को नहीं समझ सकता।

ज्यों-ज्यों भौतिकवाद रूपी सुरसा हनुमान् रूपी अध्यात्मवाद को तुच्छ समझकर निगलने के लिए मुख फैलाती है, त्यों-त्यों आध्यात्मिक नित्य सुख-रूप हनुमान् और भी विस्तृत होता जाता है। दक्ष प्रजापति के यज्ञ में सती के अनादर होने के कारण शिव जी द्वारा किये गये यज्ञ-विध्वंस की प्रसिद्ध पौराणिक गाथा भी रूपक होने से भौतिक दक्षता के कारण होने वाली समृद्धि जब अध्यात्म-बुद्धि रूपी सती का अनादर करती है, तब कल्याण कारक शिव, जो धर्म रूपी वृषभ की सवारी करते हैं, अपनी शक्ति से दक्ष प्रजापति के यज्ञ का विनाश करते हैं, इस अर्थ की इंगना करती है।

अणुवाद

"अणोर्महतश्चोपलब्ध्यमुपलब्धीं नित्ये व्याख्याते।७।१।८।
अणुर्महदिति तस्मिन् विशेषभावाद् विशेषाभावाच्च।७।१।११।
अणुत्वमहत्त्वयोरणुत्वमहत्त्वाभावः कर्म गुणैर्व्याख्यामः।७।१।१४॥
अणुसंयोगस्त्वप्रतिसिद्धः।४।२।४।
नित्यं परिमण्डलम्।७।१।२१।

इन सूत्रों में अणु का निरूपण कणाद मुनि ने किया है। न्याय दर्शनकार ने भी—**"परं वा त्रुटेः"** इस सूत्र में :—

तथा व्यास मुनि ने :—

"नाणुरवच्छ्रुतेरिति चेन्नेतराधिकारात्"।२।३।२१

अणवश्च। २।४।७। इन सूत्रों में,

एवं कपिल मुनि ने:—

नाणुनित्यता तत्कार्यत्वश्रुतेः अ० ५ सू० ८७

इस प्रकार अणु के भी कार्य होने की आशंका की है। श्वेताश्वतर उपनिषद में भी—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च।
भागो जीवः सः विज्ञेयः स चानन्त्याय कल्पते ॥

इस रूप में जीव का अणुत्व सिद्ध किया है। जीव का स्वरूप आज भी विवादास्पद है, क्यों कि गौतम ने स्पष्ट ही अणुद्वय संयोग ऊपर से हुआ या नीचे से या बीच से इस शंका को निर्मूल या मूर्खतापूर्ण बतलाया है। वे लिखते हैं कि—

अन्तर्बहिश्च कार्य द्रव्यस्य कारणान्तर वचनादकार्ये तदभावः ॥

(न्याय दर्शन ४।२।२०)

महर्षि दयानन्द का जीवाणुत्ववाद भी एक नवीनता रखता है। वह रामानुज के अणुवाद तथा अन्य शास्त्रकारों के अणुवादों से भिन्न है। जैसा सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास के निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट है :—

"प्रश्न—जीव शरीर में भिन्न विभु है वा परिच्छिन्न ?

उत्तर—परिच्छिन्न, जो विभु होता तो जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, मरण जन्म, संयोग-वियोग, जाना-आना कभी नहीं हो सकता। इसलिए जीव का स्वरूप अल्पज्ञ अल्प अर्थात् सूक्ष्म है और परमेश्वर अतीव सूक्ष्मातिसूक्ष्मतर, अनन्त, सर्वज्ञ और सर्वव्यापक स्वरूप है। इसीलिए जीव और परमेश्वर का व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध है।

प्रश्न—जिस जगह में एक वस्तु होती है। उस जगह में दूसरी वस्तु नहीं रह सकती। इसलिए जीव और ईश्वर का संयोग सम्बन्ध हो सकता है—व्याप्य-व्यापक नहीं।

उत्तर—यह नियम समान आकार वाले पदार्थों में घट सकता है, असमानाकृति में नहीं। जैसे लोहा स्थूल, अग्नि सूक्ष्म होता है, इस कारण से लोहे में विद्युत् अग्नि व्यापक होकर एक ही अवकाश में दोनों रहते हैं, वैसे जीव परमेश्वर से स्थूल और परमेश्वर जीव से सूक्ष्म होने से व्यापक और जीव व्याप्य है। जैसा यह व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध जीव ईश्वर का है वैसे ही सेव्य-सेवक, आधाराधेय, स्वामी-भृत्य, राजा-प्रजा और पिता-पुत्र आदि का भी सम्बन्ध है।"

इन वाक्यों में आये परिच्छिन्न शब्द का अर्थ मध्यम परिमाण या अणु परिमाण हो सकता है। मध्यम परिमाण के होने से आत्मा अनित्य हो जायेगा। अणु परिमाण मानने पर नित्य हो सकता है।

अतः जहाँ-जहाँ स्वामी जी परिच्छिन्न शब्द का प्रयोग करते हैं, वहां-वहाँ विद्वानों को विचार करना चाहिए। ईश्वर की बात तो अलग रही, प्रतिदिन के व्यवहार में आने वाले मेज, कुर्सी आदि पदार्थ भी उपपत्तियों या तर्कों द्वारा सिद्ध नहीं किये जा सकते। बहुत-सी परिभाषायें आवश्यक होने पर भी काल्पनिक हैं। दृष्टान्त के लिये "यूक्लिड" को लीजिये।

'यूक्लिड' का बिन्दु जिसमें लम्बाई चौड़ाई न हो कोई अस्तित्व नहीं रखता। यूक्लिड की रेखा, जिसमें चौड़ाई, मुटाई न हो, अपनी सत्ता नहीं रखती, पर वैशेषिक का अणु तथा यूक्लिड का बिन्दु एक हो या भिन्न यह विद्वानों के लिए एक विचारणीय विषय है। यूक्लिड की सरल रेखा (दो बिन्दुओं के बीच का सबसे छोटा भाग) अपनी परिभाषा में कितनी विचित्र है। इसकी कल्पना तो हम तब कर सकेंगे, जब हम अपने को भूमण्डल से पृथक् ले जाकर भूमि पर खिंची सब सरल रेखाओं को देखें। गोल परिमण्डल के पृष्ठ या पृष्ठांश पर खींची गई रेखायें गोल ही हो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सकती है, न कि तत्त्वतः सरल। पृथिवी के पृष्ठ पर तीन सरल रेखाओं द्वारा बनाये गये त्रिभुज की एक गोलावृत्ति धरातल पर आपको ऐसे दीखेगी, जिसे आप अपने वर्तमान अभ्यास के आधार पर त्रिभुज कहना सम्भवतः स्वीकार न करें। इन सब विशेषताओं ने "यूक्लिडेतर ज्यामिति" (Non-Eucle Dean Geometery) को जन्म दिया, जिसने ब्रह्माण्ड के तथ्यों को समझने में बड़ी सहायता दी। यूक्लिड की स्वयंसिद्धियों और न्यूटन के नियमों की इस युग में तीव्र आलोचना की गई है।

ये सब अपने विचार प्रकट करना चाहते हैं। इनकी अपनी सीमायें हैं। कभी-कभी भाषा की सीमायें हमें चित्रकार की तूलिका की सीमा से अधिक असहाय बना देती हैं। चित्रकार अपने जिस चित्र को दो-चार रेखाओं से व्यक्त कर देते हैं उनका इतना सच्चा विवरण हम भाषा के दर्जनों शब्दों से भी नहीं दे सकते। पर इसका यह अर्थ नहीं है कि शब्दों की अपनी निजी सामर्थ्य नहीं है। उनके द्वारा हम कभी-कभी तो ऐसे विचारों को अभिव्यक्त कर सकते हैं, जो सम्भवतः चित्रकार की तूलिका भी न कर सके।

किन्तु भाषा की सीमाओं को साथ लेकर जो तर्क किया जाता है, उसकी सीमाओं का कहना ही क्या ? तर्क की अपनी सीमायें तो हैं ही, पर भाषा की सीमाओं से और आबद्ध होकर तर्क तत्त्व के अनुशीलन में विचित्र स्थिति उत्पन्न कर देता है।

भर्तृहरि ने वाक्यप्रदीप में कहा है कि :—

प्रज्ञा विवेकं लभते भिन्नेरागम दर्शनैः ।
कियभ वा शक्यमुन्नेतुं स्वतर्कमनुधावना ।।
तत्तद् उत्प्रेक्षमाणानां पुराणैरागमैविना ।
अनुपासित बुद्धानां विद्या नाति प्रसीदति ।।

हमारे लिए यह आवश्यक हो जाता है कि इन सीमाओं को समझते हुए हम कोई बीच का मार्ग अपनायें।

वह मार्ग विभु और अणु के बीच का हो सकता है, जिसे स्वामी जी ने "परिच्छिन्न" शब्द से सत्यार्थ प्रकाश में कहा है। यह मध्यमा प्रतिपदा अणुपरक है ऐसी व्याख्या की जा चुकी है। इसी प्रकार का दूसरा विचार द्वैत और अद्वैत सम्बन्धी है।

द्वैत सत्य है या अद्वैत

व्यास मुनि के सूत्रों का आशय शंकराचार्य अद्वैतपरक लगाते हैं, क्योंकि अन्तर्यामी ब्राह्मण में **"सहाय मी क्षाञ्चक्रे यन्मदन्यन्नास्ति कस्यान्न विभेति तत एवं वाक्य भय द्वितीयाद् वै भयं भवति"** इन वाक्यों से अद्वैत का ही प्रतिपादन किया गया है, किन्तु यह विचार सत्य नहीं क्योंकि उक्त ब्राह्मण में प्रथमतः हिरण्यगर्भ को असहाय मानकर भय मानना तथा तदनंतर विरोधी सत्ता से रूप कल्पना करना ये दो बातें हैं, क्योंकि संसार में विरोधी के प्रवल होने पर भय होता है, असहायत्व से नहीं। इससे सिद्ध है कि दूसरी वस्तुओं से क्योंकि वह विरोधी न थी अतः हिरण्यगर्भ का भय हट गया। इस प्रकार इस श्रुति से भी द्वैत की ही सिद्धि होती है, अद्वैत की नहीं।

इसी प्रकार मुण्डकोपनिषद् के तृतीय मुण्डक के प्रथम खण्ड में:—

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रे,
अस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय ।
तथा विद्वान्नामरूपे विहाय,
परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इन श्रुतियों में अद्वैतपरकता है, यह कहना भी ठीक नहीं क्योंकि वहां नामरूप परित्याग के बाद जीवात्मा की परमात्मा में आनन्द घन रूप स्थिति का ही अध्ययन किया गया है। क्योंकि नदी व समुद्र का जल दृष्टान्त बतला रहा है कि मिलने पर भी दोनों एक नहीं हो सकते। यही गति अन्य श्रुतियों की भी है।

"तत्त्वमसि" इत्यादि वाक्य गौणार्थपरक हैं, यह विशिष्टाद्वैतियों ने सिद्ध कर दिखाया है, क्योंकि इनकी मुख्यार्थ परता वादित है।

एक बात बिना कहे नहीं रहा जा सकता कि आचार्य शंकर ने कहीं-कहीं श्रुत्यर्थों में जुगुप्ता लादी है जैसे—

"अन्तस्तद्धर्मो पदेशात्" वेदान्त द० १-१-२०

इस सूत्र की व्याख्या में छान्दोग्योपनिषद् के—

"तस्य यथा कप्यासं पुण्डरीक मेवाक्षिणी" इस वाक्य की व्याख्या करते हुए कप्यास शब्द का वानर नितम्ब अर्थ किया है, वस्तुतः "कप्यास" शब्द पुण्डरीक का विशेषण है।

कपि का अर्थ है जलपान करने वाला—**कं जलं पिबति इति कपिः,** (पीङ् पाने) आस शब्द का अर्थ है कमल नाल। इस प्रकार कप्यास शब्द का अर्थ हुआ जल पुष्ट नाल वाला पुण्डरीक=लालकमल।

इस प्रकार जुगुप्सा कहीं दिखाई नहीं पड़ती।

आचार और दर्शन

दार्शनिक या तत्त्वज्ञानी के लिए सदाचार निष्ठा की परमावश्यकता है, क्योंकि यदि दार्शनिक स्वेच्छाचारी या इन्द्रियवशवर्त्ती हो तो उसकी दार्शनिकता में सन्देह होने लगता है। अतः ज्ञानी का आचरण शास्त्र विपरीत होता ही नहीं। यदि होता है तो वह ज्ञानी ही नहीं।

बुद्धाद्वैत सत्त्वस्य यथेष्टाचरणं यदि।
शुनां तत्वदृशां चैव को भेदोऽशुचि भक्षणे॥

दार्शनिक का धार्मिक होना उतना ही अत्यावश्यक है जितना कविता के लिए सहृदयता या रागात्मिका प्रवृति का। अर्थात् धार्मिकता और दार्शनिकता का तादात्म्य सम्बन्ध है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि—

लुत्फे कलाम क्या जो नहीं दिल में जख्मे इश्क।
बिस्मिल नहीं है तू तो तड़पना भी छोड़ दे॥

कुछ दार्शनिकों को "बदहवास" कहकर पुकारते हैं पर सच्चे अर्थों में दार्शनिक ही 'दुरुस्त हवास" या साबित कदम होता हैं।

दर्शनों के भेद

भारत में अनेक दार्शनिक मत हैं जिनमें ६ आस्तिक व ६ नास्तिक हैं तथा "सर्वदर्शन संग्रह" में माधवाचार्य ने रसेश्वर पाणिनीय आदि १५ दर्शनों को गिनाया है। वेद के मानने वाले आस्तिक और वेद के न मानने वाले नास्तिक कहे जाते हैं।

पुष्टि मार्ग (रुद्र सम्प्रदाय), निम्बार्क सम्प्रदाय (सनकादि सम्प्रदाय), शाक्त सम्प्रदाय आदि के भी स्वतंत्र मतवाद और दार्शनिक ग्रन्थ हैं। शाक्त सम्प्रदाय का "अगस्त्य सूत्र" इसी सदी में प्राप्त हुआ है और उच्च कोटि का ग्रन्थ है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

षड् दर्शनों के सूत्र ग्रन्थों में पंचशिख, आसुरि, आत्रेय, आश्वलायन, आश्मरथ्य आदि, अगस्त्य सूत्र में हयानन, पैप्पलायन, पाराशर, वसिष्ठ, शुक्र, तित्तिर, मारीच आदि ऋषियों के विचार उद्धृत हैं. जिससे जान पान पड़ता है कि इनके भी दार्शनिक ग्रन्थ थे, जो जैन-बौद्धों और मुसलमानों द्वारा विनष्ट कर दिये गये।

भारत के ही समान कई अन्य देशों में भी दर्शनों और दार्शनिकों का आविर्भाव, विकास और प्रसार हुआ है। चीन में कनफुची-वा, कनकुसियेस, लावट, येनियेन, मेचकेन, चेंगी, चुक किलू, सिहेन आदि दार्शनिक हो गये हैं। इनसे कई दार्शनिक मतवाद और सम्प्रदाय चले हैं। मिस्र में प्रोफिरी, रेमिसिस आदि दार्शनिक और दर्शन सम्प्रदाय हो गये हैं।

यूनान में पिथागोरस, चेलीज, सुकरात, प्लेटो, अरस्तू आदि प्रख्यात दार्शनिक हुए हैं। यूरोप के अन्य देशों में हेकल, हक्सले, डाल्टन, कांट, शोपेनहार, बेकन, मिल, स्पेंसर, ह्यूम, कान्ट आदि अनेकों दार्शनिक हैं।

सर्व प्रथम यूनान से डेमोक्रेट्स ने परमाणु वाद का प्रसार किया। इसके अनुयायी एपीक्यूरस ने इसके सिद्धान्तों को और भी सुदृढ़ बना दिया। जान डाल्टन ने परमाणु को एक वैज्ञानिक अवयव माना। उसके प्रारम्भिक आचार्य कणाद थे। जान स्टुअर्ट मिल कपिल की तरह या अनीश्वरवादी सांख्य की तरह सृष्टि के कार्य में ईश्वर की आवश्यकता नहीं मानते। उनका कहना है कि यदि ईश्वर सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् होता तो पापियों को प्रभुत्व और पुण्यात्माओं को क्लेश न मिलता।

कान्ट के Idealism और शंकराचार्य के मायावाद में बहुत कुछ सादृश्य है। इसी तरह सांख्य के दुःखवाद और शोपनहार के Pessimism में बौद्धों के निर्वाण और इलियट के "एब्जॉर्प्शन" न्याय के अन्योन्याश्रय दोष और पाश्चात्य लाजिक के पेटिशियों प्रिंसिपिआ में वेदान्त के ब्रह्मवाद तथा पान्थीइज्म में बहुत कुछ सादृश्य है। हमारे दर्शनों की महत्ता को देखकर विलियम जोन्स ने ठीक ही कहा था कि वेदान्त आदि दर्शनों का सुन्दर पाठ करने पर विश्वास करना पड़ता है कि पैथागोरस और प्लेटो ने अपने सारे ज्ञान के फव्वारे भारतीय ज्ञानियों के स्रोतों से ही पूर्ण किये थे। भारतीय ज्ञानियों की तरह पैथागोरस भी पाप भक्षण को पापजनक मानते हैं। प्लेटो परलोक और एकेश्वरवाद को मानते हैं। उपनिषद् और गीता आदि ने भारत की विश्व भर में अमर कीर्ति स्थापित की है।

भारतीय दर्शन तर्क के लीला क्षेत्र, आत्मज्ञान के सरस स्रोत और कल्याणमार्ग के सुगम सोपान हैं। यही कारण है कि भारतीय दर्शनों का विभिन्न पाश्चात्य भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। खेद यही है कि अभी तक पाश्चात्य दर्शनों का हिन्दी में सुगम अनुवाद नहीं हो पाया। अन्त में मैं इन शब्दों के साथ इस लेख को समाप्त करता हूँ कि दर्शन जीवन है—धर्म की भित्ति है।

— — —

'दर्शन' वह मार्ग है जिस पर चलकर बन्द बुद्धि के कपाट खुल जाते हैं। सत्य और असत्य का विवेक जागृत हो मनुष्य का मार्ग दर्शन करता है। मंजिल तक पहुंचने के लिए जो मार्ग आवश्यक है उसका दर्शन 'दर्शन' के विना सम्भव नहीं। दर्शन का अभाव मनुष्य को पंगु बनाता है।

—भारतेन्द्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नैटाल (द० अफ्रीका) में आर्यसमाज की प्रवृतियाँ

नेटाल के मूर्धन्य आर्य नेता ९५ वर्षीय पं० श्री ईश्वरसिंह जी से विशेष भेंटवार्त्ता

प्रस्तुतकर्त्ता—जनज्ञान के प्रतिनिधि श्री पं० दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

कभी-कभी विरोधी पक्ष का सर्वथा असत्य पर आधारित आन्दोलन भी विशुद्ध जिज्ञासु के हृदय में सत्य अन्वेषण के लिए प्रबल प्रेरणा भर देता है। परिणामतः जीवन में क्रान्ति आ जाती है और अन्वेषक के पग सदुद्देश्य की ओर अग्रसर होने लगते हैं। [चित्र आवरण के पृष्ठ ३ पर देखें]

लुधियाना (पंजाब) में जन्मे और आज से लगभग ७० वर्ष पूर्व शर्त्तबन्दी कुली के रूप में भारत से नेटाल गये और १६१२ में कुलीप्रथा के अन्त हो जाने के फलस्वरूप नेटाल में ही एक भारतीय पर्व वहाँ आर्यसमाज का बीज वपन करने में प्रमुख रूप में आबाद हुए और गत दो मास से भारत यात्रा पर आये लगभग ९५ वर्षीय ईश्वर सिंह जी से "जनज्ञान" के विशेष प्रतिनिधि के रूप में हमने भेंट की। तब उन्होंने उपर्युक्त तथ्य का उद्घाटन किया।

आर्यसमाज से प्रथम परिचय कैसे ?

"आर्यसमाज के साथ आपका सम्पर्क कैसे हुआ ?" हमारे इस प्रश्न पर उनके झुर्रियाँ प्रवाहित पोपले मुखमंडल पर, किसी पुरानी स्मृति के फलस्वरूप निखराव के साथ स्मितहास्य उभर पड़ा और नेत्र युगल चमक उठे। ईश्वरसिंह जी कहने लगे :—

"उन दिनों बम्बई से एक हिन्दी का पत्र निकलता था—"व्यंकटेश्वर समाचार।" उसमें एक पुस्तक का समाचार पढ़ा जिसका नाम था—"दयानन्द तिमिर भास्कर।" पुस्तक की बड़ी प्रशंसा की गयी थी। मैंने उसे मंगवाया। इसमें स्वामी दयानन्द और उनके "सत्यार्थ प्रकाश" पुस्तक की घोर निन्दा की गयी थी। इससे मेरे हृदय में स्फूर्ति हुई कि जिस व्यक्ति और जिस पुस्तक की इतनी निन्दा की गयी है उसके सम्बन्ध में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। डरबन में आर्यसमाज है। वहाँ से "सत्यार्थ प्रकाश" और ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र दोनों पुस्तकें प्राप्त कीं। पढ़ते ही आँखें खुल गयीं। सब संशय दूर हो गये। मेरा दृढ़ विश्वास हो गया कि "सत्यार्थ प्रकाश" में ही सब सत्य है।" जीवन बदल गया और मैं दृढ़ आर्यसमाजी बन गया।

पहले सिख था : रामायण सुनकर अक्षर ज्ञान

हमने पूछा—"यदि आप बुरा न मानें तो हमारा एक संशय है।"

वह बोले—"बुरा मानने की कोई बात नहीं। आप अवश्य अपना संशय दूर कर लें।"

"आपके नाम के साथ "सिंह" शब्द क्यों है ? क्या आप पहले सिख थे।"

इस प्रश्न को सुनते ही खूब हँसे। बोले—"आपकी पकड़ सर्वथा ठीक है। मैं पहले सिख था। पर विदेश जाते ही सिखों के सब चिह्न समाप्त हो गये।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"आपकी शिक्षा कितनी है क्योंकि "सत्यार्थ प्रकाश" तो काफी कठिन ग्रन्थ है।"

ईश्वरसिंह जी ने निःसंकोच यह स्वीकार किया कि उनकी शिक्षा जब वह नैटाल शर्तबन्दी कुली बनकर गये थे—नाममात्र अक्षरज्ञान तक ही थी। उनके शब्दों में "एक दिन एक कुली को मैंने हिन्दी की रामायण पढ़ते देखा। मैं उसके पास कई दिन बैठ पहले सुनता रहा और फिर अक्षरों पर अंगुली रख पढ़ने का प्रयत्न करता रहा। कुछ दिन बाद मैंने रामायण की पुस्तक भी मंगवा ली। चार महीने बाद अब मैं उसे पढ़ने लगा। आर्यसमाज के सम्पर्क में आकर मेरी पढ़ने की रुचि बढ़ती गयी। अब मैं कई कठिन ग्रन्थ भी पढ़ व समझ लेता हूं।" जब हम उनसे मिले तब "संस्कृत व्याकरण बोध" स्वयं पढ़ रहे थे।

पोर्ट शिप्स्टन में आर्यसमाज की स्थापना

नैटाल में आर्यसमाज की स्थापना और कार्य के विषय में हमारे प्रश्न के उत्तर में ईश्वरसिंह जी ने बताया :—"मैंने डरबिन से कुछ दूर पोर्ट शिप्स्टन नगर में कुछ सज्जनों को एकत्र किया और वहाँ आर्यसमाज स्थापित किया। प्रारम्भ में १८ सदस्य बने। भारत से पहले ठा० प्रवीणसिंह जी वहाँ प्रचार के लिए गये थे। उनके प्रचार से हमें बहुत सहायता मिली। खड़ताल के साथ वे भजन भी बोलते थे। इसका जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। सदस्यों की संख्या बढ़ गयी। एक बात मैं भूल गया। ठा० प्रवीणसिंह जी से पहले स्वामी शंकरानन्द जी वहाँ आये थे। वस्तुतः आर्यसमाज की नींव नैटाल और दक्षिण अफ्रिका में उन्हीं के उद्योग से हुई। स्वामी जी का व्यक्तित्त्व आकर्षक था और भाषण शक्ति प्रभावपूर्ण थी। हिन्दी-संस्कृत के अतिरिक्त अंग्रेंजी में भी बोलते थे। इन दोनों महानुभावों के बाद महता जैमिनी जी, पं० ईश्वरदत्त विद्यालंकार, पं० आनन्दप्रिय जी, स्वामी भवानीदयाल जी इत्यादि विद्वान् भारत से वहाँ आते रहे। पिछले साल स्वामी डा० सत्यप्रकाश जी (सुपुत्र गंगाप्रसाद जी उपाध्याय) वहाँ आये थे। उनके व्याख्यानों का जनता पर गहरा प्रभाव पड़ा। स्वामी जी के भाषण सुनने के लिए यूरुपियन भी काफी संख्या में आते थे। इनकी विद्वत्ता और योग्यता से उन पर वैदिकधर्म के महत्त्व की गहरी छाप पड़ी। वे यह कहते सुने गये कि "वैदिकधर्म के सम्बन्ध में ऐसे गम्भीर और ज्ञानवर्द्धक भाषण हमने पहले कभी नहीं सुने।"

हमारे प्रश्न के उत्तर में ईश्वरसिंह जी ने बताया कि इस समय नैटाल में "पोर्ट शिप्स्टन" के अतिरिक्त ५ अन्य नगरों में भी आर्यसमाजें हैं। (१) पीटर बर्गस (२) लेडी स्मिथ (३) म्लेपड (४) क्लेरस्टेट (५) डरबन—प्रत्येक में अपने मन्दिर हैं।

प्रत्येक समाज के साथ स्कूल हैं। पोर्ट शिप्स्टन समाज के अन्तर्गत एक अंग्रेजी स्कूल भी है जिसमें मेरी पुत्री हिन्दी पढ़ाती है।

स्वाध्यायशील श्री ईश्वरसिंह जी

हमें इस वयोवृद्ध आर्य महानुभाव से यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि उनका सुपुत्र भी—जिसका नाम श्री ए० सिंह है—आर्यसमाज में सक्रिय भाग लेता है और "पोर्ट शिप्स्टन" समाज का आजकल वही प्रधान है। साप्ताहिक सत्संगों में उपदेश, प्रायः ईश्वरसिंह जी के ही होते हैं। इससे स्पष्ट है कि स्वाध्याय के द्वारा उन्होंने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने को कितना ज्ञानवान् बना लिया है। इस यात्रा में उनका पुत्र भी साथ आया है। जब हमने पूछा कि "वह इस समय कहाँ है, जरा दर्शन तो कर लें" तब वयोवृद्ध महोदय ने बताया कि "रामलाल कपूर ट्रस्ट की दुकान पर "निरुक्त" लेने गया है।" उन्होंने बताया कि "मेरे पास आर्यसमाज का साहित्य पर्याप्त है और मैं भारत से वैदिकधर्म की पुस्तकें मंगवाता रहता हूं। अब यहाँ से कुछ आवश्यक पुस्तकें लेकर वापस जाऊंगा।"

अफ्रीकियों में आर्यों का प्रवेश नहीं

हमारे इस प्रश्न पर कि "क्या वहाँ के मूल निवासी अफ्रीकी भी आर्यसमाज में आते हैं व उन्हें आप अपने में मिलाने का प्रयत्न करते हैं?"—ईश्वरसिंह जी ने खेद के साथ यह स्वीकार किया कि अफ्रीकी आर्य समाज में न ही आते और न ही हमारा उनमें कुछ प्रचार है। मैं यह मानता हूं कि यह हमारी निर्बलता है और हमें उन लोगों के साथ घनिष्टता बढ़ानी चाहिए।" आपने बताया—सामान्यतः वहाँ के भारतीयों के सम्बन्ध अफ्रीकियों के साथ अच्छे ही हैं।

रङ्गभेद और जातिभेद का जोर

रंगभेद और जातिभेद के सम्बन्ध में श्री सिंह जी ने बताया कि वहाँ की जनता चार भागों में बंटी है, यूरुपियन, भारतीय और नेटिव (अफ्रीकी)। चौथा भाग "खलपड़" कहलाता है। जो अफ्रीकी और गैर अफ्रीकी दम्पत्ति की सन्तान है। इनकी संख्या बहुत कम है। तीनों के निवास क्षेत्र (एरिया) अलग-अलग हैं। पर मतदान का अधिकार केवल यूरुपियन को है, भारतीय और अफ्रीकियों को नहीं। भारतीय वहाँ, अधिकांश, दूकान, व्यापार और खेती इत्यादि करते हैं। हमारे यह पूछने पर कि "आपका वहाँ क्या कारोबार है?" तो बुजुर्ग महोदय ने बताया कि "सब्जी-फल की दूकानें हैं और साथ में खेती की जमीन भी है। मैं अब कोई धन्धा नहीं करता। लड़के ही सब कारोबार चलाते हैं।" "अफ्रीकी क्या करते हैं?" आपने बताया कि, अधिकतः, वे दूकानों और खेतों पर नौकरी करते हैं। नेटाल में भारतीयों की संख्या अढ़ाई-तीन लाख के लगभग है। इनमें उत्तर प्रदेश-बिहार निवासियों की तादाद अधिक है। यह सब शर्तबन्दी कुली बनकर वहाँ गये थे। इन्हें वहाँ कलकतिया कहा जाता है क्योंकि इन सबको कलकत्ता-डिपो में पहले इकट्ठा किया जाता था। इसके बाद गुजराती और फिर पंजाब आदि अन्य प्रान्तों के। इन भारतीयों में अधिक संख्या सनातनधर्मियों की है। पर, आर्यसमाज के साथ कोई झगड़ा नहीं होता। कई उत्सव-पर्व दोनों मिलकर मनाते हैं।

भारत धन भेजने पर प्रतिबन्ध

श्री सिंह जी ने बताया कि भारतीयों को अपने देश में वहां से धन भेजने पर प्रतिबन्ध है। एक व्यक्ति वर्ष में भारत को ५० पौंड, लगभग एक हजार रुपया तक ही भेज सकता है। एक प्रश्न के उत्तर में आपने बताया कि नैटाल से बम्बई आने के लिए समुद्री जहाज से १२ दिन लगते हैं।

वयोवृद्ध आर्य महानुभाव श्री सिंह जी ने बताया कि उनकी यह भारत यात्रा लाभप्रद और शिक्षाप्रद रही है। कई प्रमुख आर्य पुरुषों के साथ उनका सम्पर्क हुआ है। प्रभु कृपा करें, भारत के आर्य नेताओं द्वारा सदा विदेश स्थित आर्य पुरुषों को मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मिलता रहे।

श्री ईश्वरसिंह जी का हार्दिक धन्यवाद कर हम उनसे विदा हुए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जैन-मत-विचार

जैन मतावलम्बी बन्धुओं को सत्यवेद मार्ग पर चलने का निमन्त्रण

—राधाकृष्ण आर्य—

जैन मत ने धर्म के नाम पर जो सम्प्रदाय स्थापित कर रखा है यदि पाठक उस पर तात्विक दृष्टि से विचार करेंगे तो अवश्य पता लगेगा कि इस सम्प्रदाय ने अशुद्ध अहिंसावाद का सहारा लेकर जहां देश में निर्बल मनोवृत्ति के संस्कारों को जन्म दिया है वहां वैदिक तथ्यों के विरुद्ध प्रचार करके केवल नास्तिक-वाद को बढ़ावा दिया है जो प्रत्येक दृष्टिकोण से हानिप्रद ही सिद्ध हुआ।

जब कोई सम्प्रदाय किसी मिथ्या विचार-धारा को अपना धर्म बना लेता है तो उससे जन कल्याण की अपेक्षा हानि की ही संभावना रहती है। अतः जब उस सम्प्रदाय के विचार ज्ञान की कसौटी पर पूर्ण नहीं उतरते तो फिर ऐसे सम्प्रदाय को जीवित रखने के लिए उसके अनुयायियों के पास एक ही सहारा होता है जिसे मनीषी गण अन्धविश्वास की संज्ञा दिया करते हैं। ये लोग अपने अनुयायियों को केवल एक ही उपदेश दिया करते हैं कि तुम्हारे धर्मविश्वासों से इतर चाहे कितने ही अच्छे विचारों वाला क्यों न हो तुम्हारे सामने वह हीन है। प्रमाणस्वरूप इस्लाम धर्मा-वलम्बी मौलाना मुहम्मद अली इत्यादि ने भी ऐसी ही कुत्सित मनोवृत्ति का परिचय दिया था कि बदमाशों से बदमाश, खूनी तथा डाकू मुसलमान महात्मा गांधी से अच्छा है।

कहने को तो जैन मत वाले यह भी कहते हैं कि तीर्थङ्करों के अतिरिक्त अन्य भी मुक्ति को गए परन्तु जब इनके इस काल्पनिक दावे की पड़ताल करते हैं तो यह दावा पूर्ण रूप से गलत सिद्ध होता है। इसमें कोई सच्चाई दृष्टिगोचर नहीं होती।

श्री कृष्ण महाराज जैसा महायोगी महापुरुष और श्री धनवन्तरि जैसे परोपकारी व्यक्ति जिनकी विचारशीलता के आगे बड़े-बड़े व्यक्ति सिर झुकाते हैं, ऐसे महान् पुरुष भी जब जैन मत की अविचारक दृष्टि से नरक में गए तो फिर और कौन से महापुरुष होंगे जो मुक्ति को प्राप्त हुए होंगे?

इसी विषय में महर्षि दयानन्द ने कहा है—इन्हीं मजहबों के कारण संसार में घृणित हालात पैदा हुए हैं और होंगे। जब तक संसार के मनुष्यों के स्वार्थवश पैदा किए हुए ये झगड़े समाप्त नहीं होंगे तब तक संसार में सुख एवं शान्ति दृष्टिगोचर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं होगी। इसी अन्ध विश्वासी जनून तथा ईर्षा की मनोवृत्ति के कारण संसार में अनेक बार खून की होली खेली गई जिसको सुन कर अथवा देख कर यह कहना कठिन हो जाता है कि ऐसी परिस्थितियों को जन्म देने वाले मानव थे अथवा पशु ! मुगल बादशाह औरंगजेब ने इसी मजहबी जनून के कारण क्या कुछ नहीं किया ? आज भी इतिहास के पन्ने निरीह मानवों के रक्त से लाल हैं।

ईसाई मतानुयायी भी किसी से पीछे नहीं रहे उन्होंने "गैलिलियो" जैसे महान् वैज्ञानिक को इसलिए मृत्युदण्ड दिया क्योंकि उसने कहा कि भूमि गोलाकार है और घूमती है। हालांकि उसके वाक्य उस समय भी सत्य थे और आज भी ध्रुव सत्य हैं। अन्य मजहबों में भी आप को ऐसी ही घटनाएं मिलेंगी।

मजहबों के रोग से निवृत्ति प्राप्त करने का केवल एक ही मार्ग है और वह है "वेद" द्वारा सत्य धर्मोपदेश। वेद द्वारा निर्धारित मार्ग से ही समस्त जगत् का कल्याण हो सकता है। जैसे सूर्य का उद्देश्य संसार के प्रत्येक चर एवं अचर को प्रकाशित करना है। सूर्य भौतिक आंखों के लिए ईश्वरीय प्रकाश है और वेद द्वारा निर्धारित मार्ग आध्यात्मिक प्रकाश है।

जब तक संसार वेदों के दिव्य भानु से आलोकित रहा तब तक विश्व में शान्ति तथा सौहार्द बना रहा। जब से स्वार्थी मत-मतान्तरों ने अपने हाट सजा कर साधारण जनों को भ्रमाना शुरू किया है तभी से विश्व शान्ति तथा मानव धर्म खतरे में पड़ गया है। जितनी भी जल्दी हो सके इन मत-मतान्तरों के भ्रम जाल से किनारा करके आदिकाल से प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान वेद को ग्रहण करें जो कि भौतिक तथा आध्यात्मिक शान्ति का प्रदाता है, इसके अतिरिक्त और कोई कल्याण का मार्ग नहीं है। स्वार्थी व्यक्ति अपनी हठ और जिद पर वैसे ही अड़े बैठे हैं क्योंकि उसमें उनका स्वार्थ निहित है। यदि अपनी अन्तर आत्मा की आवाज पर ध्यान देकर वेद के सिद्धान्तों को विचारेंगे तो समस्त भ्रान्तियों से मुक्ति मिल जाएगी। प्रत्येक व्यक्ति में सोच-विचार की शक्ति तो अवश्य है परन्तु किसी न किसी लोभ के वशीभूत होकर अपनी अन्तर आत्मा की आवाज को दबा देते हैं जिसके कारण सत्य से दूर रहते हैं। यदि आप आज से ही संकल्प कर लें कि हमने सत्य की खोज करनी है तो इस समस्या का आसानी से समाधान हो सकता है और संसार में सुख के साम्राज्य की स्थापना हो सकती है। आप स्वयं निर्णय कीजिए कि आप दुनियाँ में झगड़े चाहते हैं अथवा सुख एवं शान्ति का जीवन ! संसार का प्रत्येक मानव सुख एवं शान्ति का इच्छुक है जो कि वेद के मार्ग पर आचरण करने से ही प्राप्त हो सकती है।

जैन सम्प्रदाय के तीर्थङ्कर

श्री ऋषभदेव जी से लेकर श्री महावीर स्वामी पर्यन्त जैनमत के चौबीस तीर्थङ्कर राग, द्वेष से पृथक् होकर वीतराग बन चुके हैं। इन्हीं महापुरुषों को जैन शास्त्रों में तीर्थङ्कर, सिद्ध; बुद्ध, अजर, अमर इत्यादि नामों से पुकारा जाता है। जैन शास्त्रों में इनके लिए ईश्वर, परमेश्वर शब्द कहीं नहीं आया और न जैन शास्त्रों में ईश्वर-परमात्मा शब्द कहीं है।

वर्तमान काल में जैन धर्म के साधु महात्मा अपनी कथा, वार्ता इत्यादि में तो ईश्वर, परमात्मा की रट लगाते हैं, वह इनका एक काल्पनिक नामोच्चारण होता है।

चूंकि जैन मत में परमात्मा का उल्लेख नहीं है। अतः जैन मत वालों ने अपने अज्ञान के कारण राग-द्वेष से पृथक् होने के कारण जीव को ही परमात्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
कहना प्रारम्भ कर दिया है। जो जन्म-मरण के बन्धन में आया अन्ततः वह जीव है। भला कहां एक जीव की सत्ता जो हर प्रकार से ईश्वराधीन है और कहां ईश्वर का उच्च स्थान, जहां ईश्वर की विशेषताओं का वर्णन है वहां अन्य तर्क की आवश्यकता का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। वैसे समझाने के लिए तर्क के रूप में कुछ प्रमाण देना ही पड़ता है। जीव तथा ईश्वर का परस्पर तुलनात्मक सम्बन्ध इस प्रकार समझ लीजिए जैसे सूर्य के मुकाबले में बरसाती जुगनू से भी कम। ये जो जैन मत के चौबीस तीर्थङ्कर हुए हैं, पहिले ये सब राजा-महाराजा थे। जब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि जिस किसी जीव ने तीर्थङ्कर सिद्ध आदि बनना है, क्या उसके लिए यह आवश्यक है कि पहले वे राजा-महाराजा अवश्य हों? क्या तीर्थङ्कर बनना केवल राजाओं के लिए ही है? वह अधिकार दूसरों को नहीं है कि वे भी शुभ कर्म करके यह स्थान प्राप्त कर सकें। चूंकि चौबीस तीर्थंकरों में एक भी ऐसा नहीं हुआ जो पहले राजा-महाराजा न हो और तीर्थंकर बन गया हो, इससे उपरोक्त बात का समर्थन होता है कि तीर्थंकर केवल वे ही बन सकते हैं जो पहिले राजा-महाराजा हों।

राजा-महाराजाओं को चारण व कवि राजा-महाराजा होने के कारण प्रशंसा पुस्तकों में साधारण रीति के अनुसार भगवान् नाम से पुकारते हैं। उनके धार्मिक जीवन एवं न्याय-प्रियता के कारण मनुष्यों में उनकी प्रशंसा की जाती है।

ऐसी प्रशंसा प्रत्येक अच्छे जीवन वाले की होनी चाहिए। आक्षेप तो वहाँ उत्पन्न होता है जब इन्सान अन्धी श्रद्धा धारण करके उनको ईश्वर समझने लग जाते हैं। यह अविद्या के चिह्न हैं।

अविद्या से बचना चाहिए जो मनुष्य को अन्धकार के मार्ग पर डाल देती है। जहां जैन मत ने मनुष्य का पद छोड़ कर ईश्वर का पद प्रदान करके गलती खाई है, वहां उनके शेष जीवन की परिस्थितियों के विषय में जो गलती की है वहां तो अविज्ञता की सीमा का ही उल्लंघन कर दिया है।

यथा तीर्थंकरों की आयु अस्सी लाख वर्षों की और शारीरिक लम्बाई अढ़ाई तीन मील वर्णन की है। अब विचारने का विषय यह है कि अन्ततः वे राजा थे, उनके निवास के लिए महल भी चाहिएं तथा विश्राम के लिए पलंग आदि भी।

अब पाठक स्वयं ही निर्णय करें कि क्या कभी ऐसी बातें स्वीकार करने योग्य हो सकती हैं? जिनका वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नहीं।

वेद जो विश्व का सर्व प्रथम ज्ञान है उनके विषय में वैशेषिक दर्शन के कर्त्ता महर्षि कणाद् ने लिखा है "बुद्धिः पूर्वा वाक्यकृति वेदः" अर्थात् वेद का प्रत्येक वाक्य बुद्धि यथार्थ (ज्ञान) के अनुकूल है। वेद में कोई बात बुद्धि के विपरित नहीं है।

वेद में मनुष्य की आयु का मध्यमान एक सौ साल दर्शाया गया है और उसका विभाजन भी कर दिया गया है। यथा ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वान-प्रस्थ आश्रम और संन्यास आश्रम। अधिक से अधिक वेद ने पूर्ण ब्रह्मचर्य पालन करने से ४०० वर्ष की आयु लिखी है।

अब यह तो स्वीकार करने योग्य बात है, जिस पर किसी को कोई आक्षेप नहीं हो सकता और कहाँ यह गप मारना कि लाखों वर्षों की आयु इत्यादि। न जाने ऐसी असम्भव बातों को लोग अपना धर्म कैसे मान बैठते हैं।

समाना में तेरह-पन्थी जैन साधु आए हुए थे। प्रथम तो ये विचार-विनिमय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के लिए समय नहीं देते। यदि भूल करके एक वार समय दे भी दें तो उसके पश्चात् आप कितना ही जोर क्यों न लगायें, कभी समय देने का नाम तक नहीं लेते।

जो समय दिया था, वार्तालाप के मध्य में तीर्थंकरों की आयु तथा शरीर की लम्बाई के विषय में भी उन लोगों का सिद्धान्त पूछा गया है। क्या आप ऐसा मानते हैं या इसका कुछ खण्डन भी करते हैं। महात्मा जी कहने लगे कि जैन शास्त्रों में ऐसा ही लिखा है, हम ऐसा ही मानते हैं। यह हमारा विश्वास है, यह बुद्धिमत्ता है।

यदि साधु होकर भी अन्ध-विश्वास से युक्त रहना हो तो फिर इस साधुपन से क्या लाभ? स्वयं सत्यता को ग्रहण न करना और दूसरों को सत्यता का उपदेश देना। जब सच और झूठ का स्वयं ही निर्णय नहीं कर सकते, फिर दूसरों को क्या खाक सच्चाई का उपदेश देंगे? साधारण लोग जो कुछ ज्ञान नहीं रखते यदि वे ऐसा कहें तो किसी सीमा तक क्षमा योग्य हैं। साधु होते हुए भी ढोंग वाली बातों में विश्वास रखते हुए साधुपन व्यर्थ है। कोई भी क्यों न हो हर एक ने विश्वास को "छूमन्तर" समझ रखा है। जैसे मदारी छूमन्तर मार कर मिट्टी का रुपया बना देता है, आकाश से गोले बरसा देता है।

आजकल यही दशा हो रही है। एक अन्धा है, दूसरा बहरा है, एक देखता नहीं, दूसरा सुनता नहीं। वही रट लगाए जाते हैं कि अपना-अपना सिद्धान्त है अपना-अपना विश्वास है। यह भी कोई तर्क का उत्तर है, भला बताओ ऐसे लोगों की बुद्धि पर दुःख क्यों न हो। बुद्धि प्रत्येक में विद्यमान है और अच्छी प्रकार मनन से विचार सकते हैं। यदि गम्भीरता-पूर्वक विचार करें और अपनी आत्मा की आवाज पर ध्यान दें। हठ तथा जिद को छोड़ दें तो कोई कारण नहीं कि सत्य और असत्य में भेद न कर सकें। सत्यता के ग्रहण करने से जहां आत्मा को शान्ति होगी, वहाँ मनुष्य कर्त्तव्य का भी पालन होगा।

साधारण लोगों ने विश्वास की जो परिभाषा गढ़ रखी है, वस्तुतः वह अन्ध-विश्वास ही कहा जा सकता है। सच्चाई से तो ऐसे विचारों का दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। यदि थोड़ी-सी समझ से काम लें तो उन्हें ज्ञात हो जाएगा कि वास्तविक विश्वास तो वह होता है जहां किसी संशय की जरूरत न हो। "जो वस्तु जैसी हो उसको वैसा ही जानना फिर उसे वैसा ही मानना" इसे कहते हैं सच्चा विश्वास। इस प्रकार मान कर प्रत्येक मानव नेक मार्ग ग्रहण कर सकता है।

इसके विपरीत जैसा कि सम्प्रदायों ने विश्वास को ही हर स्थान पर काम आने वाली वस्तु समझ रखा है। चाहे उसमें वास्तविकता हो या न हो, विश्वास ले आओ, बेड़ा पार है।

इसी अन्ध-विश्वास के ही कारण जैनमत के नाम पर अविद्या का प्रचलन हुआ, वहां देश के लिए भी यह अन्ध-विश्वास अत्यन्त हानिकारक सिद्ध हुआ। शत्रु हमारे देश तथा धर्म पर आक्रमण करने के लिए तैयार खड़ा है और हम अन्ध-विश्वास के कारण कहीं ज्योतिषी जी से पत्री खुलवा रहे हैं और कहीं मूर्त्तियों के आगे बैठे प्रार्थना कर रहे हैं कि आप इन दुश्मनों का नाश कर दो। इन्हीं कारणों से देश का कई शताब्दियों से नाश होता चला आ रहा है। यदि विश्वास के यही अर्थ रखें जो प्रायः लोगों के दिमाग में घर किए हुए है तो फिर 'अन्धी नगरी चौपट राजा' वाला ही उदाहरण होगा। एक मुसलमान का विश्वास है कि बकरा, दुंबा, ऊंट इत्यादि हलाल करके ईश्वर की राह पर देने से पुण्य मिलता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक ईसाई का ईमान है अगर हजरत ईसा पर ईमान ले आओ तो आपको स्वर्ग मिलेगा। अन्य सम्प्रदाय वालों का भी ऐसा ही विचार है कि आप केवल उस सम्प्रदाय वालों के कथनानुसार विश्वास कर लो। यही कारण है कि जब से जैन आदि सम्प्रदाय मनुष्य पूजा के आधार पर चले हैं तभी से ही मनुष्य पूजा का बोल-बाला हुआ है। इन्हीं की देखा-देखी पुराणों ने भी राम-कृष्ण इत्यादि के नाम पर पौराणिक मत की नींव रखी। मुसलमानों ने अपने मत का आधार हजरत मुहम्मद पर; ईसाइयों ने हजरत ईसा पर। इसके अतिरिक्त वर्तमान काल में ब्रह्मकुमारी, राधास्वामी, देव समाजी, नन्दपुरिया इत्यादि सम्प्रदाय हैं, सबने अपने-अपने लाभ के लिए सम्प्रदाय उत्पन्न किए हैं।

एक ही महापुरुष ऋषि दयानन्द हुए हैं, जिन्होंने डंके की चोट से नाद निनादित किया। आप उनके साहित्य को पढ़ें तो आप अनुमान लगायेंगे कि ऋषि सच्चाई के कितने भक्त थे, गुरुडम तथा मनुष्य पूजा के कितने घोर विरोधी थे। वे सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं—

'वेद इत्यादि सत्य शास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्तों के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं जिनको मैं भी मानता हूँ और सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूँ। मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूँ कि जो तीन काल में सबको एक-सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेश-मात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उस को मानना, मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्य्यावर्त में प्रचारित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो-जो आर्य्यावर्त वा अन्यदेशों में अधर्म-युक्त चाल-चलन हैं उनका स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं उनका त्याग नहीं करता न करना चाहता हूँ, क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहिः है।'

(सत्यार्थ प्रकाश—स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश)

ऋषि दयानन्द जी ने जो आर्य समाज के दस नियमों का निर्माण किया। उनमें चौथा नियम इस प्रकार है—'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।' यदि मानव इस नियम पर आचरण करे तो विश्व में शान्ति का साम्राज्य हो जाए।

अन्धकार एवं अविद्या के युग में बहुत-सी ऐसी बातें प्रचलित हो जाती हैं जिनका सच्चाई से तनिक भी सम्बन्ध नहीं होता। चूंकि गुरु-परम्परा से ऐसा चलता आ रहा है इसलिए हमें भी ऐसा मानना चाहिए। जैसे कोई भूमि अच्छी उपज देने वाली है और यदि उसे दो-चार वर्ष व्यर्थ ही छोड़ दिया जाए तो उसमें स्वयं उत्पन्न होने वाले पौधे आक, ढाक, कांटे आदि उत्पन्न हो जाते हैं। यही उदाहरण इन सम्प्रदायों पर भी लागू होता है।

गणित एवं ज्योतिष विद्या के आधार पर, वेद के सिद्धान्त के अनुसार सृष्टि को उत्पन्न हुए लगभग दो अरब वर्ष हो गए हैं। महाभारत के युद्ध को हुए पांच हजार वर्ष हो गए हैं। यदि दो अरब वर्षों में से ५००० वर्ष निकाल दिए जाएं तो कोई विशेष कमी प्रतीत नहीं होती। अब वर्तमान कालिक पौराणिक, कुरानी, किरानी, जैनी इत्यादि ये जितने भी सम्प्रदाय हैं ये सब महाभारत के पश्चात् उत्पन्न हुए हैं। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि आर्यों से महाभारत तक किसी भी सम्प्रदाय की उत्पत्ति नहीं हुई। महाभारत के पश्चात् सम्प्रदायों की वर्षा प्रारम्भ हो गई। पहिले सम्प्रदाय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पैदा क्यों न हुए ? महाभारत काल के पश्चात् क्यों हुए ? इसका कारण स्पष्ट है कि जिस समय ईश्वर द्वारा प्रदान किया हुआ सूर्य अस्ताचल को प्राप्त हो जाता है तब लोग अपनी-अपनी रोशनियां जलाते हैं। आध्यात्मिकता का प्रकाश करने वाला जो वेद-रूपी सूर्य है वह महाभारत युद्ध में सच्चे उपदेशक, सच्चे वक्ताओं के मारे जाने के कारण लुप्त हो गया, दुराचारियों की तूती बोलने लगी, दुनियां में अन्धकार मच गया। जिस के दिल में जो आया उसने उसे ही चालू कर दिया। अकल के अन्धों ने उसे ही सत्य कहना शुरू कर दिया। इसी कारण देर पर्यन्त अविद्या का युग रहने के कारण विश्व में अविद्या का खूब प्रचार हुआ। अब, फिर प्रबल वेद का प्रचार हो जाए तो ये समस्त मत-मतान्तर स्वयंमेव मृत तुल्य हो जायेंगे। जैसे सूर्य के उदय होने के पश्चात् यदि कोई रात्रि की बिजली जलती भी रहे, फिर भी वह न होने के बराबर है। इसलिए भाइयों से निवेदन है कि यदि अविद्या के युग में अस्सी-अस्सी लाख वर्ष की आयु और अढ़ाई मील लम्बे शरीर का उल्लेख है तो उसे केवल गप्प समझ कर छोड़ देना चाहिए। सदैव सच्चाई को ग्रहण करने की कोशिश करनी चाहिए जिससे मानवीय जीवन सफल हो।

जैनमत की प्राचीनता

उपाध्याय साहिब ने जैन मत की प्राचीनता भागवत आदि पुराणों से, अन्य कुछ नेताओं की राय से, अन्य प्रमाणों के अतिरिक्त वेद द्वारा भी सिद्ध करने का प्रयास किया है। इसमें प्रमाण इस प्रकार है कि श्री नेमिनाथ जी जो जैन मत के बाईसवें तीर्थङ्कर हुए हैं, आप श्री कृष्ण जी के ताऊ-पुत्र भाई थे। श्री नेमिनाथ का वर्णन यजुर्वेद के नवें अध्याय के पच्चीसवें मन्त्र में आता है। मैं अपनी ओर से कुछ न कहता हुआ निर्णय पाठकों के सामने रखता हूँ कि वह स्वयं निर्णय कर लें कि जैन-मत की प्राचीनता की जो कहानी है यह कहाँ तक सत्य है और कहाँ तक नहीं ? अब प्रश्न यह है कि जब उपाध्याय जी जैसे संत महात्माओं के ज्ञान की यह दशा है तो अन्य साधारण जनों की दयनीय दशा पर जितना भी दुख किया जाए उतना ही थोड़ा है। इन साधु-महात्माओं से यदि कोई पूछे कि महात्मा जी ! कृष्ण जी के युग का वेदों के युग से सम्बन्ध ही क्या है ? कृष्ण जी को हुए केवल पाँच हजार वर्ष हुए हैं जबकि वेदों का प्रादुर्भाव हुए लगभग दो अरब वर्ष हो गये हैं और जब उस समय नेमिनाथ जी वर्तमान ही न थे तब उनका वेद में वर्णन का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।

कथा वार्ता में जब जैन साधु उपदेश देते हैं तो पुन: पुन: यही कहते हैं कि सच्चाई को ग्रहण करना चाहिये। न जाने जैन मत वालों के पास कौन-सी सच्चाई है जो श्रोताओं को भेंट करते हैं।

जब साधु महात्मा स्वयं अपने आप इस प्रकार के तथ्य उपस्थित करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि सच्चाई तथा जैन मत दोनों भिन्न-भिन्न वस्तुएँ हैं।

कम से कम प्रमाण देते हुए कुछ तो विचार कर ही लेना चाहिये। वस्तुत: बात यह है कि जैन मत की लगभग जितनी भी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, वे इन लोगों तक ही सीमित हैं। ये लोग न तो वेद पढ़ते हैं और न ही सुनते हैं। यदि ये लोग वेदों को पढ़ते और वेदों के जानने का प्रयास करते, फिर ऐसे असम्भव, व्यर्थ, गलत प्रमाण न देते जिसका कि सच्चाई से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। इस स्थान पर विषय से सम्बन्धित महात्मा जी का वर्णन करना मैं आवश्यक समझता हूं। जैन महात्मा जिन का नाम विजय प्रकाश है जो जैन मूर्ति-पूजा सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखते हैं वे जब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामने आए तो उन्हें मिलने का अवसर प्राप्त हुआ, महात्मा जी से अन्य कोई विचार-विनिमय नहीं हुआ।

महात्मा जी ने स्वयं भी यह कहा कि जैन मत का वर्णन वेदों में है। मैंने जिस समय प्रमाण पूछा तो किसी पुस्तक में से यह मंत्र निकाल कर दिखाया :—

"ओं लोक प्रष्ठा चित्रोनस्ती तीर्थंकरान् ऋषभादि।
वर्द्धमान नाम सन्स्तान लाहाईस्तान बरवव किए ॥"

जिस पुस्तक से यह प्रमाण दिया गया है, वहाँ पर भी यह नहीं लिखा हुआ था कि किस वेद का यह मन्त्र है। यह लेख पुस्तक में अवश्य विद्यमान था। जब मैंने प्रमाण के पूर्ण पते के लिए कहा तो महात्मा जी कहने लगे कि या तो जहाँ बम्बई में यह किताब छपी है वहाँ से यह किताब मंगवा कर दूंगा या मेरे गुरु बनारस में रहते हैं, वहाँ से मंगवा कर दूंगा। मैंने कहा कोई बात नहीं महात्मा जी, जब भी आपके पास प्रमाण का पूरा पता आ जाए दिखा देना ताकि वास्तविकता का ज्ञान हो सके।

जब कुछ दिनों के पश्चात् पता किया तो उत्तर इन्कार में था। महात्मा जी ने इसे बहुत अनुभव किया। वस्तुतः बात यह है कि जैन साधु अन्य धर्मों का साहित्य बहुत कम पढ़ते हैं और दूसरों के साथ विचार-विनिमय भी बहुत कम करते हैं। जैन मत में अधिकतया पूजा जैन-साधुओं की होती है। उनके शिष्य केवल मात्र इनके दर्शन करना ही पुण्य समझते हैं। जहां केवल मनुष्य पूजा तक ही दायरा सीमित है वहाँ किसी से तर्क के आधार पर पूछना व्यर्थ है। कई महात्मा अपने स्थान पर बैठे गलत किस्से कहानियां सुनाते रहते हैं और यह लोग बैठे सत्य वचन महाराज कहते रहते हैं।

वेदों के प्रमाण इसलिए देते हैं ताकि अनुयायियों में हमारे विषय में वेदों के ज्ञान का प्रभाव जमा रहे। परन्तु ये लोग वेदों के निकट तक भी नहीं फटकते। यही कारण है कि वेदों के विषय में इनका ज्ञान कुछ भी नहीं है। वेदों में मनघड़न्त, निज कल्पित किस्से कहानियां कहां? महात्मा जी प्रमाण तो तब दिखलाते जब कहीं होता?

जैसा कि प्राचीन होना एक गौरव की बात है जिसको आर्य जन प्राप्त किये हुए हैं। जैसे सूर्य अपनी सत्ता का स्वयं प्रमाण है इसी प्रकार वेद भी अपनी प्राचीनता का स्वयं प्रमाण नहीं, अपितु समस्त ऋषिगण भी ऐसा ही मानते चले आए हैं कि वेद आर्यों का प्राचीन धर्म ग्रन्थ है।

यह आर्य ही थे जो विश्व पर छाए हुए थे; अर्जुन का डंका विश्व में बज रहा था, प्रमाण के लिये वे आर्य ही थे जो मुकुट बांध कर अमरीका से उलोपी को विवाह करके लाए थे। वे आर्य ही थे जो कन्धार से गान्धारी को विवाह करके लाए थे। आर्यों के परस्पर के द्वेष तथा भाई-भाइयों के महाभारत के युद्ध ने आर्यों का सर्वनाश कर दिया जिसके फलस्वरूप वेद के विरुद्ध बुद्धि विपरीत और विश्व को भूल-भुलैंया के चक्कर में डालने वाले, जिनका वास्तविकता के साथ तनिक भी सम्बन्ध नहीं है सम्प्रदाय उत्पन्न हुए। जब भी मनुष्य में विद्या तथा बुद्धि के अनुसार सत्यासत्य के निर्णय का विचार उत्पन्न होगा तो फिर ये बुद्धि तथा विद्या के विपरीत समस्त सम्प्रदाय सूर्य की विद्यमानता में अन्धकार की भाँति स्वयमेव नष्ट हो जाएंगे। वैसे भी जब संसार के लोग वेद के सिद्धान्तों की ओर अपना ध्यान करेंगे तो फिर उनको पता लगेगा कि सत्य क्या है और असत्य क्या है? यह भूल-भुलैंया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तभी तक है जब तक विचार की शक्ति उत्पन्न नहीं हुई।

जब सूझ और विचार की शक्ति उत्पन्न हो जाएगी फिर यह जो गुरुडम और मनुष्य पूजा जारी है, यह नहीं रह सकती। यह मनुष्य-पूजा ऐसी बीमारी है जिससे मनुष्य की दिमागी तथा आध्यात्मिक शक्ति मारी जाती है। बुद्धि तथा विद्या पर ताला लगा देती है। सोच-विचार के समस्त द्वार बन्द कर देती है। यह अन्धी होती है, अपने आपको गलत समझ बैठती है, सच्चाई से जिसका कोई सम्बन्ध नहीं। जैन-मत के प्राचीन होने का तो प्रश्न ही क्या जैन मत के सिद्धान्तों और अन्य रूप रेखा का वर्णन तो रामायण तथा महाभारत में भी नहीं है। इसके विपरीत जैन शास्त्रों में रामायण और महाभारत के वर्णन विस्तार सहित भरे पड़े हैं।

ऐसी दशा में कौन बुद्धिमान होगा जो जैन मत को प्राचीन मत मानने के लिए तैयार होगा।

वस्तुतः वेद का ही धर्म प्राचीन धर्म है। वेद के धर्म को ग्रहण करके अपने आपको प्राचीन मानने में गर्व अनुभव करो और यश के भागी बनो, यही उचित है।

जैन मत की आस्तिकता

जैन मत आस्तिक मत है। उपाध्याय जी ने अपनी घोषणा में तीन प्रमाण दिए हैं :—

१. व्याकरण अष्टाध्यायी में ४-४-६० सूत्र के आधार पर, जो पुनर्जन्म को और नरक तथा स्वर्ग को मानते हैं वे आस्तिक हैं।

२. जैन मत की ईश्वर के विषय में अपनी ही परिभाषा है। जो जीव राग-द्वेष से पृथक् हो जाता है, वह वीतराग हो जाता है, जैन मत उसी को परमात्मा मानता है।

३. जैन मत को जो नास्तिक कहा गया है, उसका कारण यह है कि जब ब्राह्मणादि सम्प्रदायों ने यज्ञों में पशु-वध के समर्थन में ब्राह्मण लोग वेद की आज्ञा कहा करते थे, तब जैनमत की ओर से पशु-वध के विरुद्ध आवाज उठाई गई और वेद को भी अप्रामाणिक ठहराया गया।

जब ब्राह्मणादि सम्प्रदायों की ओर से जैन मत के तर्कों का कोई उत्तर न बन सका, तो फिर मनुस्मृति का यह वाक्य लेकर "नास्तिको वेद निन्दकः" का शोर मचाना शुरू किया जो ब्राह्मण इत्यादि सम्प्रदायों का एक दुर्बलता का परिचायक था वरना और कोई विशेष कारण नहीं था जो जैन मत को नास्तिक मत कहा जाता।

उपाध्याय जी ने "जैन मत आस्तिक मत है"—इसके समर्थन में तीन कारण दिये हैं, अब उन पर विचार करना है।

१. व्याकरण की दृष्टि से जो पुनर्जन्म मानता है, वह आस्तिक है व्याकरण शास्त्र के लेखक महर्षि पाणिनि हैं जैसा कि ऋषि दयानन्द जी ने अपने मन्तव्य में लिखा है। ब्रह्मा से जैमिनी मुनि पर्यन्त जो ऋषियों का मन्तव्य है वही मेरा मन्तव्य है। ऋषियों का जो धर्म होता है वह एक ही होता है। सब ऋषियों का इस विषय में एक ही मत है कि ईश्वर ही सृष्टि का कर्त्ता है और कर्मों का फलदाता है ऋषि पाणिनि यह जानते थे कि सर्व व्यापक ईश्वर को स्वीकार किए बिना कर्मफल का परिणाम निकल ही नहीं सकता। इसलिए पाणिनि ने ठीक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
ही लिखा है कि जो पुनर्जन्म को मानेगा उसके लिए सर्व व्यापक ईश्वर का मानना आवश्यक है। यदि जैन मत ऐसे विशेषणों वाले ईश्वर को मानता है फिर तो आस्तिक कहलाने के योग्य हैं। यदि आप ऐसे विशेषणों वाले ईश्वर को नहीं मानते तो फिर आप आस्तिक कैसे कहला सकते हैं? जब यह तथ्य है कि कर्म जड़ है और जीव अल्पज्ञ है। जहां जड़ता और अल्पज्ञानता साथ होगी वहां न्याय के अनुसार परिणाम नहीं निकल सकता। जब कर्म फल का परिणाम न्याय के अनुसार न हो फिर पुनर्जन्म का मानना न मानना मिथ्या ठहरता है। जैन भाइयों का ऐसा कहना कि हम पुनर्जन्म को मानते हैं, केवल घोषणा कर देने से कोई बात सिद्ध नहीं होती। यदि कोई किसी पर अभियोग करे कि मैंने इनसे एक लाख रुपया लेना है तो अभियोग करने वाले की स्थिति देखी जाती है और लिखित प्रमाण आदि देखे जाते हैं। तत्पश्चात् अभियोग को सुना जाएगा। यदि अभियोगी कहे कि लिखित अथवा प्रमाण कोई नहीं, मगर मैंने लेना है तो उस अभियोग को नहीं सुना जाता। मनमाना काल्पनिक जीव से ईश्वर स्वीकार किया हुआ तो ईश्वर नहीं हो सकता। आजकल के राजाओं नवाबों इत्यादि के उपनाम अवश्य हैं परन्तु राजा-महाराजाओं की शक्ति पास नहीं हैं। भला आप ही बतलाइए ऐसे राजाओं को कोई राजा महाराजा मानने के लिए तैयार होगा?

जैसे बिना देश के नवाबों की भांति वीतराग ईश्वरों को अपने विचार में मान रखा है। ऐसे बेकार ईश्वर को मानने से तो आप आस्तिक नहीं बन सकते। यदि आपने यथार्थ अर्थों में आस्तिक कहलाना है तो वेद का माना हुआ ईश्वर जो सर्वव्यापक है, सर्वशक्तिमान है, जो कभी नस-नाड़ी के बन्धन में नहीं आता और न ही कभी जन्म लेता है, जो ऐसे विशेषणों वाला ईश्वर है जो यथार्थ अर्थों में सब के कर्मों का फलदाता है। जिस के न्याय में कभी अन्तर नहीं पड़ता इन विशेषणों वाले ईश्वर को मान कर यज्ञ के भागी बनो। वैसे जब तक आधार भूत कमजोरी दूर नहीं होगी तब तक आस्तिक नहीं बन सकते।

आपने जो अष्टाध्यायी का सूत्र प्रमाण रूप में उपस्थित किया है मैंने अष्टाध्यायी के विद्वान् से इसके अर्थ पूछे हैं। विद्वान् ने यह सूत्र भी लिख कर दिया और साथ ही अर्थ भी बतलाए हैं। सूत्र इस प्रकार है।

"अस्ति मास्ति दिष्ट मति" अर्थात् जो बुद्धिमान न हों और बुद्धि न रखता हो वह नास्तिक है। इस सूत्र में पुनर्जन्म मानने या न मानने का वर्णन तक भी नहीं। अतः यह युक्ति मिथ्या है जो प्रमाणरूप में आपने पुनर्जन्म के लिए दी।

मुसलमान और ईसाई इत्यादि पुनर्जन्म को नहीं मानते फिर भी उनको कोई नास्तिक नहीं कहता और न ही उन्होंने कभी यह बतलाने का प्रयास किया है कि हम नास्तिक नहीं आस्तिक हैं। फिर क्या कारण है जो जैनमत की ओर से पुनः-पुनः सिद्ध करने का प्रयास किया जाता है कि जै मत नास्तिक नहीं अपितु आस्तिक है।

जैन मत के साधु महात्मा कथा करने के लिए प्रायः आते जाते रहते हैं जिसमें उनका यह सिद्ध करने का प्रयत्न होता है कि जैन मत नास्तिक नहीं अपितु आस्तिक है। जैन मत तो बार-बार कहता है कि हम पक्के आस्तिक हैं नास्तिक नहीं हैं। दूसरे यह कहते हैं कि जैन मत कोरा नास्तिक है।

जैन मत और आस्तिकता सर्वथा भिन्न वस्तुएं हैं। जैन मत आस्तिक होने की घोषणा करता है। दूसरे अपनी घोषणा में जैन मत को नास्तिक कहते हैं। एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिज्ञासु के लिए यह कठिनाई उत्पन्न हो जाती है कि वह किसको सत्य समझे ?

आओ ! इस विषय पर गम्भीरता से विचार करें कि सत्य क्या है और असत्य क्या ? ताकि पाठकगण किसी परिणाम पर पहुंच सकें।

किसी के द्वारा घोषणा कर देने से दूसरे की घोषणा से इन्कार करना कोई अर्थ नहीं रखता, जब तक जो सत्य है उस पर विचार न कर लिया जाए। जिस किसी के जो मौलिक सिद्धान्त हैं। अब हम जैन मत वालों से पूछते हैं कि आप अनादि पदार्थ कितने मानते हैं ? वे आप को उत्तर देंगे। पदार्थ। अल्पज्ञ जीव प्रकृति। अब इससे यह सिद्ध हुआ कि जैनमत अनादि, नित्य ईश्वर को नहीं मानता। जब जन-मत के मौलिक सिद्धान्तों में ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं, और यह बार-बार ईश्वर का नाम लेना केवल मात्र उसी लोकोक्ति के अनुसार है कि 'हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और' समझने चाहियें। जब मौलिक सिद्धान्तों में ईश्वर का चिह्न तक नहीं हैं। क्या ईश्वर कहीं अन्य स्थान से आएगा अथवा ईश्वर बनाया जायगा ? ईश्वर का मानना केवल वर्तमान सांसारिक तौर पर है।

क्योंकि ईश्वर के अस्तित्व से इंकार करना कृतघ्नता में आ जाता है। इस दोष से बचने के लिए रट लगाए जाते हैं कि हम ईश्वर को मानते हैं। वस्तुतः जैन मत ईश्वर के अस्तित्व का सर्वथा विरोधी है। जैन शास्त्रों में ईश्वरादि शब्द है ही नहीं। जीव से सिद्ध बुद्ध तीर्थङ्कर इत्यादि जो शब्द जैन शास्त्रों में हैं यह ईश्वर परमात्मा शब्द से सम्बन्ध नहीं रखते। वे सब जीव से सम्बन्ध रखते हैं। जब जन मत केवल जीव को चेतन शक्ति मानता है, इसके अतिरिक्त किसी अन्य महान् शक्ति को स्वीकार नहीं करता। फिर ईश्वर का मानना कहाँ से आ गया ? यही कारण है कि सिद्धान्त रूप से तो जैनमत कोरा नास्तिक है। यह कहना कि जैनमत की परिभाषा में जो जीव राग-द्वेष से पृथक् हो जाता है, उसको ईश्वर मानते हैं, यह एक व्यर्थ विचार है जिसका कुछ भी महत्त्व नहीं। यह जो परिभाषा शब्द है क्या कोई अलादीन का चिराग है ? जो कहो वही हो जाएगा।

यदि कोई अपनी परिभाषा में पीतल को सोना मानने लग जावे तो केवल मानने से वह सोना हो जायेगा ? कभी नहीं। कुछ लोग अपने लड़कों के नाम ईश्वर परमात्मा रख छोड़ते हैं। क्या केवल काल्पनिक किसी का नाम रख लेने से उसमें वे विशेषण आ जाते हैं ? तो इसका स्पष्ट उत्तर यही होगा कि नहीं आ सकता। फिर मानने से क्या लाभ ? अनादि विशेषण जिसके होते हैं वे कभी भी परिवर्तन नहीं हो सकते। जीव चाहे कितने ही उत्तम पद को क्यों न पहुँच जाए उसमें जो अनादि काल से अल्पज्ञता की विशेषता है वह कभी भी पृथक् नहीं हो सकती। जब जीव से अल्पज्ञता दूर हो नहीं सकती फिर उसको अपनी परिभाषा में ईश्वर समझना व्यर्थ, है जिसका कोई लाभ नहीं अपितु दूसरों की दृष्टि में स्थिति कमजोर होती है। पौराणिकों ने अपनी परिभाषा में मिट्टी के बुतों को परमात्मा समझ रखा है। उन बुतों को ईश्वर समझ कर नहलाते-धुलाते हैं और धूप दीप देते हैं।

ईसाइयों ने अपनी परिभाषा में ईसा को खुदा का बेटा समझ रखा है। आपकी परिभाषा के अनुसार तो यह सिद्ध हुआ है कि कोई अपनी परिभाषा के अनुसार कुछ क्यों न समझ ले वही हो जाता है। कितना गलत तर्क है ?

कुछ साधु जो नंगों के वेश में फिरते हैं, आकर कहते हैं कि गुरु की कृपा से ऐसी जड़ी-बूटियां, ऐसे मन्त्र हैं कि हम तांवा, पीतल, चांदी इत्यादि का सोना बना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देते हैं। कुछ अज्ञानी लोग उनके हाथों लुट जाते हैं। हमने अनेकों बार ऐसे लोगों से कहा है कि ये लोग तो साधुओं के वेश में ठग हैं। सोना इत्यादि कुछ नहीं बनता। ये अपनी चालाकी से ठग कर ले जाते हैं, यथा आप एक प्याला पारे का भर लें। उस पारे में आप अपना ताँबा, पीतल इत्यादि कुछ भी डाल दें ये सब धातुएं पारे पर तैर जाएंगी किन्तु सोना जब पारे में डाला जाएगा तो वह तो डूब जाएगा। क्योंकि प्राकृतिक वजन सोने का पारे से भारी है, इसलिए वह डूब गया। अब जो साधु अन्य धातुओं से सोना बनाने की घोषणा करते हैं। सोने का जो भारीपन है वह किसी अन्य धातु में नहीं है। वह भारीपन कहां से पूरा करेंगे ? जब वजन पूरा नहीं होगा वह सोना हो ही नहीं सकता।

अब यही उदाहरण जैन मत पर लागू कर लें। जैन मत जो कहता है कि जीव ही ईश्वर हो जाता है। जब जीव में वह ईश्वर वाले विशेषण हैं ही नहीं फिर ईश्वर कैसे कहा जा सकता है ? जीव चाहे कितने ही उच्च पद को प्राप्त क्यों न हो जावे, जीव में जो अल्पज्ञता, सीमित दायरे में रहना जो अनादि काल से विशेषण स्थित हैं, ये न कभी दूर हुए हैं और न कभी होंगे। हठ तथा जिद को छोड़ कर गम्भीरता पूर्वक विचार करें ताकि झमेले से बच सकें। तीसरा तर्क जो यह है "नास्तिकोवेद निन्दकः" ब्राह्मणादि सम्प्रदायों की कमजोरी को तर्क बतलाते हैं। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो इतना दोष ब्राह्मणादि सम्प्रदायों का स्वयं नहीं जितना कि जैनमत का स्वयं का है।

विरोधी नाना प्रकार के दोष लगाता है तो क्या यह अभिप्राय है कि हम क्रोध में आकर बुद्धि को तिलांजलि दे दें। विरोध के भावों में आकर अशुद्ध, अनाप-शनाप जो हृदय में आया कह दिया। ऐसी बातें विरोध आने पर हानि पहुँचाती हैं। जहां तक घटनाओं के आधार पर देखा जाए तो इस विरोध की भावना से वेद के विरुद्ध अपना मत देना जैन मत के लिए नास्तिक होने का कारण सिद्ध हुआ। यदि उस समय अत्यन्त सावधानी से तथा ध्यानपूर्वक विचार कर जो बात वस्तुतः जैसी थी उस पर आचरण करते तो फिर यह नास्तिक का जो दोष इनके गले मढ़ा गया है, इससे बच जाते।

जब ब्राह्मण इत्यादि, यज्ञों, में 'पशुवध' वेद की आज्ञा बताते थे तब सर्व-प्रथम आप लोगों का यह कर्त्तव्य था कि आप वेदों को पढ़ते कि क्या वस्तुतः वेद ऐसी आज्ञा देता है कि यज्ञों में पशुवलि देनी चाहिए। आप लोगों ने न वेद देखे, न देखने का प्रयास किया अपनी अज्ञानता के कारण वेद के विरुद्ध ही कहना प्रारम्भ कर दिया, जो बुद्धि शून्यता का प्रबल प्रमाण है।

यही प्रश्न ऋषि दयानन्द के भी समक्ष आया। मूर्ति-पूजा, मुर्दों का श्राद्ध, देवी-देवताओं के नाम पर पशुबलि इत्यादि किस-किस का नाम लिया जावे। समस्त विश्व की मूर्खता को वेद की आज्ञा के नाम से पुकारा गया। यदि ऋषि दयानन्द जी भी विरोध की भावना से प्रेरित होकर सत्य-असत्य का निर्णय किये बिना ही वेद के विरुद्ध अपनी आवाज उठाते तो जो नास्तिकपन का दोष आप लोगों के गले मढ़ा गया है, ऋषि दयानन्द भी इस दोष से बच नहीं सकते थे।

ऋषि दयानन्द दूरदर्शी महापुरुष थे। सत्यता को दृष्टि में रखा हुआ था। हठ तथा दुराग्रह उनके पास भी नहीं फटकता था। वे सत्यता के पुजारी थे। अत्यन्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सावधानी से इस परिणाम पर पहुँचे। वस्तुतः दोष इन पोप-पन्थियों का है जो कि वेद के नाम पर अपनी ओछी हरकतों का परिचय दे रहे हैं।

जब वेद कहते ही उसे हैं जो सर्वथा विद्या तथा बुद्धि के अनुसार हो और कोई बात भी उसमें बुद्धि के विपरीत न हो। जब वेद इस प्रकार से पवित्र हैं फिर इन में ऐसी अविद्या की बातें कैसे हो सकती हैं जो बुद्धि तथा विद्या के विरुद्ध हों और हानि पहुँचाने वाली हों। वेद के बजाए विरोधियों ने जो सिद्धांत निकाले हैं यह जाहिल और अविद्या युक्त लोगों की समझ का नतीजा है। ऋषि दयानन्द जी ने वेद की खड्ग लेकर विश्व के अन्ध-विश्वास पर आक्रमण किया और सबको चकना-चूर करके रख दिया। पोप पन्थियों तथा अन्य सम्प्रदायो की ओर से कोलाहल मचना प्रारम्भ हुआ। यह ईसाइयों का एजेण्ट है, धर्म-कर्म नष्ट करने आया है, नास्तिक है ऐसे नास्तिक के दर्शन करना और बात सुनना महापाप है।

यहां तक ही बस नहीं थी, तलवारों के वार, जहर का पिलाना, इन के अतिरिक्त मुकदमो की धमकी आदि, ऐसा कौनसा जघन्य कार्य था जो ऋषि के विरुद्ध विरोधियों ने प्रयोग न किया हो। वाह रे ऋषि दयानन्द, किसी की भी परवाह न करता हुआ वेद की सत्यता के बल पर सीना तान कर अकेला ही दो अरब दुनियां के सामने मुकाबले में डट गया और ललकार कर सिंहनाद किया कि यह योगियों का निश्चित सिद्धाँत है कि अन्धकार के समूह पर सूर्य अकेला ही विजय प्राप्त करता है। विश्व को चैलेंज कर दिया कि जिस किसी में बल है वह वेद की सच्चाइयों के सामने आए अपने माने हुए सिद्धांत उपस्थित करे। किसी में साहस न हुआ कि वह वेद की सच्चाइयों के सामने आकर मुकाबला करे। इसलिए इन भाइयों का बिना वेद पढ़े यह दोष लगाना कि वेद में पशु-वध की आज्ञा है कोई अर्थ नहीं रखता।

परमात्मा की कृपा थी, बुद्धि उनके पास थी। सत्यता परखने की शक्ति उपस्थित थी। सब विरोधियों को पछाड़ते हुए पार हो गए। जो नास्तिक कहने वाले थे आज सब से बड़ा आस्तिक कहकर फूल बरसा रहे हैं, यह है सच्चाई की खोज का परिणाम। सच्चाई को जब भी ग्रहण करे यह उसका सौभाग्य है। जैसे मानवीय आंखों के लिए परमात्मा ने सूर्य प्रदान किया है वैसे ही आध्यात्मिकता के लिये वेद ज्ञान दिया है जोकि आध्यात्मिक प्रकाश है।

वास्तविक धर्म तो वेद ही है जिस के लोप होने के कारण नास्तिक सम्प्रदाय उत्पन्न हुए। ऋषि दयानन्द जी ने अपने तप और त्याग से फिर से वेद का प्रकाश किया, जिस की रोशनी प्रत्येक हृदय तथा मस्तिष्क से टकरा रही है। जो भी उसे जिस समय ग्रहण करेगा वह सौभाग्यशाली होगा और यश का भागी बनेगा।

सृष्टि का कर्त्ता ईश्वर या अनादि

जैनियों ने सृष्टि-कर्त्ता पर कुछ शंकाएं उठाई हैं जिनका समाधान आगे चल कर किया जाएगा। जैनमत सृष्टि को अनादि मानता है। पहले इस पर विचार करेंगे कि सृष्टि अनादि है भी या कि नहीं ?

सृष्टि अनादि है जैनमत की ओर से जो इसके समर्थन में युक्ति दी जाती है, वह एक ही है। जैसे ईश्वर स्वयं बिना किसी के निर्माण किये अपना अनादिपन स्थिर रखे हुए है सृष्टि भी बिना किसी के निर्माण किए अपना अनादिपन स्थिर रख सकती है। जैनमत के पास यही एक व्यर्थ की दलील है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपना अनेक बार का अनुभव है और यह एक तथ्य है जब किसी जैन मत वाले से सृष्टि अनादि के विषय में प्रश्न किया। सष्टि अनादि के विपय में वही घडा-घड़ाया प्रश्न का उत्तर कि आप बत ओ कि परमात्मा को किसने बनाया ? सदैव यही उत्तर मिलेगा।

पाठक वृन्द, यह तर्क जो जैनमत की ओर से दिया गया है यह वास्तविकता के सर्वथा विरुद्ध और अनुचित है, जिसमें सच्चाई का लेशमात्र भी नहीं है।

अनादि सृष्टि के समर्थन में जैन मत की ओर से अनादि ईश्वर का तर्क दिया जाता है। अब प्रश्न यह है वह ईश्वर कहाँ है ? जिसको युक्ति के रूप में जैन मत पेश करता है, ताकि पता लगे अनन्त जीवों में से कोई एक जीव न जाने कितने जन्मों के पश्चात् राग-द्वेष से मुक्त होकर वीतराग बनता है। जैनमत जिस को अपनी परिभाषा में ईश्वर मानता है, यह ईश्वर तो जैनमत का स्वीकार किया हुआ अनादि सृष्टि के समर्थन में पूर्ण नहीं उतरता।

क्योंकि सृष्टि पहले विद्यमान थी। इस सृष्टि में प्रत्येक शुभ कर्म करके इस स्थान पर पहुंचता जो जैनमत का काल्पनिक है ईश्वर माना हुआ है वह तो बेकार सिद्ध हुआ।

इसके अतिरिक्त जिस ईश्वर को आर्य मानते हैं वह सर्व-शक्तिमान, सर्वव्यापक जो नस-नाड़ी के बन्धन में कभी नहीं आता, और न कभी जन्म लेता है और न ही कभी मरता है जोकि नित्य है।

जिन विशेषणों वाले ईश्वर को आर्य मानते हैं जैनमत ऐसे विशेषणों वाले ईश्वर की कल्पना ही नहीं करता अर्थात् जैनमत यह मानता भी नहीं कि ऐसे विशेषणों वाला कोई ईश्वर हो सकता है। अब पाठक वृन्द स्वयं ही उस युक्ति पर विचार करें जो जैनमत की ओर से अनादि सृष्टि के समर्थन में दी जाती है। जैनमत जिस ईश्वर को अपने हृदय में जमाये बैठा है। ईश्वर बनने से पहले सृष्टि विद्यमान थी। जिस ईश्वर को आर्य मानते हैं, वह पहले है। कारण से कार्य रूप में सृष्टि बाद में आती है। यह युक्ति दोनों ही पहलुओं से सारहीन है।

युक्ति वह होनी चाहिये जिसमें कुछ वजन हो वैसे ही किसी को उल्टे रास्ते पर डालना कोई अच्छी बात नहीं है। सृष्टि अनादि होने का तो प्रश्न ही क्या ? ये लोग तो वैसे ही अपनी जिद और हठ के कारण रट लगाये जाते हैं कि सृष्टि अनादि है किसी भी युक्ति एवं तर्क से सृष्टि को अनादि सिद्ध नहीं कर सकते इसके विपरीत अनेक प्रवल युक्ति से सिद्ध होता है कि सृष्टि का कर्त्ता आवश्यकहै। यह सृष्टि जड़ परमाणुओं का एक समूह है जिसकी गणना नहीं हो सकती। सृष्टि अपनी शकल रखती है, शकल युक्ति से ही बनती है। यदि कोई उसे किसी भी समय ज्ञान के अनुसार नहीं बनाये, शकल नहीं बन सकती। आश्चर्य की बात तो यह है कि कोई कारण तो हो, कारण से जो कार्य शकल बनी है उसको अनादि मानना इससे अधिक अविद्या की और क्या बात हो सकती है ? जैसे प्रत्येक जानता है कि लोहा अपने आप नहीं हिलता घड़ी साज ने लोहे के पुर्जे बना कर घड़ी बना दी और चाबी देकर उसे चला दिया। बेसमझे के विचार में तो घड़ी अपने स्वभाव के अनुसार चल रही है लेकिन बुद्धिमान और विद्वान जानता है कि घड़ी में जो हरकत है वह घड़ीसाज के द्वारा है। जितनी देर तक चाबी का प्रभाव रहेगा तभी तक घड़ी चलती रहेगी। जब चाबी देनी बन्द कर देगा वही हरकत के बिना लोहे की भांति हो जाएगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐसे ही जिस प्रकार लोक इत्यादि हैं उसी प्रकार परमात्मा द्वारा निर्माण की गई घड़ियाँ हैं जो उस परमात्मा के नियम के अनुसार चल रही हैं व्यक्तिगत रूप से किसी भी लोक में चलने की शक्ति नहीं है। जिस प्रकार उनका नियम है उसी प्रकार चल रहे हैं।

जो लोग यह कहते हैं कि इस सृष्टि का कोई बनाने वाला नहीं है, उनके लिये एक ऐसे जीवित प्रमाण से इन्कार करना मानवता से दूर है। जब सूर्य पूरी रोशनी दे रहा हो कोई अपनी अविद्या का प्रमाण देता हुआ यह कहे कि सूर्य है ही नहीं। क्या कभी ऐसे लोगों से आशा हो सकती है कि औचित्य से कुछ समझने का प्रयास करेगा ?

अधिक खेद तो ऐसे जैन साधुओं पर है जो घर-बार इत्यादि छोड़कर साधु तो हो गए परन्तु सत्य के निर्णय की शक्ति नहीं रखते कि जिससे सच्चाई को ग्रहण किया जा सके। केवल गुरु और शिष्य के ही चक्कर में ही बेकार आयु गंवा रहे हैं। यह गुरु और शिष्य की ऐसी बीमारी है जो इसम एक बार फंस गया फिर छूटना मुश्किल हो जाता है। जब यह सूर्य की भांति स्पष्ट है कि प्रकृति जड़ है और जीव अल्पज्ञ है, इतने बड़े कार्य को शिखर पर नहीं पहुंचा सकता।

अब आप ही बताओ यदि इस सृष्टि का कर्त्ता ईश्वर ही न माना जावे तो फिर और कौन माना जावे। यह इतना बड़ा जो प्रबन्ध चल रहा है क्या यह अटकल पच्चू ही है ? यदि इस का प्रबन्धक न होता तो फिर यह विधान के अनुसार जो कार्य चल रहा है वह नहीं चल सकता था। क्या कभी सूर्य उत्तर या दक्षिण से चढ़ा है ? यदि प्रबन्ध किसी के कन्ट्रोल में न होता फिर तो अव्यवस्था का उत्पन्न होना आवश्यक था क्योंकि यह जो समस्त कार्य चल रहा है एक शक्तिशाली शक्ति के आधीन चल रहा है इसलिए इसमें गड़बड उत्पन्न होने का प्रश्न ही नहीं। प्रबन्धक का चित्र इस सुन्दरता के साथ सामने है कि उसकी वास्तविकता से इन्कार करना ऐसा है जैसे सूर्य को देखते हुए उसके अस्तित्व से इन्कार करना। जैसे आंखें होते हुए नहीं देख सकते और कान होते हुए भी नहीं सुन सकते। ऐसे लोगों के लिए मेरी प्रभु के चरणों में प्रार्थना है कि ऐ मेरे परमात्मन् ! इनको मेधा बुद्धि प्रदान करो, जिससे ये सत्य और असत्य को समझकर सत्य को ग्रहण कर सकें और असत्य को छोड़ दें।

जब तक लोग अन्धकार में थे और यह पता नहीं था कि सत्य क्या और असत्य क्या है ? उस समय तक यदि मनुष्य अन्धकार में रहे तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। जब कि ऋषि दयानन्द ने संसार के समस्त सम्प्रदायों को निमन्त्रण किया और डंके की चोट से कहा कि आओ विश्व के सम्प्रदाय वालो ! यदि सच्चाई की इच्छा है तो आओ वेद की शरण में जो कि वास्तविक ईश्वरीय ज्ञान है जैसे कि सूर्य का प्रकाश भौतिक आंखों के लिए है वैसे ही सृष्टि के आदि में मनुष्य के लिए ज्ञान की आवश्यकता है इस कारण मनुष्य के लिए दिया परमात्मा ने वेद ज्ञान। जिस में हर प्रकार का ज्ञान हर प्रकार का विज्ञान उपस्थित है।

इसमें मनुष्य के लिए उचित रास्ता, उचित लक्ष्य और उचित निर्देश दिए गए हैं। ऋषि दयानन्द जी ने घोषणा की कि केवल सत्यवचन महाराज की रट न लगाते जाओ जैसा कि आज कल के सम्प्रदायों में है। इस गुरुडम ने पीरी तथा मुरीदी ने, आत्मिक तथा बौद्धिक शक्ति का नाश कर दिया। कहीं राधास्वामी, कहीं ब्रह्मकुमारी इत्यादि बुद्धि विपरीत सम्प्रदायों ने दुनियां को चक्कर में डालने का ठेका ले रखा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। सत्यता से इनका दूर का सम्बन्ध नहीं। वास्तविक सच्चाई तो वेद ही में है। वेद ही एक सच्चाई है इस घोषणा को दुनियाँ के समक्ष उपस्थित किया।

आओ दुनियां के लोगो ! वेद की सच्चाई को विज्ञान के आधार पर दर्शन के आधार पर हर प्रकार से विद्या तथा बुद्धि की कसौटी पर परखो। प्रकृति के नियमों के अनुसार परीक्षण करो जिस प्रकार चाहो अपना सन्तोष कर लो। यह घोषणा वेद के सिद्धान्तों के आधार पर की गई। कोई माई का लाल आज तक खण्डन नहीं कर सका।

इससे बढ़ कर और वेद की सत्यता का क्या प्रमाण हो सकता है ? सृष्टि का अनादित्व न किसी युक्ति तथा न किसी प्रमाण से सिद्ध हो सकता है। इसके विपरीत यह तो सिद्ध हो सकता है कि सृष्टि का कर्त्ता कोई अवश्य है जिसकी प्रशंसा संसार करता है। यदि वह अपने विशेषणों को प्रयोग में लाकर आचरण में लाता है तो यह वस्तुत: प्राकृतिक है। जैसे आंख की विशेषता देखना है। यदि आंख से देखने का काम न लिया जावे तो वह विशेषण व्यर्थ सिद्ध होगा। जबकि परमात्मा चेतन है, सर्व-शक्तिमान् है, ज्ञान का भण्डार है जिसमें इतने विशेषण हैं कि क्या परमात्मा अपने विशेषणों को प्रयोग में न लावें ? क्या प्रयोग में लाना पाप में सम्मिलित है ? क्या परमात्मा भी मिट्टी तथा पत्थरों के बुत्तों की भांति कोई व्यर्थ की वस्तु है कि करे कुछ भी नहीं ?

वस्तुत: बात यह है कि जैनमत जैसे बेकार ईश्वर का अस्तित्व अपने दिमाग में जमा रखता है, वैसे ही यह चाहते हैं दूसरे भी अपने माने हुये ईश्वर को ऐसा ही मानें जो कुछ न करे। नाम ईश्वर, परमात्मा अवश्य हो। श्रीमान् जी, ऐसे बेकार ईश्वर का मानना और न मानना बराबर है। किसी का कोई जब सम्मान करता है उसकी अनेक कृपाएं हमारे ऊपर हैं जिसमें किसी तर्क अथवा युक्ति की आवश्यकता नहीं।

सूर्य की रोशनी, चांद की ठण्डक, वायु इत्यादि के पृथक-पृथक लाभ का वर्णन किया जाए तो उनकी गणना ही नहीं होती। जिस ईश्वर ने इतनी कृपाएं की हों जिसकी कृपा के बिना एक सैकिण्ड भी जीवित नहीं रह सकते। क्या हम इतने कृतघ्न हैं कि हम ईश्वर की कृपाओं का धन्यवाद भी नहीं करना चाहते और यह माने भी नहीं कि ऐसे विशेषणों वाला भी कोई ईश्वर है इससे अधिक पाप क्या हो सकता है ? जो उस परमात्मा के भी अस्तित्व से ही इन्कार करना है। ये समस्त ईश्वर की कृपाएं हैं ऐसा कौन-सा व्यक्ति होगा जो ईश्वर के अस्तित्व से इन्कार करेगा।

जहां चेतना और ज्ञान होगा वहां हरकत का होना आवश्यक है। जब यही सिद्ध है कि जगत् का कारण जड़ है। जीव अपने विशेषणों में अल्पज्ञ है, संसार की महानता का कुछ कहा नहीं जा सकता। यह सूर्य ही इस सारी पृथ्वी से लाखों गुना बड़ा और करोड़ों कोस दूर है। इसके अतिरिक्त जो भी हैं उनकी महानता का कुछ भी अनुमान नहीं लगाया जा सकता। इतना महान् जगत् जिसको सर्व व्यापक पर-मात्मा ने रचा है और हर प्रकार से नियन्त्रण में रखा हुआ है। इस प्रत्यक्ष प्रमाणों के होते हुए भी ईश्वर के अस्तित्व से इन्कार करना समझो उनकी बुद्धि का विनाश हो चुका है।

सृष्टिकर्त्ता ईश्वर पर कुछ शंकाएं और उनका समाधान

१. शंका—परमात्मा निराकार है वह हाथ इत्यादि कुछ नहीं रखता। कोई वस्तु बिना हाथ के कैसे बन सकती है ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाधानः—बड़ का एक बीज है कोई हाथ नहीं रखता। इतना बड़ा विशाल वृक्ष बन जाता है। शरीर के अन्दर घाव हो जाता है उसके भरने के लिये रक्त आता है उसे कौन से हाथ खींच कर लाते हैं? जीवित तथा प्रत्यक्ष प्रमाण आपके और हमारे अन्दर विद्यमान हैं किंचित् ध्यान से विचारें हमारे शरीर के अन्दर जो जीव है कोई हाथ नहीं रखता बिना हाथ के अन्दर से हरकत देकर सारी मशीनरी को चला रहा है। जब जीव शरीर से निकल जाता है तो फिर सारी मशीनरी बेकार हो जाती है। जीव ही बिना हाथ के समस्त कार्य चला रहा है।

जीव एक निश्चित परिधि के अन्दर शारीरिक मशीनरी को चला रहा है कोई हाथ नहीं रखता। भीतरी पदार्थ के हरकत के लिए हाथ आदि होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। प्रकृति के समस्त कार्य बिना हाथ के पूर्ण होते हुए दिखाई दे रहे हैं। हाथ की आवश्यकता वहाँ होती है जो अपने से पृथक् हो। ईश्वर सर्वव्यापक है, प्रकृति तथा जीवन के अन्दर भी विद्यमान है। अतः हाथ से बनाने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।

२. शंका—वीतराग परमात्मा का सृष्टि का निर्माण करना धर्म ही नहीं है। होने पर ही तो माना जा सकता है।

समाधान :—वस्तुतः आपका माना हुआ काल्पनिक वीतराग परमात्मा है, उसका सृष्टि का निर्माण धर्म हो भी कैसे सकता है वीतराग की परिभाषा ही यही है जो मुफलिस हो, मुहताज हो वह सृष्टि बना ही कैसे सकता है। सृष्टि-निर्माण वीतराग का धर्म नहीं है।

सृष्टि ईश्वर ने बनाई है जिसके पास सब ऐश्वर्य विद्यमान हैं जो किसी की सहायता नहीं चाहता। यह सृष्टि उस परमात्मा की बनाई हुई है जिसका सृष्टि का निर्माण करना धर्म है।

शंका :—आर्य बन्धु यह मानते हैं कि ईश्वर ने इच्छा की और जगत् बन गया। जब परमात्मा का मन ही नहीं है फिर इच्छा कैसे पैदा हो सकती है। जब कि इच्छा मन में ही पैदा होती है।

समाधान :—आर्य बन्धु यह नहीं मानते हैं कि परमात्मा ने इच्छा की और जगत् बन गया। इच्छा वहाँ उत्पन्न होती है जहाँ कमी हो। जब परमात्मा को समस्त वस्तुएं प्राप्त हैं उनमें इच्छा है ही नहीं तो फिर मन के होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। जैसा कि वेद में स्पष्ट आता है "अकामा धीरोऽमृतः स्वयम्भूः रसेन तृप्तो न कुतश्चनीनः·········"।

अर्थात् वह परमात्मा कामना रहित है, धीर है, अविनाशी है, रसों से तृप्त है और उसमें कोई भी न्यूनता नहीं है।

इच्छा अल्पज्ञ जीव में उत्पन्न होती है क्योंकि जीव के पास जिस वस्तु की न्यूनता होगी वह उस वस्तु की इच्छा करेगा परन्तु परमात्मा के पास किसी पदार्थ की न्यूनता ही नहीं है। अतः परमात्मा में इच्छा उत्पत्ति का प्रश्न ही निराधार है। क्योंकि जैन मत वाले जीव की उन्नत अवस्था को ही वीतराग मानते हैं। वह वीतराग जीव ही है अतः उसमें न्यूनता के कारण इच्छा की उत्पत्ति होती है। वही स्वप्न जैन मत वालों को दूसरों के लिए आते हैं जो कि उनकी गलती का परिणाम है।

शंका :—यदि ईश्वर को संसार के झगड़ों में पड़ने वाला तथा जीवों के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर्मों का फल देने वाला मानेंगे तो संसार में जितने भी अत्याचार होते हैं उन सबका करने वाला ईश्वर ठहरेगा।

समाधान :—ईश्वर के विशेषण न्यायकारी, स्वामी, उत्पत्तिकर्त्ता, खाद्य-पदार्थों का देने वाला इत्यादि है। यदि परमात्मा अपने विशेषणों को प्रयोग में नहीं लाता तो क्या ये विशेषण केवल काल्पनिक माने जाएं ? जैन मत वाले जिस माप दण्ड से अपने आपको नापते हैं दूसरों को भी उसी माप दण्ड से मापने का प्रयास करते हैं। वस्तुतः बात यह है कि जैन मत वालों ने भूल से जिन वीतरागों को ईश्वर समझ रखा है, वह मिथ्या विचार उनके मस्तिष्क में इतना प्रभाव जमा चुका है जो उन्हें सोचने का अवसर ही नहीं लेने देता कि वे सत्यता का निर्णय करें। भला जिन काल्पनिक ईश्वरों को आपने सिद्ध-शिला पर बैठे हुए मान रखा है, परमात्मा ना करे यदि वे सिद्ध शिला से इधर-उधर हो जायें तो संसार खतरे में पड़ जाता होगा। इसके अतिरिक्त उन काल्पनिक ईश्वरों के मानने से लाभ ही क्या ? वह तो न होने के बराबर हैं।

उनकी निस्वत तो आप ऐसा उदाहरण समझ लीजिए। जैसे किसी ने लाखों कमाये हों और फिर उन्हें जमीन में दबा दे और साथ ही यह आदेश भी दे कि इसको कोई कभी भी निकाल कर प्रयोग नहीं कर सकता। भला आप ही बताओ यह बात जिस मस्तिष्क की उपज है क्या कोई उसे सही दिमाग वाला कहेगा ?

श्रीमान् जी, यदि आप थोड़ी देर ठण्डे दिल से विचार करेंगे, निश्चित रूप से आप इस परिणाम पर पहुंचेंगे। संसार की खटपट में ईश्वर का होना इतना ही आवश्यक है जैसे हमारे शरीर में जीव का होना ! जैसे जीव की अनुपस्थिति में हम मुर्दा कहलाते हैं ऐसे ही अगर संसार की खटपट में ईश्वर सम्मिलित न हो फिर संसार नाम की कोई वस्तु नहीं होगी।

मान लो थोड़ी देर के लिए आपकी दलील को मानते हुए ईश्वर के अस्तित्व को संसार की खटपट में सम्मिलित नहीं करते तो कृपया आप सृष्टि क्रम को चला करके दिखाएं, फिर आपकी दलील को मानने में कोई इन्कार नहीं होगा। मगर हम इस मिथ्या घोषणा को कैसे मान लें, जिसमें राई के बराबर भी तो सच्चाई का अंश नहीं है।

यह आपत्ति इतनी पंगु तथा असत्य है जिसका कुछ भी अस्तित्व नहीं है। संसार में जो खटपट हो रही है यह तो ईश्वर की हस्ती का प्रमाण दे रही है। यदि ईश्वर का अस्तित्व संसार की खटपट में सम्मिलित न हो तो फिर संसार में किसी का कोई वजूद ही नहीं होगा। हमारे शरीर के अन्दर जीव है। शरीर में खटपट होती नजर आती है। जब जीव शरीर से पृथक् हो जाता है तो सारी खटपट चौपट हो जाती है। इसी प्रकार संसार में ईश्वर की हस्ती से ही खटपट होती नजर आ रही है। संसार जड़ है, जहाँ जड़ता है वहाँ ज्ञान कहाँ ? संसार की शकल हमारे सामने है, एक तथ्य है यदि आंखें न रखने वाला सूर्य की हस्ती से इन्कार करे तो इसमें उसका दोष है सूर्य की सत्यता में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

जब यह एक तथ्य है कि आकार वाली वस्तु अनादि नहीं होती। आकार बनाने से बनता है। आप निर्माता को तो मानते नहीं कि कोई इस संसार का निर्माता है आपकी इस घोषणा को कौन मान सकता है। जैसे ये तेरह पन्थी साधु मनघड़न्त कहानियां सुनाते हैं और अन्धे श्रद्धालु सत्य वचन महाराज करते रहते हैं। ऐसे लोगों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के लिए एक उदाहरण लागू होता है जो पाठकों के मनोरंजन के लिए लिख रहा हूँ।

किसी कस्बा की मण्डी में साधु जी ने कथा करनी शुरू की। जब पण्डित जी कहते कि ऐसा हो वैसा हो तो सुनने वालों का एक ही उत्तर होता था सत्य वचन महाराज! पण्डित जी जरा समझदार व्यक्ति थे। दिल में विचार आया कि कथा के विषय को समझने से सत्य वचन कहते हैं या इनका तकिया कलाम ही सत्य वचन है। पण्डित जी ने कथा के अतिरिक्त एक काल्पनिक प्रसंग प्रारम्भ कर दिया। पण्डित जी ने कहा कि जब मेरी कथा समाप्त हुई तो इतनी गुड़ की भेलियाँ चढ़ीं कि आकाश तक ढेर लग गया। जहाँ गुड़ होता है वहाँ मक्खियाँ भी आ जाती हैं। जब तुम लोगों ने कमल नेत्र का शोर किया तो मक्खियाँ सब गुड़ की भेलियाँ लेकर उड़ गयीं और मैं देखता का देखता ही रह गया।

श्रोताओं का उत्तर तो वही घड़ा घड़ाया उपस्थित था 'सत्य वचन महाराज'। पण्डित जी ने कथा बन्द कर दी और हाथ जोड़ कर कहा जाओ अपना कारोबार करो। क्यों मेरा समय व्यर्थ गंवाते हो और अपना भी। जब तुम्हें यही पता नहीं कि मक्खियाँ गुड़ की भेली उठा भी सकती हैं। तुम लोगों ने केवलमात्र 'सत्य वचन महाराज' ही कहना सीखा है, अधिक कुछ नहीं।

ऐसे ही अविद्या में पले हुए कुछ लोग अन्धी श्रद्धा के कारण ऐसा मान बैठे तो पृथक् बात है अपितु जो लोग थोड़ा-सा भी गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे, वे ऐसे अशुद्ध सिद्धान्तों के निकट भी नहीं फटकेंगे। केवल मात्र इतना कह देने से तो घोषणा ठीक सिद्ध नहीं होती कि यदि ईश्वर खट-पट में शामिल होगा तो दुराचार का ईश्वर भागी होगा। कम से कम इतना तो बता देते कि कैसे भागी होगा? ताकि उस पर ध्यान दिया जाता। युक्ति और प्रमाण तो कोई देता नहीं केवल मात्र जो दिल में आ गया सो कह दिया। यही आप लोगों की कमजोरी की दलील है। जैसा कि आप लोगों ने कहा यदि ईश्वर को कर्मों का फल प्रदाता माना जायेगा तो ईश्वर को दोष लगेगा।

कर्म तो जड़ है, जीव अल्पज्ञ है, यह दो पदार्थ तो अपने कर्मों का फल न्याय के अनुसार भोग नहीं सकते। अब यदि ईश्वर को कर्मों का फल प्रदाता न माना जावे तो संसार में कोई ऐसी युक्ति नहीं है जो जीवों को कर्मों का फल प्रदान कर सके। प्रकृति जड़ है इसमें स्वयमेव तरतीब में आने का ज्ञान नहीं है जब तक इसके विशेषण उत्पत्तिकारक और अनुत्पत्ति धर्मा हैं, तब तक उसके शरीर धारण करने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। इसके अतिरिक्त जो मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है वह नष्ट होने वाला होता है कुदरती नहीं। यदि सृष्टि के आदि में परमात्मा हमें ज्ञान न देता तो हम भी अन्य पशुओं की भांति जंगलों में घास चरते फिरते। जीव को कर्म इन्द्रियाँ देकर इस योग्य बनाया कि वह कर्म कर सके। ज्ञान के अनुसार कर्म करने के लिए परमात्मा ने वेद ज्ञान दिया। हमारी अल्पज्ञता को दृष्टि में रखते हुए प्रत्येक जीव जब कभी अपनी गलती के कारण बीमार इत्यादि हो तो प्रकृति ने कृपा करके जड़ी-बूटियों में वे तासीरात भर दीं जिससे हम बीमारी को दूर कर सकें।

जिस ईश्वर की हम पर इतनी कृपाएं हों, जिनकी हम गणना भी नहीं कर सकते, उस एक ईश्वर के अस्तित्व से इन्कार करना कृतघ्नता है। कितने लोग जिद्दी और हठी हैं कि एक ऐसी खुली रोशन किताब से भी इन्कार करते हैं बस उनके लिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह समझो कि उनके लिए किसी प्रकार का प्रकाश नहीं। सदैव अन्धकार में भटकते रहेंगे।

इन घटनाओं के अनुसार यह बात सर्वथा सम्भव हो जाती है कि बिना परमात्मा के अस्तित्व के कोई भी कार्य पूर्ण नहीं हो सकता। अतः संसार की खट-पट में ईश्वर का मानना इतना ही जरूरी है जितना कि हमारे शरीर में जीव का होना। यदि शरीर में जीव न हो तो फिर सारा ही कारखाना चौपट समझो। इसी प्रकार संसार में यदि ईश्वर का व्यापक अस्तित्व न माना जाये तो फिर यह जो संसार की खट-पट है इसको भी चौपट समझो, संसार का फिर कोई वजूद न होगा।

अब ईश्वर को दोष लगने का जो उदाहरण उपस्थित किया गया है। यदि कुछ थोड़ी-सी भी आत्मा की आवाज पर ध्यान देकर सोचेंगे तो निश्चित रूप से आप इस परिणाम पर पहुंचे बिना नहीं रह सकते कि वस्तुतः ईश्वर ही इस संसार की खट-पट को चलाने वाला है और चलाते हुए भी उसे कुछ दोष नहीं लगता।

एक हाईकोर्ट का न्यायाधीश प्रातः से सायंकाल तक पांच-सात को फाँसी की सजा दिलवा कर मरवा देता है। न्याय की रीति से न्यायाधीश का यह कार्य सर्वथा उपयुक्त है। क्या न्यायाधीश को फाँसी का आदेश देकर मरवा देने के कारण दोष लगेगा? जब न्याय की रीति से न्यायाधीश को कोई दोष नहीं लगता तो परमात्मा पवित्र है। वह अपने न्याय से कर्मों का फल देता है। उसकी पवित्रता पर यह सन्देह करना, यदि परमात्मा सृष्टि बनाएगा और सृष्टि में जो अत्याचार होंगे उसका भागी ईश्वर होगा, कैसी अविद्या युक्त युक्ति है।

कल्पना कीजिए, किसी की जेब में एक सौ रुपये हैं। अब यह रुपया किसी को यह नहीं कहता कि तुम यह खरीदो या वह खरीदो। यदि कोई बुद्धि से काम लेकर अपने घर की जीवन की आवश्यकताओं के अनुसार गेहूं, घृत इत्यादि खरीदेगा तो अच्छी बात होगी।

इसके विपरीत एक अन्य पुरुष जो शराब की बोतलें खरीद कर आप भी पीता है और अपने मित्रों को भी पिलाता है। तत्पश्चात् बुद्धि दूषित होने के कारण किसी से झगड़ता है। वह एक सौ रुपये तो गये ही और साथ मुकद्दमे के लिये हजारों रुपये चले जाते हैं। अब भला विचारें, धन का दोष है या धन के प्रयोग करने वाले का? अब यह जीव की इच्छा पर है, चाहे तो वेद के अनुसार अपने जीवन को सफल बनाये। चाहे इसके विपरीत मनुष्य कृत स्वार्थ पर आधारित ग्रन्थों पर हठ तथा जिद करके अपने जीवन का सर्वनाश करे। यह उसकी इच्छा पर है। यदि वेद के अनुसार करता है तो अपना जीवन बनाएगा, सुख में रहेगा। नहीं तो विपरीत इसके दुख का भागी बनेगा। सृष्टि जड़ है सृष्टि के बनने में कोई दोष नहीं। जब मनुष्य अपने स्वार्थ के आधार पर अपने स्वार्थ को पूरा करने का प्रयास करता है, फिर दोष लगता है।

यदि डाक्टर घाव पर नश्तर लगाता है जिससे बीमार रोता-पीटता है और डाक्टर को गालियाँ भी देता है। डाक्टर का विचार तो नेक है कि रोगी रोग से मुक्त हो जाये। परन्तु यदि कोई मूढ़ बुद्धि यह कहे कि देखो डाक्टर कितना जालिम है जो इस प्रकार तेज नश्तर चलाता है तो आप उसके मस्तिष्क को बिगड़ा हुआ कहेंगे।

कोई धनवान अपने क्षेत्र की विद्या की कमी को देखकर एक महाविद्यालय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्थापित कर देता है और उसमें फीस इत्यादि भी कुछ नहीं लगती। उसमें शिक्षा प्राप्त करने वाले कुछ विद्यार्थी सिनेमा देखते, गन्दे नाविल पढ़ते, इधर-उधर की गप्पें मारते, दिन भर आवारा फिरने में अपना समय व्यर्थ गंवाते हैं। परीक्षा में असफल होने पर रोते-पीटते हैं। कालिज बनाने वाले को गालियां देते। भला इसमें बनाने वाले का क्या दोष है? जब साधारण लोगों का भी यही विचार है जहाँ तक हो सके यदि किसी का भला हो जाए तो अच्छा ही है। परमात्मा हम पर कृपा करके सृष्टि बनाता है तो हमें चाहिए था कि परमात्मा का धन्यवाद करते जिसने हम पर इस प्रकार की कृपा की है जिसका उदाहरण ही नहीं मिल सकता।

इसके विपरीत हम अपनी अविद्या के कारण यह कहें कि यदि परमात्मा सृष्टि बनायेगा तो दोषी हो जायेगा।

भला इससे अधिक और पतन की क्या बात हो सकती है? जिनके दिमाग पर इस प्रकार का परदा पड़ा हुआ है उनसे आशा ही नहीं की जा सकती कि वे किसी बात पर गम्भीरता से विचार करेंगे।

शंका:—जब जीव बुरे कर्म करने के लिये तैयार हो जाता है तो परमात्मा अपने आदेश से उसे रोकता क्यों नहीं?

समाधान:—परमात्मा रोकता है, चाहे कोई काल-कोठरी में बुरा कर्म करे, आत्मा कांपती है, भय, लज्जा, शर्म अनुभव करती है। यह परमात्मा की ओर से एक चुनौती होती है। अब यह जीव के वश में है चाहे तो वह बुरे मार्ग से हट जाये। यदि जीव बुराई से बचेगा तो उसके लिए सुख होगा। यदि बुरे में प्रवृत्त होगा तो दुःख का भागी बनेगा। आदेश को मानने अथवा न मानने में जीव का ही लाभ है।

परमात्मा के नियमों में कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकता है जैसे सूर्य का पूर्व से उदय होना, सर्दियों में रात बड़ी होना, आग का वेग ऊपर की ओर होना और पानी का वेग नीचे की ओर होना, आंख से देखना, कान से सुनना इत्यादि परमात्मा के अटल नियम हैं इसमें हस्तक्षेप और परिवर्तन कोई नहीं कर सकता क्योंकि परमात्मा के नियमों को तोड़ने का सामर्थ्य किसी में भी नहीं है।

ईश्वर ने वेद के रूप में अपना ज्ञान प्राणीमात्र को दिया है जो उसके अनुसार आचरण करेगा, वह सुख पायेगा जो उसके विरुद्ध आचरण करेगा वह दुःख पायेगा। जीव अनादि है, अल्पज्ञ है तथा कर्म करने में स्वतंत्र है। जहां तक पाठ पढ़ाने का सम्बन्ध है ईश्वर की समस्त सृष्टि पाठ पढ़ा रही है।

जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है यदि परमात्मा इसमें हस्तक्षेप करे तो जीव के दोष का जिम्मेवार भी परमात्मा ही बनेगा।

क्योंकि हर कार्य करने वाला जीव स्वयं हैं अतः बुराई तथा अच्छाई का जिम्मेवार स्वयं ही है।

क्योंकि ईश्वर का विशेषण न्यायकारी है। वह जीव के अधिकारों में बाधा नहीं डालता। एक और उदाहरण लीजिये।

एक लड़का मास्टर के पास पढ़ता है। मास्टर से जो बार-बार पूछता है वह बतलाता है और समझाता है। न पूछने की दशा में भी जब लड़का अशुद्ध पढ़ता है तो फिर मास्टर उसे दोबारा बुलवा कर शुद्ध कर देता है। इसका अभिप्राय यह है कि जहाँ तक भी हो अध्यापक उसे पूर्ण रूप से पढ़ाता है और उसे पढ़ाने में कोई कमी नहीं छोड़ता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वही विद्यार्थी परीक्षा में बैठा हुआ है और वही अध्यापक परीक्षा लेने के लिये आया है।

अध्यापक देख रहा है कि छात्र अपने प्रश्न का हल ठीक नहीं कर रहा है। उस समय अध्यापक उसे कुछ नहीं कह सकता क्योंकि अध्यापक एक कानून के अधीन ड्यूटी दे रहा है तो फिर वह परमात्मा अपने नियम के विरुद्ध जीव के कर्म में हस्तक्षेप नहीं कर सकता।

जैनमत तथा पुनर्जन्म

जैनमत की ओर से पुनर्जन्म के विषय में एक ही युक्ति दी जाती है कि कर्म जड़ है। जैसे जड़ होती हुई शराब नशा देती है, उसी प्रकार कर्मों के अनुसार कर्म परमाणु भी जीव के साथ मिल कर उसमें एक ऐसी शक्ति उत्पन्न कर देते हैं जो जीव को सुखी-दुखी बनाने में समर्थ होती है।

सृष्टि के अनादित्व के समर्थन में जैनमत के पास एक ही दलील है जैसे ईश्वर किसी के बनाये बिना अपना अनादिपन स्थित रख सकता है वैसे ही सृष्टि भी बिना किसी के बनाये अपना अनादिपन स्थित नहीं रख सकती। वैसे ही पुनर्जन्म के लिये जैनमत वालों के पास एक ही सुरक्षित युक्ति है जिसको यह बार-बार देते रहते हैं।

जैसे जैनमत का सृष्टि अनादि मानना भी मिथ्या ठहरता है वैसे ही जैनमत का पुनर्जन्म मानना भी मिथ्या सिद्ध होता है।

पुनर्जन्म को मानने वाला जब तक सर्वव्यापक परमात्मा को कर्मों का फल देने वाला न मानेगा, उस समय तक पुनर्जन्म का सिद्धान्त मानना झूठा सिद्ध होगा।

कोई भी युक्ति संसार में ऐसी नहीं हो सकती जो बिना ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार किये पुनर्जन्म को सिद्ध कर सके।

कर्म तो जड़ है, जिस जीव ने कर्मों का सुख-दुःख प्राप्त करना है, वह अल्पज्ञ है। पुनर्जन्म का फल इस शरीर के साथ ही समाप्त नहीं होता। न जाने किस-किस जन्म में किस-किस कर्म का फल भोगना पड़ता है। किसी जन्म-जन्मान्तर में तो फल भोगने का प्रश्न ही क्या ? एक-दो घण्टे पूर्व चाबियों का गुच्छा जो लाला जी के पास था कहीं रख करके भूल गये। उसकी खोज में रात हो जाती है। जब तनिक-सी देरी की बात याद नहीं रहती तो कई जन्मों में जो हम कर्म करते हुये आ रहे हैं उसका भुगतान कौन से नियम के आधार पर करेंगे ? कर्म जड़ होने से प्रकृति ने जिस-जिस में जो-जो तासीर रखी है उसके अनुसार वह अपना प्रभाव रखती है। कह देने से तो यह सिद्ध नहीं होता कि कर्मों के परमाणु चेतन के साथ मिल कर एक ऐसी शक्ति पैदा करते हैं जो जीव को सुखी-दुःखी बनाने का कारण बन जाते हैं। अब यह पता नहीं लगता कि यह शक्ति किस में उत्पन्न होती है।

कर्म जड़ हैं। उसमें चेतना नहीं है फिर यह वह शक्ति नाम की जो वस्तु है जिसको जैनमत कर्म फल भुगताने के लिये प्रयोग में लाकर कर्मफल का परिणाम निकालते हैं वह है कहां ?

यदि कोई कोल्हू में कन्करीट डालकर तेल प्राप्त करने का प्रयास करे तो वह प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि कन्करीट में तेल नहीं है। इसी प्रकार कर्मों तथा परमाणुओं में ज्ञान नहीं है। यह जीव वही है जो हमारे अन्दर जीवन शक्ति दे रहा है। दिन भर में कितनी ही बार भूल करता है। पुनर्जन्म ठीक सिद्ध हो जाता है जो हमारे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर्मों को पूर्ण रूप से जानने वाला है वह हस्ती सर्व-व्यापक ही हो सकती है। जैनमत ऐसी शक्ति मानने से इन्कार करता है फिर तो जैनमत पुनर्जन्म को कभी भी सिद्ध नहीं कर सकता। दो ही पदार्थ हैं अर्थात् जीव और प्रकृति। ये दोनों पदार्थ स्वयं कर्म भोगने में असमर्थ हैं क्योंकि कर्म जड़ हैं और जीव अल्पज्ञ है।

जैनमत हृदय से भी और दशा के अनुसार भी शक्ति को स्वीकार करता है मगर स्पष्ट कहने में जरा हिचकिचाते हैं और डरते हैं। यदि कर्मों का फलदाता ईश्वर को मान लिया जाये तो फिर जैनमत संकट में हो जायेगा। इस स्थान पर एक उदाहरण लागू होता है। एक जाट के पास एक घोड़ी थी। उसने कहा यदि कोई तीन बीसा साठ सिद्ध कर दे तो मैं शर्त में अपनी घोड़ी हार जाऊँगा। जाट की पत्नी ने कहा कि तीन बीसा तो जमा होते ही साठ हैं। अतः आप घोड़ी हार जाओगे।

जाट ने कहा, पगली, हारूंगा तो तब जब मैं यह मानूंगा कि तीन बीसा साठ होते हैं। जब मैंने यह मानना ही नहीं तब कैसे हारूंगा? ठीक यही उदाहरण इन पर चरितार्थ होता है। तीन बीमियां मानने के लिये तो तैयार, परन्तु जिह्वा से साठ (६०) नहीं कहते। वैसे ही जैनी भी शक्ति को तो मानते हैं परन्तु यह मानने के लिये उद्यत नहीं हैं कि यह जो शक्ति है वह परमात्मा ही है।

जहां भी परमात्मा के न्याय का वर्णन आया वहां पहले बहाना बनायेंगे, सीधी तरह कभी नाम नहीं लेंगे। श्रीमान जी, वह जो शक्ति है वही परमात्मा का न्याय का हाथ है जो जीव को कर्मों के अनुसार सुखी-दुःखी होना पड़ता है।

परमाणुओं में शक्ति नहीं है क्योंकि जड़ होने के कारण किसी नियम के अनुसार भी हरकत नहीं कर सकते। जीव अल्पज्ञ होने के कारण कोई भी कार्य न्याय के अनुसार नहीं कर सकता वही परमात्मा जो शक्तिमान है जो जीवों के कर्मों का फलदाता है, वह ही सर्वशक्तिमान है। शक्ति इत्यादि किसी से उत्पन्न नहीं होती और न किसी अन्य पदार्थ में यह शक्ति है। अतः क्यों अन्धकार में पड़कर भटकते हो। सीधी तरह वास्तविक शक्ति को मानकर यश के भागी बनो।

यह जैनमत का सिद्धान्त सर्वथा असत्य है कि परमाणुओं में चेतन से मिलकर शक्ति पैदा होने से दुःख-सुख का कारण बन जाते हैं। कर्म जड़ हैं। उन्हें किसी प्रकार का ज्ञान नहीं और जीव की यह हार्दिक इच्छा भी नहीं है कि वह दुःख में पड़े और ऐसी योनि में जाएं जहां प्रतिदिन हण्टर पड़ें। जिसका प्रमाण उपस्थित है। एक मुलजिम है उसकी हार्दिक इच्छा यह होती है कि किसी न किसी प्रकार मैं दण्ड से बच जाऊँ। वह किसी से सिफारिश करवाता है। यदि सिफारिश से काम नहीं बनता तो रिश्वत देकर बचने का प्रयास करता है। जब रिश्वत से भी कार्य बनता दिखाई नहीं देता तो फिर भागने की सोचता है उसी बीच में गिरफ्तार कर लिया जाता है। फिर विवश होकर पुलिस के आगे-आगे दौड़ता जाता है। जब यह सर्वथा सिद्ध है कि जीव स्वयं किये कर्म का दण्ड भुगतने को तैयार नहीं जब तक कि कोई अन्य व्यक्ति दण्ड देने पर विवश न करे।

जैन भाई समझें कि—जो मिथ्या सिद्धान्त होता है वह तीनों कालों में भी सच्चा सिद्ध नहीं होता। भाइयो! इधर-उधर के हाथ मारने की आवश्यकता नहीं। वेद के सिद्धान्त के अनुसार जानो तथा मानो, तब ही कल्याण होगा। जब तक ईश्वर को कर्मों का फलदाता नहीं मानोगे सच्चाई कोसों दूर रहेगी। अतः सच्चाई को ग्रहण करके यश के भागी बनो, यही हमारी इच्छा है और यही हमारा प्रमुख कर्त्तव्य है जब सीधे मार्ग पर आ जाओ, तभी अच्छा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

आज से ५४ वर्ष पूर्व वैशाखी पर्व पर
अमृतसर का नृशंस हत्याकाण्ड
जलियांवाला बाग में
१३ अप्रैल १६१६ के शहीदों को
कोटिशः प्रणाम

(इन पंक्तियों का लेखक १६१६ अप्रैल में पंजाब के अधिकांश भाग में फौजी कानून लागू होने और जलियांवाला बाग हत्याकांड के कुछ दिन बाद ही—रेलयात्रा की सुविधा मिलते ही—मई के प्रथम सप्ताह में लाहौर पहुंच गया था। महामना मदनमोहन मालवीय जी और स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित "पंजाब सेवा समिति" की ओर से सहायता कार्य के लिए अमृतसर तथा अन्य नगरों में गया और कई सप्ताह वहां रहा। उस समय की वहां की आंखों देखी स्थिति पर आधारित यह लेख है। पंजाब की राजधानी लाहौर तथा अन्य जिलों में ओड्वायरशाही के लोमहर्षक और बर्बर अत्याचार देखे गए। जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड का विशद वर्णन आज की पीढ़ी के लिए अत्यन्त आवश्यक है कहीं यह पीढ़ी इन अनाम, अज्ञात शहीदों को भूल न जाए।

—लेखक

प्रथम युद्ध में भारत की सहायता का फल : "रालेट एक्ट" या काला कानून

१६१४ से १६१८ तक हुए पहले विश्वयुद्ध का नेतृत्व ब्रिटेन के हाथ में था। अमेरिका १६१८ अक्तूबर में ब्रिटेन का सहायक बना। उस समय ब्रिटेन जर्मनी के हाथों पिट रहा था और मित्र राष्ट्रों के वह करीब एक दर्जन जहाज डुबो चुका था। अंग्रेज को इस संकटकाल में धन और जन की बेहद जरूरत थी। भारत उसके लिए कामधेनु सदृश था। इन दोनों की प्राप्ति के लिए अंग्रेज ने इस देश में अत्याचार और आश्वासन—दोनों प्रकार के कदम उठाये। अधिक जोर अत्याचारों पर ही था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गोरी नौकरशाही को मनमानी करने की बेहद छूट दी गई थी। १९१६-१७ में लोकमान्य तिलक और डा० मिसेज एनी बेसन्ट के नेतृत्व में स्थापित "होम रूल लीग" द्वारा "औपनिवेशिक स्वायत्त शासन" का प्रबल आन्दोलन चला, तब भारत के आंसू पोंछने मात्र के लिए २० अगस्त १९१७ को भारत सचिव लार्ड मोल ने ब्रिटिश-पार्लमेन्ट में कुछ "सुधार" दिये जाने की घोषणा की। पर, युद्ध समाप्त होते ही गोरी सरकार अपने वचन से मुकर गयी। इसके फलस्वरूप, देश भर में भयंकर असन्तोष व्याप्त हो गया। उधर, फ्रांस, इटली और मध्य एशिया के मेसोपोटेमिया, ईराक, ईरान, इत्यादि से युद्ध समाप्ति पर वापस भारत आये सिपाहियों ने विदेशों की स्वतन्त्रता के अनुभव की तुलना में अपने देश की गुलामी और दर्दनाक स्थिति को देखा और देहात व शहरों की जनता को इससे परिचित कराया। तब विदेशी शासन के विरुद्ध सर्वत्र चिन्गारियां भड़कने लगीं। अंग्रेज इससे घबरा गया। इसके दमन करने के लिए १० दिसम्बर १९१७ को ब्रिटेन के एक जज रालेट की अध्यक्षता में सात (केवल गोरे) सदस्यों की एक समिति बैठायी। इसने नौकरशाही अफसरों ही की गवाहियों के आधार पर इस देश में व्याप्त अशान्ति का दमन करने के लिए एक कानून बनाने की सलाह दी जिसे "रालेट" साहब के नाम पर "रालेट ऐक्ट" कहा जाता है। यह ऐक्ट फौजी कानून से भी अधिक भयंकर था। भारतीय नेताओं ने इसे "काला कानून" का नाम दिया।

न अपील, न वकील, न दलील

१९१९ के मार्च-अप्रैल मासों में देश में विशेषत: पंजाब में—हुई क्रान्तिकारी और रोमांचकारी घटनाओं के मूल में चूंकि यह रालेट एक्ट ही था, इसलिए इसकी कुछ नादिरशाही धाराओं की ओर संकेत करना आवश्यक है। संक्षेपत: राजद्रोह के संदिग्ध व्यक्ति को, बिना सेशन व हाईकोर्ट में मुकदमा चलाये, तत्काल एक विशेष अदालत में पेश किया जाएगा और इसके निर्णय की अपील नहीं हो सकेगी। पं० मोतीलाल नेहरू के शब्दों में—"न अपील, न वकील और न दलील"—ऐसी इस अदालत की रूपरेखा थी। मैजिस्ट्रेट के सामने एक बार जिसकी गवाही हो जाए, उसके बाद उसके मर जाने, लापता हो जाने अथवा गवाही वापस लेने की मांग पर भी, उसका पहला बयान प्रामाणिक ही माना जाएगा। पुलिस किसी भी संदिग्ध व्यक्ति से एक वर्ष की जमानत ले सकती है और किसी भी व्यक्ति को—चाहे वह कितना ही प्रतिष्ठित क्यों न हो,—बिना वारंट पकड़ सकती है। सरकार अपने आदेशों के कार्यान्वयन के लिए किसी भी प्रकार के—कठोर से कठोर—उपायों का अवलम्बन कर सकती है—इत्यादि।

इस बिल का समूचे देश में एक स्वर से घोर विरोध किया गया। तत्कालीन केन्द्रीय धारा सभा (सेन्ट्रल लेजिस्लेटिव एसेम्बली) के समस्त २२ गैर-सरकारी सदस्यों ने —विभिन्न राजनीतिक विचारों के हिन्दु, मुस्लिम इत्यादि- पूर्ण मतैक्य क साथ इस कानून का विरोध किया पर ३५ सरकारी व नामजद सदस्यों के बहुमत से गोरी सरकार ने इसे पास करा लिया। इस मनमानी कार्यवाही के विरोध में सवश्री मदन-मोहन मालवीय, मजरूल हक, मुहम्मद अली जिन्ना तथा अन्य गैर सरकारी सदस्यों ने एसेम्बली से त्यागपत्र दे दिया।

काले कानून का विरोध : गाँधी जी का नेतृत्व

मदान्ध गोरी सरकार की इस धींगामुश्ती और हठरूप नीति के फलस्वरूप सारे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देश का जन-मानस विरोध से भड़क उठा। अब गांधी जी कार्यक्षेत्र में आये। पहले उन्हें "कर्मवीर गांधी" कहा जाता है, अब स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उन्हें "महात्मा" की उपाधि दी और वह "महात्मा गांधी" के नाम से लोक-विख्यात हुए। उन्होंने देश का नेतृत्व संभालते ही "रालेट बिल" को "काला बिल" की संज्ञा देते हुए अहिंसा और शान्ति के उपायों से इसका मुकाबला करने का निश्चय किया। आन्दोलन का संचालन करने के लिए गांधी जी ने १९१९ फरवरी में एक "सत्याग्रह समिति" स्थापित की और उसके सदस्यों के लिए एक प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर करना अनिवार्य रखा गया। इसके अनुसार सर्वथा अहिंसात्मक और शान्त उपायों के साथ सविनय अवज्ञा से ऐसे कानूनों को भंग करने की प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी। इस प्रतिज्ञापत्र पर सबसे पहले हस्ताक्षर करने वालों में स्वामी श्रद्धानन्द जी थे। गांधी जी स्वामी जी को "बड़ा भाई" कहते थे और गांधी जी के समकक्ष नेता वह माने जाते थे। गांधी जी ने बम्बई से देशव्यापी हड़ताल करने का आह्वान किया और ६ अप्रैल १९१९ का दिन इसके लिए निश्चित किया। दुर्भाग्यवश अंग्रेज की कूट और हिन्दु-मुस्लिम को लड़ाने की नीति के कारण बम्बई में दंगा हो गया।

दिल्ली में गोली चल गयी : स्वामी श्रद्धानन्द जी का प्रभाव

अंग्रेजी और देसी तिथियों की गड़बड़ी और व्यापक अशान्त वातावरण के कारण दिल्ली में यह हड़ताल ३० मार्च १९१९ को हो गयी। रेलवे स्टेशन के सामने और एक अन्य जगह गोली चल गयी पर स्वामी श्रद्धानन्द जी और हकीम अजमल खां ने दिल्ली की स्थिति को संभाल लिया। इन दोनों नेताओं के प्रभाव से राजधानी में पूर्णतः हिन्दु-मुस्लिम ऐक्य था। इसका ज्वलंत प्रमाण इन दिनों की इस घटना से मिल सकता है कि दिल्ली की जामा-मस्जिद जिसकी वेदी पर से आज तक किसी गैर-मुस्लिम को भाषण देने का अधिकार नहीं दिया गया था—इतिहास में पहली वार स्वामी श्रद्धानन्द जी का वेद मन्त्रों के पाठ के साथ प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। इसी दिन सायं चांदनी चौक में से जलूस का नेतृत्व करते हुए जब स्वामी जी घंटाघर के पास पहुंचे, और गोरे सार्जेन्ट ने गोरखा सिपाहियों को जलूस पर बन्दूक तानने का आदेश दिया, तब स्वामी जी महाराज ने छाती खोलकर निर्भयता से कहा "जलूस का नेता मैं हूं। अपनी गोलियां का निशाना मेरी खुली हुई छाती को बनाओ। इन निहत्थे, शान्त लोगों को क्यों अपना निशाना बनाते हो ?" स्वामी जी की इस ओजस्वी वाणी के सामने सिपाही हतप्रभ हो अपनी बन्दूकों को झुका कर जलूस को वहाँ से आगे बढ़ जाने देने के लिए बाध्य हो गये।

गांधी जी की दिल्ली के पास गिरफ्तारी

दिल्ली में गोली चलने के समाचार से घबरा गांधी जी तत्काल बम्बई से राजधानी की ओर फ्रन्टीयर मेल से रवाना हो गये। दुराग्रही और नासमझ नौकरशाही ने दिल्ली से ३० मील पहले एक छोटे रेल स्टेशन "कोसीकलां" पर गाड़ी रोक, गांधी जी को वहीं उतार और गिरफ्तार कर तत्काल वहीं रोकी गयी दूसरी रेलगाड़ी से पुलिस गारद के साथ बम्बई वापस भेज दिया। गांधी जी की इस अन्यायपूर्ण गिरफ्तारी ने आग में घी का काम किया। सारे देश में, विशेषतः, पंजाब और उत्तर भारत में जनता के क्रोध, रोष और विरोध की ज्वालाएं, स्वतः भड़क उठीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंजाब में श्रोड्वायर के घोर अत्याचार

पंजाब में गोरेशाही के कई वर्षों से चले आ रहे कठोर अत्याचारों के विरुद्ध जो दुर्दम्य झंझावात, अनायास ही उठ खड़ा हुआ, उसकी पृष्ठभूमि का यहां उल्लेख अत्यन्त आवश्यक है। इन दिनों पंजाब का लेफ्टि० गवर्नर सर माइकेल श्रोड्वायर थे जो पहले इसी प्रान्त में कमिश्नर था। उस युग क भारत विद्वेषी और ब्रिटिश साम्राज्यवाद का जीता-जागता और क्रूर गोरी नौकरशाही का यह एक साकार रूप था। उस समय पहला विश्व युद्ध चल रहा था। पंजाब से धन और जन संग्रह के लिए इसनें धनी-निर्धन, शिक्षित-अशिक्षित, शहरी-देहाती—सब पर एक डण्डे से ऐसे भयानक, क्रूर और अमानवीय अत्याचार किये कि उन्हें लिखते हुए लेखनी कांप जाती है। २० वीं सदी के दूसरे दशक के इस गोरे तैमूरलंग ने लाहौर की एक सार्वजनिक सभा में बड़ी बेशरमी से घोषणा की कि "सेना के लिए दो लाख रंगरूट चाहिएं, संभव हुआ तो स्वेच्छा से, अन्यथा जबरन भर्ती किये जाएंगे। प्रत्येक जिला, तहसील और गांव को एक निश्चित संख्या में—जो सरकार कहेगी—रंगरूट देने होंगे और अगर न मिले तो विकट स्थिति का सामना करने के लिए वहां के निवासियों को तैयार रहना होगा।" धन संग्रह के सम्बन्ध में श्रोड्वायर ने एक सरक्यूलर द्वारा समस्त डिप्टी कमिश्नरों को आदेश दिया कि "धनिकों से स्पष्ट शब्दों में कह दो कि यदि वे पर्याप्त मात्रा में इस युद्ध के लिए ऋण नहीं देंगे तो उन पर विशेष नजर रखी जाएगी।" मैजिस्ट्रेटों और सेशन जजों को ऐसे संकेत दिये गये कि यदि अभियुक्त पर्याप्त युद्ध-रूप की राशि दे तो उसे सामान्यतः छोड़ दिया जाए, हल्की सजा दी जाए। कई जगह जवान लड़कों को भर्ती से बचाने के लिए माता-पिता ने एक-एक हजार रुपये तक की रिश्वतें दीं। कई गांवों में जमींदारों ने अपने नौकरों व मजदूरों को भर्ती करा दिया और स्वयं व अपने लड़कों को बचा लिया। जनता का मुंह बन्द करने के लिए सभा-जलूस और समाचारपत्रों पर कड़ी पाबन्दी तथा पंजाब से बाहर कि प्रान्तों के कई राष्ट्रीय पत्रों के प्रवेश पर रोक लगी हुई थी। पंजाब के समाचार बाहर भेजने पर भी कड़ी पाबन्दी थी। इस निर्दयी, जघन्य गोरे शासक के काले कारनामों के हेतु सारे प्रान्त में गहरे असन्तोष और विद्रोह की आग सुलग रही थी। इसका एक नमूना गुजरांवाला से उर्दू में प्रकाशित साप्ताहिक "फंगरूपाल" के सम्पादक श्री बांकेलाल का एक वह टप्पा है, जो उन दिनों आम बोला जाता था।—

पगड़ी संभाल, श्रो ए जट्टा, पगड़ी संभाल श्रो ॥ फिरंगी तेरी पगड़ी हेठां सुट्टी, तूं सुत्ता ही रहया हुण जाग, पगड़ी संभाल, श्रो ॥ जट्टा । श्रो ॥

हे किसान ! तू अपनी पगड़ी (आत्म सम्मान) संभाल, फिरंगी ने तेरा सम्मान धूल में मिला दिया है, तू अभी तक सोया पड़ा है, अब तो जाग हे किसान ! गुरु नानक के शब्द, शायद ऐसे ही अवसर के लिए कहे गये थे—

एन्नी मार पई लग्गा कुरलाराणे,
तैं जालिम को दर्द न आया।

इतनी मार पड़ी कि लोग रोने लगे, पर ऐ जालिम, तुझे दर्द न आया।

१० अप्रैल को अमृतसर में निहत्थे जलूस पर गोली

रालेट एक्ट के विरुद्ध, गांधी जी की घोषणा के अनुसार, १० अप्रैल १९१९ को अमृतसर में शान्तिपूर्वक हड़ताल रही। ९ अप्रैल को रामनवमी थी। हिन्दू-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुसलमान-दोनों ने मिल कर उत्साह से इसे मनाया। इससे पूर्व ३० मार्च को रालेट एक्ट के विरोध में अमृतसर में सार्वजनिक सभा हुई जिस में लगभग ३५ हजार लोग शामिल थे। ओड्वायर इस हड़ताल और विशाल सभा के समाचार से बौखला गया। रामनवमी के त्यौहार को हिन्दू-मुसलमान दोनों द्वारा मिलकर सोत्साह मनाने से उसकी बौखलाहट अधिक उग्र हो गयी। उसके आदेश से १० अप्रैल की रात को अमृतसर के लोक प्रिय नेता डा० सत्यपाल, डा० किचलू और म. बुग्गा को मोटर पर बिना वारंट किसी अज्ञात स्थान पर नजर बन्द कर दिया गया। तीन अन्य नेताओं को उनके घर में ही नजर बन्द कर दिया गया। इस प्रकार के अन्याय और पकड़-धकड़ से सारे शहर में प्रबल सनसनी फैल गयी। नगर के प्रमुख व्यक्तियों के नेतृत्व में गंभीर भीड़ नंगे सिर, नंगे पांव डिप्टीकमिश्नर के बंगले की ओर अपने नेताओं की रिहाई भी माँग करने के लिए चल पड़ी। रेलवे पुल के पास ही जलूस को फौजी अफसरों ने रोक लिया। नेता गण जब इन अफसरों से अपना दृष्टकोण उपस्थित करने के लिए बातचीत कर रहे थे तब, बिना किसी पूर्व सूचना के, किसी सैनिक अधिकारी ने निहत्थी जनता पर गोलियों की बौछार कर दी। करीब २० व्यक्ति वहीं ढ़ेर हो गये और कई जख्मी हो गये। अब भगदड़ मच गयी। कुछ जनता मृतकों की लाशें कन्धों पर रख शहर के मुख्य बाजार हाल बाजार में घुस गयी। सारे नगर में क्रोध और जोश की लहर दौड़ गयी। क्रुद्ध जनता ने तत्काल टाऊन हाल, डाकखाना मिशन हाल, भगतां वाला स्टेशन का एकभाग,—इत्यादि जला दिये, नेशनल बैंक लूट लिया, उसके दो गोरे कर्मचारियों को जान से मार डाला, एलाइन्स बैंक के दो गोरे अधिकारियों को भी मौत के घाट उतार दिया, मिसशेर व्रुडनाय और मिसेजईजडन नामकी दो अंग्रेज महिलाओं को बुरी तरह से पीटा। इस लूटमार और उपद्रव में पुलिस का भी हाथ था। कुछ पुलिस सिपाहियों के पास लूट का सामान भी मिला। शाम को ५ बजे तक नगर में शान्ति स्थापित हो गयी।

बाद में नियुक्त की गयी सरकारी जाँच समिति ने स्पष्ट शब्दों में यह कहा कि अगर १० अप्रैल को फौजी अधिकारी गोली न चलाते, तो यह सारा हत्याकांड न होता।

गोरेशाही की साजिश : वैशाखी पर जलियांवाला बाग में आमसभा

१३ अप्रैल को वैशाखी का-नये वर्ष का पहला दिन त्यौहार था। अमृतसर का वैशाखी का मेला सारे पंजाब में प्रसिद्ध है। दूर-दूर देहात से जनता त्यौहार मनाने, स्वर्ण मन्दिर के तालाब में स्नान करने और इसी दिन वहां प्रतिवर्ष लगने वाले पशु मेले में भाग लेने भारी संख्यामें आती है। फसल कट जाने के कारण पंजाब का किसान विशेषतः—इस पर्व को खुले दिल से खर्च करके और लोक नृत्य इत्यादि द्वारा मनाता है। सरकार द्वारा नियुक्त हंटर कमेटी के सामने अपने बयान में जनरल डायर ने यह स्वीकार किया कि १३ अप्रैल को शहर में सभा जलूस और हथियारों पर लगी पावन्दी की घोषणा बहुत कम लोगों तक पहुंची थी। देहात के लोग तो शहर की इस स्थिति से एक दम अनजान थे। यह भी प्रमाणों से सिद्ध हो चुका है कि इस प्रकार की पाबन्दी के बावजूद १३ अप्रैल की शाम को ४ बजे जलियांवाला बाग में सभा होने की घोषणा हंसराज नामक एक सरकारी जासूस द्वारा, पूर्वनियोजित गोरेशाही के षड्यंत्र के अनुसार, जानबूझ कर करायी गयी थी। अंग्रेज नौकर शाही ने १० अप्रैल का बदला लेने के लिये यह भयंकर कारसाजी की थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

डायर की तोपें बाडा के भीतर

शाम को चार बजे जलियांवाला बाग में करीब २० हजार नरनारी जमा हो गये और वही सरकारी जासूस हंसराज भाषण दे रहा था। यह बाग, वस्तुतः बाडा न होकर, एक खुला, बंजर मैदान था जिसके तीन ओर ऊंची दीवारें और एक ओर मकानों का घेरा तथा केवल एक तंग दरवाजा आने जाने के लिए था। शाम को करीब ५ बजे डायर ने दो मशीनगनों और सशस्त्र २५ गोरखा २५ सिख सिपाहियों और ४० अन्य गोरखों के साथ पहुंचने से कुछ पहले एक सैनिक हवाई जहाज बाग के ऊपर मंडरा रहा था। इसे देख लोग कुछ घबराये, पर हंसराज जासूस ने जोश के साथ कहा घबराओ मत डरने का काम नहीं है।"

बिना पूर्व सूचना के जनता पर गोला बारी

डायरने सशस्त्र टुकड़ी के साथ बाग में प्रवेश करते ही बिना किसी पूर्व सूचना के मशीन गनों के मुंह खोल दिये। एक ही तंग दरवाजे से भीतर घुसी भीड़ से ५०-६० गज दूरी पर तोपें खड़ी की गयीं। हंटर कमेटी के सामने बयान देते हुए डायरने स्वीकार किया कि—

"गोला बारी करने से पहले मैंने भीड़ को सूचित करना जरूरी नहीं समझा। १० मिनट तक लगातार गोलाबारी होती रही और अगर गोले खत्म न होते तो मैं अभी ज्यादा गोला बारी जारी रखता।" समिति द्वारा पूछे गये एक प्रश्न के उत्तर में इस नृशंस हत्यारे डायर ने निःसकोच कहा "घायलों को सहायता देने और मृतकों को उठाने का कोई प्रवन्ध नहीं किया गया क्योंकि यह मेरा कार्य न था।" "जहां भीड़ ज्यादा थी, वहां मैंने गोला बारी भी ज्यादा की।" कुछ प्रत्यक्ष दर्शियों ने अपने बयान में यह भी कहा कि बाग के बाहर भी सैनिक तैनात थे और जो सभा से भागकर, दीवार कूद कर, बाहर निकले, उन पर भी गोलियां दागी गयीं।

दिन दिड़ाड़े निहत्थी और शान्त जनता पर की गयी इस जालिम अग्नि वर्षा से कितने व्यक्ति तत्काल मर गये—इसकी संख्या गोरेशाही ने पहले २९०, बाद में २० अगस्त १९१९ को ५०० बतायी। कांग्रेस जांच समितिका अनुमान कम से कम मरे लोगों दो हजार का है। पर बाग में ही जख्मी हुए और मरे अथवा भागकर घर में जाकर मरने वालों की संख्या का ठीक-ठीक ब्यौरा कोई नहीं बता सका। इनकी संख्या भी १ हजार से कम नहीं थी- ऐसा हमें अमृतसर जाने पर प्रमुख व्यक्तियों ने बताया।

अधिकांश पंजाब में नंगा फौजी कानून

इतने हृदय वेधक बर्बर हत्या कांड के समाचार पर पत्थर दिलओड्वायर ने बाहर जाने की सर्वथा रोक लगा दी। किसी प्रकार जो खबरें बाहर पहुंची, वह सर्वथा मिथ्या और सामान्य घटना क रूप में बतायी गयी थीं। इस राक्षसीय कांड की प्रतिक्रिया पंजाब में प्रबल रूप से हुई। तब, क्रूर ओडवायर ने पंजाब के अधिकांश जिलों और नगरों में—जैसे लाहौर, कस्तूर, मिंटगुमरी, लायलपुर, मियांवाली, गुजरांवला, गुजरात, रावल पिण्डी इत्यादि में फौजी कानून लागू कर जले पर नमक छिड़कने का काम किया। लाहौर में तो मई मास की कड़ी गर्मी में डी.ए.वी. कालेज के लड़कों को अपने बिस्तर सिर पर रख उस धूप में, छात्रावास से कोतवाली तक चलने का आदेश दिया गया। पंजाब के समस्त प्रमुख राजनीतिक और सामाजिक नेताओं को जेलों में ठूंस दिया गया। समाचार पत्र बंद कर दिये गये। सामान्य अपराधों पर भी खुले बाजार में बेंत और कोड़े मारने की सजा दी जाती थी। अमृतसर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में इस फौजी कानून के अन्तर्गत अत्याचारों की पराकाष्ठा हो गयी। गुरु बाजार की एक तंग गलियों से भारतीयों को पेट के बल रींग कर चलना पड़ता था। छाता व हाथ की छड़ी लेकर कोई घर से बाहर नहीं निकल सकता था। प्रत्येक भारतीय के लिए गोरे को सलाम करना जरूरी था। शहर के सैकड़ों संभ्रान्त और मान्य व्यक्तियों को जबरन पुलिस का सिपाही बन पहरा देना होता था, अथवा, सुबह शाम थान में हाजरी देनी पड़ती थी। इस प्रकार के नादिरशाही अपमान जनक अनेक फौजी शासन के नियम डायर और ओडवायरने अमृतसर तथा पंजाब के प्रमुख नगरों में बनाये और जारी किये थे।

हत्या कांड का परिणाम राष्ट्रीय जागृति का नया मोड़

पर, जलियां वाला बाग का यह राक्षसी और रोमांच कारी हत्या कांड और प्रान्त में किये गये फौजी कानून के ओड्वायरशाही के काले कारनामे अधिक दिन तक छिप न सके। इस से न केवल भारत किन्तु संसार के समस्त सभ्य देशों में तहलका मच गया। चारों ओर से गोरेशाही पर लानत पड़ने लगी। ब्रिटेन में भी कई जगह इसकी भर्त्सना की गयी। पर कीचड़ में से कमल के समान इस अकल्पनीय, दुर्दशा और पत्थर दिल को भी पसीज देने वालीनृशंस घटना के परिणाम स्वरूप भारत में प्रवल चेतना और स्वराज्य प्राप्ति की आकांक्षा जागृत हुई। वस्तुतः गाँधी जी के नेतृत्व में स्वराज्य प्राप्ति का बीज जलियाँ वाला बाग के रक्त प्रवाह के साथ ही पैदा हुआ। इतने भयंकर हड़कम्प और गोरे शाही द्वारा रक्तशोषक अत्याचारों के बावजूद १९१९ दिसम्बर की कड़ी सर्दी और घोर वर्षा के होते हुये भी श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की स्वागताध्यक्षता और श्री मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में काँग्रेस का अधिवेशन अमृतसर में वैसा धूम-धाम से हुआ कि उससे पहले और उसके बाद भी कई दशकों तक उसका अधिवेशन अंग्रेज के इतिहास में नहीं हुआ। जलियां वाला बाग के इन चिरसुप्त अमर शहीदों को शतशः प्रणाम—

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।

वैशाखी पर्व—नवसंवत्सर का प्रथम दिवस

नव वर्ष का प्रथम दिवस होने से वैशाखी पर्व का बड़ा महत्त्व है। दैनिक सन्ध्या में पढ़ जाने वाले "अघमर्षण मंत्र" में यह शब्द है

"समुद्रादर्णवा दधि संवत्सरोऽजायत"

(=ऋ॰ १०।१९०।३

अर्थात्—प्रकृति से विकृति हो उसके अन्तरिक्ष एवं समुद्र के क्षुब्ध होने के पश्चात् संवत्सर का प्रादुर्भाव ब्रह्म की प्रेरणा से हुआ। इसी मंत्र में आगे कहा गया है कि संवत्सर के प्रादुर्भाव के बाद अहोरात्र, मास, वर्ष, युग, कल्प इत्यादि के रूप में काल गणना प्रारम्भ हुई। कुछ समय के बाद इस कालगणना के दो रूप हो गये, एक सौर और दूसरा चान्द्र। चान्द्र पद्धति के अनुसार नव वर्ष का प्रारम्भ चैत्र सुदी प्रतिपदा से और सौर पद्धति से नव वर्ष का प्रारम्भ मेष संक्रान्ति प्रथम वैशाख से होता है। संसार के अधिकांश देशों में सौर संवत्सर ही प्रचलित है। भारत के भी अधिकाँश प्रदेशों में सौर वर्ष का ही प्रचलन है। ऐतिहासिक दृष्टि से इस सौर वर्ष का राजा विक्रमादित्य द्वारा भारत में विदेशी आक्रान्ताओं की पराजय और यहां से खदेड़ देने के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शौर्य और वीर कार्य के साथ सम्बद्ध कर दिया गया है। इस प्रकार वैशाखी का पर्व विक्रमी संवत् के साथ गुंथा हुआ है। दक्षिण में इसे शालीवाहन शक संवत् नाम दिया गया है।

कृषि और=ऋतु से सम्बद्ध—वैशाखी

भारत कृषि प्रधान देश है। हमारे देश के कई प्रमुख पर्वों का सम्बन्ध कृषि के साथ है। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार भारत में ६ ऋतुओं का प्रत्यक्ष चक्र है, ऐसा अन्य देशों में प्रायः उपलब्ध नहीं है। यूरप, अमेरिका, अफ्रीका इत्यादि भूखंडों के कई क्षेत्रों में शीत और वर्षा ऋतु की प्रधानता है, कइयों में ग्रीष्म वर्षा की और कई प्रदेशों में शीत ग्रीष्म की, हेमन्त, वसन्त, शिशिर का अभाव है। भारत देश की यह अद्भुत ईश्वरीय देन है कि यहाँ छओं ऋतुओं का चक्र व्यवस्थित और स्पष्ट रूप से चलता है। इस दृष्टि से "वैशाखी" पर्व की विशिष्टता कृषि और ऋतुपरिवर्तन दोनों से सम्बद्ध है। वैशाखी के दिन रबी की नयी फसल—विशषत: गेहूं—कट कर किसान के कोठों में आ जाती है। अपने घोर परिश्रम को इस अन्न के रूप में सफल देख उसका हर्षोन्मत्त हो जाना स्वाभाविक ही है। पर, विना यज्ञ में आहुति दिये इस नवान्न का उपयोग कैसे किया जा सकता है। इसलिए वैशाखी पर्व पर नव-सस्येष्टि का विधान है। नव वर्ष का प्रथम दिन होने, ऋतुओं की दृष्टि से ग्रीष्म ऋतु के प्रारम्भ होने और अयन की दृष्टि से सूर्य के दक्षिणायान की ओर प्रविष्ट होने से वैशाखी को मूर्धन्य पर्व का रूप आर्य सभ्यता में दिया गया है।

नव वर्ष का स्वागत

हिन्दी के प्रमुख कवि के शब्दों में इस नव-संवत्सर दिवस का स्वागत इस प्रकार किया जाता है:—

(१) स्वस्ति महज्जन ! स्वागत सज्जन ! आशाभाजन प्यारे !
नव संवत्सरं ! समय राज के वत्स रसाल दुलारे !
स्वागत आगामिनी भामिनी के प्रिय बालक वारे !
स्वागत, स्वागत ! स्वस्ति नवागत आदर योग्य हमारे !

(२) स्वागत नूतन वर्ष ! समयद्रुम की नवशाखा !
स्वागत वर्ष नवीन ! जगत् जन की अभिलाषा !
स्वागत दर्शन-योग्य मान्य नूतन अभ्यागत !
स्वागत प्यारे व्यक्ति ! अनोखे स्वागत ! स्वागत !!

धार्मिक अनुष्ठान के रूप में

धार्मिक अनुष्ठान के रूप में वैशाखी पर्व को मनाने के लिए सामूहिक रूप से दैनिक यज्ञ के अतिरिक्त यह नव वर्ष सबके लिए कल्याण मय हो-निम्न मंत्रों की आहुति दी जानी चाहिएं—!

(१) संवत्सरोऽसिपरिवत्सरोऽसीदावत्सरोऽसीद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि। उपसस्मेकल्पन्तामहोराभे कल्पन्तामर्द्धमासासो कल्पन्नां यासाओ कल्पन्तामृतस्मे कल्पन्ता ऽ संवत्सरस्ते कल्पताम्। प्रेत्यऽएत्यै संचाञ्च प्रचसमूप। सुपर्ण चिदासि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवः सीद ।। यजु० २७।४५

(२) यस्यान्मासा निर्मिता स्त्रिंशदरः संवत्सरो यस्यान्निर्मितो द्वादशारः। अहोराश्रा यं परियन्तो ना पुस्ते नौदनेनाति तराणि मृत्युम् ।। अथर्व ४।३५।४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋषिदयान्दकृत संस्कारविधिके अनुसार

नवसस्यष्टि की दृष्टि से निम्न दो मंत्र से भी आहुति दी जानी चाहिए।

(१) ओ३म्। यन्मे किंचिदयेष्टिसतमस्थिन् कर्मणीय वृत्रहन्। तन्मे सर्व ँ समृध्यतां जीवत: शरद: शतम्।

(२) ओ३म् सम्पत्ति भूति भूं मिर्वृष्टि ज्यैष्ठ- य ँ श्रैष्ठस्य ँ श्री प्रजामिहावनु॥

(पारस्कर का० २। कं १७। ८-९)

पर्व को सामाजिक रूप दिया जाए

इस पर्व का सामाजिक रूप भी उल्लेखनीय है। इसी भावना को पुष्ट और दृढ़ करने के लिए आर्य समाज की दो मूर्धन्य संस्थाओं गुरुकुल विश्व विद्यालय काँगड़ी और गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के वार्षिक समारोह इसी दिन मनाये जाते हैं। कई आर्यसमाजों और अन्य सामाजिक संस्थाओं के उत्सव भी इसी दिन होते हैं। इस सामाजिक रूप को अधिक आकृष्ट बनाने के लिए इस दिन सार्वजनिक खेल-कूद, भाषण इत्यादि प्रतियोगिताएं और सम्मिलित प्रीतिभोज, वनयात्रा (पिक-निक) हो तथा कृषि से सम्बद्ध अन्न-फल, हल यंत्र, पशु इत्यादि की प्रदर्शनी व मेलों का आयोजन हो।

इस दिन की एक अन्य ऐतिहासिक घटना का भी उल्लेख यहाँ आवश्यक है— वह है खालसा पन्थ का जन्म। गुरुगोविन्द सिंह ने आनन्दपुर में इसी पर्व पर सिख सम्प्रदाय को सैनिक रूप देने के लिए "खालसा पन्थ" का प्रारम्भ किया था। वस्तुत: पंजाब के इतिहास परम्परा और गौरव का प्रतीक वैशाखी पर्व है।

एक नेता को किसी सभा में भाषण देने के लिए मजबूर किया गया। उसने मंच पर आकर कहा—"भाईयो और बहनो, क्या आप जानते हैं कि मैं किस विषय पर बोलने जा रहा हूं?" "नहीं, नहीं!" श्रोताओं ने कहा। तब नेता ने कहा—"यदि आप नहीं जानते, तो मेरे बोलने का क्या फायदा।" और वह मंच से नीचे उतर आया। श्रोता चिल्लाये और उन्होंने नेता को मंच पर बुलाया!

नेता ने फिर कहा—"भाइयो और बहनो, क्या आप जानते हैं कि मैं किस विषय पर बोलने जा रहा हूं?" इस बार भीड़ चिल्लायी—"हां, हम जानते हैं।" नेता ने कहा —"अगर आप जानते हैं, तो मेरे बोलने का क्या फायदा!" और वह मंच से नीचे उतर गया। लोग चिल्लाए और उन्होंने फिर से नेता को मंच पर बुलाया।

इस बार फिर नेता ने कहा "भाईयो और बहनो, क्या आप जानते हैं कि मैं किस विषय पर बोलने जा रहा हूं?" अब श्रोता चतुर हो गये थे! आधे श्रोताओं ने कहा—"हां, हम जानते हैं!" बाकी ने कहा— "नहीं, हम नहीं जानते।" पर नेता सबसे चतुर था। उसने कहा – "कृपया जो जानते हैं, वे उन्हें बता दें जो नहीं जानते।" और वह मंच से नीचे आ गया!

—नवराज सिंह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

युगारम्भ

—वैद्य गुरुदत्त

✳

जहाँ तक दृष्टि जाती थी, जल ही जल दिखाई पड़ रहा था। केवलमात्र एक बड़ा-सा बजरा था जो इस जल पर तैर रहा था।

बजरा चारों ओर से बन्द था। इसमें खिड़कियाँ थी, परन्तु वे इच्छानुसार अथवा बन्द की जा सकती थीं। बजरे के भीतर कई कमरे थे और उनमें कई प्राणी थे। इन सब प्राणियों में एक अति ओजस्वी, कान्तिमान्, तपस्वी और तेज से युक्त पुरुष भी था। बजरे में उपस्थित सब प्राणी उसकी ओर आदर और मान की दृष्टि से देखते थे।

वह पुरुष विवस्वान का वंशज मनु था। वास्तव में यह बजरा इसी प्रतापी राजा के पुरुषार्थ का परिणाम था।

एक दिन अपने राज्य कार्य से अवकाश पा मनु जल-विहार को निकल गए। वन में उन्हें एक विद्वान् पुरुष मिला। वह महाराज को आशीर्वाद देकर बोला, "महाराज! कुशल मंगल से तो हैं?"

"भगवन्! कुशल मंगल तो दिखाई नहीं देता। मेरे सब प्रकार के प्रयत्न करने पर भी ब्राह्मण अपने लिये स्वामी ढूंढ़ते देखे जा रहे हैं। क्षत्रिय दुकानें लगा बैठे हैं, शूद्र राज्याधिकारी बन गये हैं और वैश्य घर छोड़ वनों में वेदाध्ययन में लीन हो रहे हैं।"

वह व्यक्ति महाराज मनु के साथ-साथ टहलता हुआ पूछने लगा, "तो इससे क्या हानि हो रही है, महाराज! जो जैसे कार्य करेगा, वैसे ही वर्ण में वह कहायेगा।"

"नहीं भगवन्! यह इस प्रकार नहीं। मनुष्य का वर्ण कर्म से अवश्य निश्चय होता है, परन्तु कर्म स्वभाव और प्रवृत्ति से निश्चय होना चाहिये।

"जब क्षत्रिय प्रवृत्ति का व्यक्ति बनिये की दुकान करने लगता है तो वह अपना माल बलपूर्वक बेचने लगता है। यदि कोई कह दे कि उसकी दुकान का माल घटिया है तो वह कहने वाले से भिड़ जाता है। इस प्रकार वह घटिया माल बढ़िया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहकर बेचना चाहता है और यदि ग्राहक न ले तो उसकी जेब में हाथ डाल उसके पैसे निकाल लेता है और माल उसके सिर पर लाद देता है ।"

उस विद्वान् को बात समझ में आने लगी थी। उसने कह दिया, "पर आप तो यहाँ के शासक हैं। आप इसका प्रवन्ध क्यों नहीं करते ?"

"भगवन् ! अपनी ओर से कर रहा हूं, परन्तु किसी एक स्थान पर खराबी हो तो दूर करूँ। मेरे सैनिक ब्राह्मण प्रवृत्ति के हैं। वे जब किसी ऐसे दुकानदार को पकड़ने जाते हैं तो उस पर दया भाव दिखाने लगते हैं और उसको बिना पकड़े यह कह लौटा आते हैं कि वह फिर ऐसा नहीं करेगा ।

"महाराज ! मेरा पाचक है। वह क्षत्रिय स्वभाव का व्यक्ति है। जब कभी खाना बिगड़ जाता है तो मुझ ही को डाँटने लगता है। कहता है, 'महाराज ! आपके मुख का स्वाद बिगड़ गया है जो इतना स्वादिष्ट भोजन आपको सुहाता नहीं ।"

इस पर वह व्यक्ति पूछने लगा, "तो फिर क्या करने का विचार है ?"

"मैं अपने स्वधर्म का पालन कर रहा हूं। वह यह कि सबको सद्बुद्धि देने का यत्न करता रहता हूं। इस पर भी कोई मानता नहीं। कारण यह कि सब व्यवस्था बिगड़ गई है। सब अपने स्वभाव के विपरीत काम करने लगे हैं। और कुछ भी सम्पन्न नहीं हो रहा है। घोर पाप और अनचार हो रहा है ।

"मुझे एक महर्षि ने बताता है कि ये बातें युगान्त प्रलय के लक्षण हैं। इस कारण मुझे प्रलय काल में अपने बचने का प्रवन्ध करना चाहिए। सो मैं कर रहा हूं।"

"क्या प्रवन्ध कर रहे हैं राजन् !"

"बहुत तीव्र विनाशकारी ताप होने वाला है। शीघ्र ही अन्तरिक्ष में सात सूर्य एक साथ पृथ्वी के समीप आने वाले हैं इससे भूमि पर सब कुछ शुष्क हो जायेगा और नष्ट हो जायेगा। मैंने उस ताप और खुश्की से बचने का उपाय किया है। एक बहुत बड़ी नौका बनाई है। उस नौका को सागर में छोड़ उसी में जाकर रहूँगा। नौका जल-मग्न हो सकेगी परन्तु नष्ट नहीं होगी। आशा है कि सागर के सूखने से पूर्व ही सूर्य अपने-अपने मार्ग पर चलते हुए दूर-दूर होने लगेंगे। तब मैं नौका को जल के ऊपर ले आऊंगा और फिर घोर वर्षा होगी। सागर अपनी सीमाओं को पार कर पृथ्वी को जल मग्न कर देंगे और मेरी नौका जल पर तैरती रहेगी। वर्षा के उपरान्त जल सूखने लगेगा और भूमि जल से निकलने लगेगी। तब मैं अपनी नौका से बाहर निकल आऊँगा और नई सृष्टि उत्पन्न करूँगा। उस नई सृष्टि में व्यवस्था रखने का यत्न करूँगा।"

"तो महाराज ! यह कब होगा ?"

"वह समय समीप ही है।"

"और राजन् ! किस किस को उस नौका में साथ ले जाने वाले हैं ?"

"मैं तो अपने मन से बीस प्राणियों को ले चलने वाला हूं।"

"तो इसमें इक्कीस नहीं हो सकते ?,'

"तो आप अपने लिए पूछ रहे हैं ?"

"हाँ, राजन् !"

"मेरी ओर से स्वीकृति है। यदि आप उस नौका का कठोर जीवन चला सकें तो आ सकते हैं।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"कहाँ है नौका आपकी ?"

"इस समय गंगा में है, परन्तु उसे अब सागर में ले जाया जा रहा है।"

यह विद्वान् पुरुष अंगिरस था।

पण्डित अंगिरस को विश्वास नहीं आया कि प्रलय इतनी समीप है। लोग तो रंगेरलियाँ मनाते दिखाई देते थे।

पण्डित अंगिरस उस समय नौका में सवार हो गया, तब वह गंगा से समुद्र की ओर ले जाई जा रही थी। परन्तु वह नौका से बाहर भ्रमण के लिये आता-जाता रहता था। इसे मनो-विनोद समझता था और ठीक उस दिन जब नौका सागर में निमग्न होने वाली थी, वह नौका से कहीं दूर घूम रहा था। वह नौका के चलने के समय वहाँ पहुंच नहीं सका।

इस समय सात सूर्यों के ताप से पृथ्वी तपने लगी थी। केवल मनु महाराज, सात ऋषि और उन सबकी पत्नियाँ नौका में थीं। जब नौका द्वार बन्द कर गहरे सागर में निमग्न की जाने वाली थी, नौका के चालक 'मकर' ने कहा, महाराज ! "पण्डित अंगिरस लापता हैं।"

"कब से लापता हैं ?"

"आज प्रातःकाल से गये हुए हैं। मैंने कहा भी था कि उन्हें मध्याह्न से पूर्व आ जाना चाहिए।

मनु महाराज ने आकाश की ओर सूर्यों को समीप और समीप आते देखा और कह दिया, "उसके भाग्य में इतने तीव्र ताप से बचना नहीं लिखा।"

सब नौका में चले गए। द्वार बन्द कर दिये गए और नौका को गहरे सागर में निमग्न कर दिया गया।

जब जल वहाँ भी सूखने लगा तो नौका को और गहरे जल में ले जाया गया। चालीस दिन तक प्रलय की अग्नि तपती रही। तब तक नौका सागर-निमग्न रही।

सूर्य दूर-दूर हटने लगे और फिर आकाश-मण्डल में गया जल, बादल बन बरसने लगा। सागरों में जल भरने लगा और एक समय आया कि पूर्ण पृथ्वी जल निमग्न हो गई। अन्तरिक्ष का सब जल भूमि पर आ गया। इस समय वर्षा बन्द हो गई। इस बात का ज्ञान नौका में होते ही नौका जल के ऊपर लाई गाई। सूर्यों के ताप को पृथ्वी पर के सब जीव-जन्तुओं के विनष्ट करने में चालीस दिन लगे और वहाँ के पुनः पृथ्वी पर ले जाने में एक सौ दिन लगे।

अब मनु महाराज अपना बजरा लेकर जल के ऊपर आ गए। जल पर तैरते हुए उन्होंने बजरे की खिड़कियाँ खोल दीं। बजरा ठाटें मारते हुए सागर की उत्ताल तरंगों पर डोलने लगा। जिधर भी दृष्टि जाती थी, पर्वत समान ऊँची उठती लहरें ही दिखाई देती थीं।

अभी बजरे को सागर में ऊपर के जल पर लाना सुखप्रद नहीं माना गया। कुछ काल तक विक्षुब्ध सागर का दृश्य देख मनु महाराज पुनः खिड़कियाँ बन्द कर जल निमग्न हो गए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अथाह और असीम सागर को देख सब उस सृष्टि में विलीन हो जाने पर शोक और विस्मय अनुभव कर रहे थे। सबसे अधिक शोकग्रस्त महाराज मनु थे। वे गम्भीर विचार में लीन उस दृश्य को स्मरण कर रहे थे, जो उस प्रलय के पूर्व का था।

उनकी राजधानी में जन संख्या इतनी बढ़ गई थी कि गालियों बाजारों और घरों में कन्धे से कन्धा भिड़ता था। परिवारों में पुरुष-स्त्री समागम को चोरी रखना कठिन हो गया था। और इन्द्रियों पर नियन्त्रण व्यर्थ माना जाने लगा था तथा सम्भव भी नहीं रहा था। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार व्यापक दिखाई देने लगे थे। बलवे होते थे और एक-एक बलवे में सहस्रों मारे जाते थे, परन्तु फिर भी जन-संख्या कम नहीं होती थी।

मनु को शोकाकुल देख महर्षि भृगु ने सान्त्वना देने के लिए कह दिया, "राजन्! शोक करने की आवश्यकता नहीं। यह ऐसा होना ही था। आपने भी तो सत्य हृदय से यत्न किया था कि प्रजा धर्म का पालन करे, परन्तु कोई मानता नही हीं था। युगों के अन्त में यह होता ही है।"

इसी प्रकार चर्चा होती रहती थी। एक सौ दिन और व्यतीत हुए तो वायु शान्त हुई और सागर शान्त अवस्था में आ गया। इस बार बजरा जल के बाहर लाया गया तो यह देखा जाने लगा कि कहीं भूमि जल से बाहर निकली है अथवा नहीं।

सबसे पहले महर्षि भृगु ने दूर, जल में से कमल समान पृथ्वी निकलती देखी। बजरा उधर ही ले जाया गया।

यह किसी पर्वत का शिखर था। वहां अभी भूमि वहुत कम थी। अतः बजरे में ही निवास रखा गया।

महर्षियों की व्यवस्थानुसार जल से बाहर निकल रही भूमि पर गेहूँ, ज्वार, ईख इत्यादि के बीज जो बजरे में सुरक्षित रखे हुए थे, निकालकर लगाने आरम्भ कर दिए।

ज्यों-ज्यों भूमि जल से निकलती गई' कृषि का कार्य विस्तृत किया जाने लगा। जल-प्लावन के उपरान्त भूमि वहुत उपजाऊ हो गई थी। एक-एक बीज में से तीन-तीन पेड़ फूटने लगे थे।

ज्यों ही पर्याप्त भूमि जल से बाहर निकली और उस पर पेड़ उगने लगे तो ऋषिगण अपनी-अपनी पत्नियों को लेकर बिखरने लगे। ये अपनी-अपनी कुटिया बना वन-उपवनों में रहने लगे।

अपनी कुटी में मनु और उसकी पत्नी मोहिनी रह गई थी। जब वे अकेले रह गए तो मनु ने कहा, "देवी! इस प्रकार अकेले रहते तो जीवन अकार्य जा रहा अनुभव होता है।"

मोहिनी हँस पड़ी। हँसते हुए बोली, "महाराज! पुरुष सृष्टि करने का बहाना कर ही तो अपनी वासनाओं की तृप्ति का आह्वान करता है।"

"तो क्या तुम यह अनुभव नहीं करतीं?"

"करती तो हूं। परन्तु मेरा कामना तो इस प्लावन से पहले भी थी। बजरे में रहते हुए भी थी और फिर इस भूमि खण्ड पर पहुंचे कई वर्ष हो गए हैं। इस सब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

काल में भी मैं अनेक बार वासनाभिभूत हुई थी, परन्तु यह सृष्टि का विधान है कि स्त्री पुरुष से नहीं कहती। वह पुरुष के कहने की प्रतीक्षा करती रहती है।"

"हाँ, देवी! यह विधाता का विधान है कि पुरुष अपनी ही धुन में मस्त रहता है और उसे वासना से पहले अपनी प्रजा की सुध आती है परन्तु विधाता ने प्रजा का मार्ग वासना ही बनाया है।

"ठीक है। महाराज को शासन करना है और शासन के लिए प्रजा की आवश्यकता है। प्रजा के निर्माण के लिए पत्नी की याद आ गई है।

मनु भी हँसने लगे। हँसकर बोले, "बात यह है, देवी! कि यह पृथ्वी जल से बाहर आ अब मीलों तक रहने योग्य हो गई है। यहां का जलवायु भी अब बहुत सुखप्रद और स्वास्थ्यप्रद है। ऐसी अवस्था में यह सष्टि तो उत्पन्न होगी। ईश्वर की कोई बात व्यर्थ नहीं होती। जब बननी है तो हम ही वह ईश्वरीय काम क्यों न आरम्भ कर दें?"

"और यदि मैं इंकार कर दूं तो क्या करेंगे आप और क्या करेगा ईश्वर?"

"हां। यह तो ठीक है कि मैं क्या करूँगा? मैं प्रजाविहीन रहूंगा, परन्तु परमात्मा की बात तो तुम्हारे इंकार से रुकेगी नहीं। यदि सृष्टि करनी हो होगी तो वह भूमि से पेड़ों की भाँति स्त्रियों की सृष्टि कर देगा। ऐसा कई बार पहले हो चुका है।"

परमात्मा की कर्तृत्व शक्ति से ब्रह्मा का प्रादुर्भाव हो जाता है और वह अपनी कल्पना शक्ति से ही सृष्टि की उत्पत्ति करने लगता है। उसके संकेत मात्र से पंच-भौतिक शरीर बनने लगते हैं। उनमें मन और इन्द्रियों का समावेश हो जाता है, तब जीवात्मा जो पृथ्वी पर जन्म लेने के लिए लालसा कर रहे होते हैं उन शरीरों में आकर रहने लगते हैं। इस प्रकार कई बार अमैथुनीय सृष्टि उत्पन्न हो चुकी है।"

"मुझे उस सृष्टि से कुछ भी सरोकार नहीं। सृष्टि के नाम से तो मेरी लालसा भी शिथिल पड़ जाती है। भाग्य की विडम्बना है, सृष्टि और फिर वही कुछ होने लगेगा जो प्लावन से पहले हो रहा था। पिता पुत्र का गला काटेगा, बहन भाई की हत्या करेगी, बच्चे पिता के धन की लालसा में पिता को मार डालेंगे और वे सब अनाचार फिर होंगे जो पहले होते थे।"

"मैं कैसे कह दूँ कि नहीं होंगे। हमारे वस में तो प्रजा निर्माण करना मात्र है, परन्तु जीवात्मा तो अपने-अपने पूर्व जन्म के कर्मों के अधीन आएगी और फिर उनका फल भोग करेगी।"

"तो महाराज! रहने दीजिए। अपने को काल का ग्रास होने दीजिये और प्रजा की लालसा को नियन्त्रण में रखिए।"

मनु समझ गया कि मोक्ष की प्राप्ति के लिए यत्न करना चाहिए। बहुत समय से जीवन चल रहा था। परन्तु समय चल नहीं सका। परिणाम वही हुआ जो विधाता का विधान था। मोहनी ने मनु को सन्तान दी। एक दो नहीं वरन् अनेक।

मोहिनी एक के उपरान्त दूसरी सन्तान उत्पन्न करने लगी। मनु ने मोहिनी को पाँच बच्चों से घिरे हुए और छठे को गोदी में ले दूध पिलाते देखा तो हँस पड़े। "देवी, क्या हो रहा है?" हँसते हुए मनु ने पूछ लिया।

"राजन्! आपकी प्रजा बन रही है। बिना प्रजा के राजा नहीं रहता न?"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋग्वेद का

अभीष्ट फलप्रद 'गो-सूक्त'

गो-सूक्त ऋग्वेद मण्डल ६, सूक्त २८ से उद्धृत किया गया है। प्रातः ही स्नानानन्तर इसका दैनिक पारायण अभीष्ट फलप्रदाता, गो रक्षा व्यापारवर्धक तथा कान्ति-शान्ति सम्वर्धक है। गोपाष्टमी के दिन इसके पाठ से विशिष्ट प्रेरणा प्राप्त होती है।

पहली ऋचा

"आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्र सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे।
प्रजावतीः पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः ॥ ॥१॥

इस ऋचा में ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि स्वस्थ सुन्दर बछड़ों वाली, श्वेत-पीत आदि भिन्न-भिन्न आकर्षक रंगों वाली, हृष्ट-पुष्ट, सुन्दर-सुडौल दुधारु गायें स्वच्छ चरागाहों में स्वच्छन्दतया चरें और प्रत्येक आर्य परिवार के घर बने गोठों (गोष्ठों) में सदा निवास करें। उनके दूध-दही-मक्खन-घी के सेवन से सबकी तृप्ति तथा कल्याण हो और हम उनके शुद्ध घृत आदि के द्वारा यज्ञ आदि शुभ कर्म करते हुए ईश की उपासना के फलस्वरूप दिन-दुगुने रात-चौगुने फलें-फूलें और गोमाता के सेवार्जित पुण्य के कारण प्रतिजन कल्याण के भागी बनें।

दूसरी ऋचा

इन्द्रो यज्वने पृणते च शिक्षत्युपेद् ददाति च न स्वं मुषायति।
भूयो भूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम् ॥२॥

इस ऋचा में यह भाव स्पष्ट किया गया है कि परमेश्वर (इन्द्र) गाय के पवित्र घृत आदि द्रव से यज्ञ करने वाले श्रद्धा-सम्पन्न देवपूजक, सत्संगी, ईश्वरभक्त-व्यक्ति को फलस्वरूपसर्वदा ही धन-धान्य, ऐश्वर्य विविध ऋद्धि-सिद्धि, ज्ञान तथा दिव्य-शक्ति से पूर्ण कर देता है और कभी भी याज्ञिक पुरुष को फलस्वरूप प्राप्त होने वाले विविध अभीष्ट पदार्थों व शक्तियों से वञ्चित नहीं होने देता; अपितु वह इन प्रदत्त विभूतियों को लगातार अधिकाधिक बढ़ाता ही रहता है और विशुद्ध गो-घृत आदि से यज्ञ करने तथा कराने वाले, समता के उपासक, अभिन्नता के पोषक याज्ञिक भक्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यक्ति को प्रभु अपना एक अभिन्न अङ्ग बना लेता है। अर्थात् गो-घृत-दुग्ध आदि के सेवन से तथा उनके द्वारा सम्पन्न यज्ञ आदि के सात्त्विक क्रियाकलापवश मानव जीवन्मुक्त हो सुखी हो जाता है।

तीसरी ऋचा

न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति।
देवांश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह ॥३॥

इस ऋचा में यजनशील गोपालक प्रभु से प्रार्थना करता है कि घृत आदि यज्ञ आदि निष्पादिका उसकी गायें कभी भी रोग-ग्रस्त न हों, न उन को चोर ही चुरा सकें और न कोई अवांछनीय हिंसक व्यक्ति उनको शस्त्र-प्रहार द्वारा पीड़ा ही पहुँचा सके; अपितु वह तथा उसकी भावी पीढ़ी भी आजीवन उनकी सेवा द्वारा पुण्य उपार्जन करे और यज्ञनिष्ठ उसका घर-बार जीवन-ज्योतिप्रद दुग्ध आदि पदार्थों से सदा ही भरपूर रहे।

चौथी ऋचा

न ता अर्वा रेणुककाटो अश्नुते न संस्कृतत्रमुपयन्ति ता अभि।
उरुगायमभयं तस्य ता अनु,गावो मर्तस्य विचरन्ति यज्वनः ॥४॥

इस ऋचा में गो-महिमा का प्रतिपादन किया गया है। युद्धार्थ उद्यत व सज्जित और खुरों की टाप से भूमि को कुरेद कर आकाश मण्डल को धूलि-धूसरित करने वाले प्रबल शक्तिशाली राष्ट्र-सेवक अश्व भी उत्कृष्टता में गोमाता की समता नहीं कर सकते। गाय, उसका दूध तथा तत्सम्बन्धित पदार्थों का दाता यज्ञनिष्ठ यजमान दान की महिमा के फलस्वरूप गोलोक व स्वर्गलोक प्राप्त करता है। सत्पात्र को दान की हुई तथा घृत आदि द्वारा यज्ञोपयोगी दुधारु गायें तथा उनके बछड़े-बछड़ियाँ सर्वथा सेवनीय व अवध्य होती हैं। अतः इस ऋचा के अन्तिम चरण में प्रार्थना की गई है कि दुग्ध आदि गव्य पदार्थों से तृप्त करने वाली यजमान की गायें निर्भीकतापूर्वक स्वच्छन्दतया विशाल स्वच्छ चरागाहों में चरें और अपनी स्थिति से घर-घर पवित्र करें।

पाँचवी ऋचा

गावो भगो गाव इन्द्रो मे अच्छान्गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः।
इमा या गावः स जनास इन्द्र इच्छामीद्धृदा मनसा चिदिन्द्रम् ॥५॥

इस ऋचा में यजमान व गोसेवक ईश-भक्त व्यक्ति गोवन की प्राप्ति व उस की वृद्धि के लिये अपने पवित्र सच्चे हृदय से परमेश्वर (इन्द्र) से प्रार्थना करता है कि उसकी गायें सर्वदा सुखी व दुधारु बनी रहें और वह गोसेवक व्यक्ति सर्वदा ही उनके घृत आदि द्वारा यज्ञ आदि शुभ कर्म करता हुआ सुखी रहे। कल्याणेच्छुक ईश-भक्त यजमान प्रण करता है कि वह यज्ञार्थ निकाले गये सोमरस से मिश्रित गो दुग्ध अथवा सोमरसरूपी गोदुग्ध से बनाये गये रुचिकर गव्य आदि पदार्थ द्वारा सर्वदा ही यज्ञ आदि शुभ कर्म का सम्पादन करता रहेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

छठवीं ऋचा

यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित्कृणुथा सुप्रतीकम् ।
भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद्वो वय उच्यते सभासु ।६।।

इस ऋचा से स्पष्ट है कि गायों के पवित्र दुग्धपान व घृत आदि सेवन से कृश मानव तथा निस्तेज व्यक्ति भी स्वस्थ, सुडौल, नीरोग, कान्तिमान् तथा ओजस्वी बन जाता है, मन्दमति प्रखर बुद्धि सम्पन्न हो जाता है और अकर्मठ व सुस्त चुस्त बन जाता है। जिस घर में गायें आनन्दित हो रंभाती हों, वह घर स्वर्गोपम है और गोविहीन घर भूतवास सम है। गायों के दूध बने घृत आदि से किये यज्ञों द्वारा की गई वृष्टि के फलस्वरूप सात्विक अन्न की प्राप्ति होती है। ऐसे अन्न के भक्षण से मनुष्य सात्त्विक, सदाचार-सम्पन्न व ज्ञानी हो जाता है।

सातवीं ऋचा

प्रजावतीः सूयवसं रिशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः ।
मा वः स्तेन ईशत माघशंसः परि वो हेती रुद्रस्य वृज्याः ।।७।।

इस ऋचा में गोमाताओं को सम्बोधित कर श्रद्धापूर्ण निवेदन किया गया है कि हे गोमाताओ! तुम अपने प्रियवत्सों सहित विशाल चरागाहों में स्वच्छ कोमल घास चरती हुई और वन्य तड़ाग आदि का जलपान करती हुई स्वच्छन्द तथा सुख-पूर्वक विचरण करो और सन्ध्या होने पर अपने-अपने गोठों में लौट आओ। इस ऋचा के तीसरे चरण में कालात्मक शासक नियामक ईश से प्रार्थना की गई है कि इन दिव्य उपकारी गायों को न तो कोई चुराने की हिम्मत तक करें और न इनको व्याघ्र-सिंह तथा अन्य हिंसक जीव और पिशाचवृत्ति निर्दय प्राणी तक भी किसी भी प्रकार से पीड़ा पहुँचा सकें अतः भगवान् से प्रार्थना है कि वह पूर्णतः रक्षा करे।

आठवीं ऋचा

उपेदमुपपर्चनमासु गोषूपपृच्यताम् ।
उप ऋषभस्य रेतस्युपेन्द्र तव वीर्ये ।।८।।

इस ऋचा में परमेश्वर से प्रार्थना की गई है कि गायें अत्यन्त शक्तिशाली सांडों के द्वारा गर्भ धारण कर बलवान् बछड़ों को उत्पन्न करें। फलतः बछड़े बड़े होकर राष्ट्रोपयोगी कृषि कार्य में पूर्णतः सहायक सिद्ध हो सकें और राष्ट्र सर्वदा ही धन-धान्य से पूर्ण रहे।

—विष्णु शर्मा शास्त्री

एम.ए, (संस्कृत, दर्शन, अंग्रेजी), पी-एच. डी. (अंग्रेजी)-
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अद्भुत बातें कुछ बड़ों की

विश्व विख्यात् उपन्यास है 'ला मिजराब्ली ।' इसके लेखक थे सुप्रसिद्ध फ्रैंच साहित्यकार विक्टर ह्यूगो । विश्वविख्यात् उपन्यास लेखक ह्यूगो की सनक भी विश्व में अनुपम ही थी । वह कभी भी बैठकर न लिखते थे । उन्होंने अपनी छाती की ऊंचाई तक की एक मेज वनाकर रखी थी । उसके समक्ष खड़े होकर लिखने के अभ्यस्त थे यह महान् लेखक और उनके लिखने का यह क्रम कभी-कभी १२-१२ घंटों तक अवाधित रहता था ।

\+ \+ \+

और ऐसी ही विचित्र आदत के घनी थे अमेरिका के विख्यात हास्य लेखक मार्क ट्वेन । जी हां, न तो वे बैठकर लिखने के आदी थे और न ही खड़े रहकर लिखने के ही अभ्यस्त । उनकी आदत थी ओंधे पड़कर लिखना । लिखते-लिखते निद्रा देवी उन्हें अपनी गोद में भी ले लेती थी किन्तु जब जागते तो पुनः औंधा लेट कर लिखना प्रारम्भ कर देते थे ।

\+ \+ \+

फ्राँस में एक और प्रमुख उपन्यास लेखक थे, नाम बालजक । उनकी आदत भी अनोखी थी । लिखते समय वह अपने समक्ष एक जलता हुआ दीपक रख लेते थे । उसके बिना वह एक अक्षर भी न लिख पाते थे । अपनी इसी आदत की बदौलत भरी दोपहरी में भी वे सामने जलता हुआ दीपक रखे बिना नहीं लिख पाते थे ।

\+ \+ \+

इसी आदत के साथ ही साथ बालजक की पेरिस नागरी के आंचल में स्थित तंग मकानों की अटारियों में बैठकर ही लेखन प्रेरणा जागती थी । लिखते समय वह साधुओं सरीखा एक चोला पहनना भी नहीं भूल पाता था । वह दर्जनों काफी के प्याले भी चढ़ा जाता था ।

\+ \+ \+

शायद आपने भी सुना हो कविवर शैले का नाम । किन्तु उनकी इस आदत के संबंध में संभवतः आपने नहीं सुना होगा कि वे काफी हाउसों में बैठकर ग्राहकों पर पाव रोटी के टुकड़े फेंक कर मारने में विचित्र आनन्द का अनुभव करते थे । जिस समय उनका निशाना सही बैठ जाता था तो वे हर्ष से उछल पड़ते थे ।

\+ \+ \+

फ्राँस में एक और नामी ग्रामी उपन्यासकार हुए हैं एमिल जोला । रात में जब-जब सैर करने को वह निकला करते थे तो मार्गों में लगी हुई बत्तियों को गिनना नहीं भूल पाते थे ।

जोला की मार्ग में लगी हुई बत्तियाँ गिनने की आदत थी तो आंग्ल साहित्यकार डाक्टर जान्सन घूमने निकलते तो मार्ग में मिलने वाले प्रत्येक खम्भे को छूते चला करते । यदि रास्ते की कोई बिना छुआ रह जाता तो वह तुरन्त वापस लौटते और नए सिरे से खम्भे की गिनती प्रारम्भ कर देते । उनकी यह मान्यता थी कि ऐसा करने से उनका चित्त खूब सावधान रहता है ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"दहेज उन्मूलन हेतु इच्छुक बन्धुओं से अपील"

बन्धुओ !

विवाह मानव जीवन का एक सर्वोत्कृष्ट यज्ञ है । दो आत्मायें अपना स्वतन्त्र अस्तित्व खोकर परस्पर एक दूसरे में विलीन होती हैं, पर विवाह शादियों में होने वाले अपव्यय ने अपने समाज की नैतिक व आर्थिक कमर तोड़कर रख दी है ।

इसके लिए लोग अपने बर्तन, कपड़े, जेवर, मकान, खेत बेच कर किसी प्रकार यह धन राशि जुटाते हैं और एकाध शादियों के बाद ही इतने खोखले व कर्जदार बन जाते हैं कि शेष बच्चों का विवाह करना उनके लिए अति कष्ट कारक बन जाता है। आर्थिक दृष्टि से खोखले गृहस्थ अपने परिवार की शिक्षा चिकित्सा पौष्टिक आहार जैसी आवश्यकताओं से वंचित रह जाते हैं, पर किया क्या जाय, दहेज मिश्रित ये खर्चीली शादियाँ जोंक की तरह हर परिवार का खून पी रही हैं ।

उपरोक्त परिस्थितियाँ आज की विवेकशीलता को चुनौती देती हैं कि वे इस हत्यारी कुप्रथा का उन्मूलन करने के लिए रोष पूर्वक उठ खड़े हों और इसको जड़ मूल से उखाड़ कर ही चैन लें । समय आ गया कि इस गलित कुष्ठ की चिकित्सा के लिए कुछ बड़े व साहस पूर्ण कदम उठाये जाँय । इस कुप्रथा से हर कोई परेशान है हर व्यक्ति छोड़ना चाहता है पर आगे बढ़ने का साहस न होने से मनसूबे जहाँ के तहाँ धरे रह जाते हैं । यदि हम सामूहिक रूप से इस आन्दोलन को आरम्भ करें तो लाखों बन्धुओं की सहानुभूति जागेगी जिससे हम दहेज उन्मूलन ही नहीं वरन् आदर्श-मय शादियों का प्रचलन भी कर सकेंगे । अपना आन्दोलन त्याग की कसौटी पर ही आगे बढ़ सकता है । तो आइये······

हम चाहते हैं कि—(१) आप सभी दहेज उन्मूलन समिति के सदस्य बनें । जिससे हम एक विचार के ज्यादे से ज्यादे व्यक्तियों का जनमत प्राप्त कर सकें ।

(२) अपने विचारों का प्रचार इस प्रकार हो कि कोई जिला कोई गाँव व कोई घर हमारे विचारों से वंचित न रह जाय ।

(३) इसके लिए हमें कर्मठ एवं स्वयं सेवी कार्य कर्त्ताओं की जरूरत है जो भाई अपना समय इस पुनीत कार्य में देना चाहें समिति को अवगत करावें ।

(४) इस कार्य में हमें धन की अति आवश्यकता है आप एक पैसा दें या १००० रुपये पर कुछ न कुछ आहुति अवश्य भेजिए। देखिये आपका एक पैसा भी इस कार्य में कितनी प्रगति लाता है कहीं ऐसा न हो कि धन के अभाव में हमें हतोत्साहित होना पड़े ।

(५) लेख व कविता लिखने वाले प्रत्येक भाई बहनों से निवेदन है कि दहेज प्रथा पर अपने विचार अवश्य भेजें जिसे हम साहित्य द्वारा प्रकाशन कर अन्य बन्धुओं को अवगत करा सकें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(६) जो भी अभिभावक अपने बच्चों की शादियाँ दहेज प्रथा को त्याग कर करना चाहें वे अपने विचार समिति को अवश्य भेजें जिससे हम उनके विचारों को प्रकाशित कर औरों तक पहुँचा सकें व अन्य लोगों को उदाहरणार्थ बल मिल सके।

(७) युवकों से विशेषकर अपील है कि वे इस आन्दोलन में हर प्रकार की आहुति प्रदान कर समिति के पवित्र सामाजिक क्रांति में योग दान दें।

(८) यदि आपका समुचित सहयोग मिल सका तो हम एक स्थायी कार्यालय एवं मासिक पत्रिका का आयोजन कर इस दिशा में कार्य प्रारम्भ कर देंगे।

समाज की सुकुमारी कलियाँ एवं वयस्क कन्यायें उस दिन की प्रतीक्षा में आँख पसारे बैठी हैं जब इस भारत-भूमि में ऐसे नररत्न उत्पन्न होंगे जो इस हत्यारे-दहेज प्रथा से समाज का पिंड छुड़ाने के लिए आगे बढ़ कर अपनी महानता का परिचय देवेंगे।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि उपरोक्त पवित्र कार्य में आप सबका सहयोग सराहनीय रहेगा।

पता

बी. २२/१५७ ई—१

रमापति भवन

विनायका, भेलूपुर, वाराणसी

निवेदक

राजेन्द्र प्रसाद सिंह

व्यवस्थापक

दहेज उन्मूलन समिति,

वाराणसी—मीरजापुर

सच्चे विद्यार्थी के लक्षण

१—विद्यार्थी की चेष्टा कौए जैसी होनी चाहिए। जैसे कौआ अपने किसी काम के लिए चेष्टा करता है इसी प्रकार विद्यार्थी को सफलता प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम करना चाहिए।

२—विद्यार्थी का ध्यान बगुले जैसा होना चाहिए जैसे बगुला शिकार करने के लिए ध्यान-मग्न होकर खड़ा रहता है। इसी प्रकार विद्यार्थी को अपने गुरु-जनों की बात को ध्यान पूर्वक सुनना चाहिए।

३—विद्यार्थी की नींद कुत्ते जैसी होनी चाहिए। जिस प्रकार कुत्ता बहुत धीमी आवाज होने से जाग जाता है। इसी प्रकार विद्यार्थी को जाग जाना चाहिए।

४—विद्यार्थी को अल्पहारी होना चाहिए। अर्थात् थोड़ा भोजन ग्रहण करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से दिमाग ताजा रहता है।

५—विद्यार्थी को ब्रह्मचारी होना चाहिए। अर्थात् जब तक विद्यार्थी को विद्या ग्रहण करनी हो तब तक गृहस्थ से सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए। विद्यार्थी के लक्षण और भी बहुत हैं तथा विद्यार्थी के इन पांच लक्षणों का श्लोक भी है :—

काक चेष्टा, वको ध्यानम्, स्वान निद्रा।
अल्पहारी, ब्रह्मचारी, विद्यार्थी पंचलक्षणम्॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या आप जानते हैं ? विश्व में प्रथम

१. सबसे बड़ा दिन	२१ जून
२. सबसे छोटा दिन	२२ दिसम्बर
३. सबसे ऊंचा शहर	फारी (तिब्बत) १४,३०० फुट
४. सबसे ऊंची चोटी	माऊण्ट एवरेस्ट २९,०२८ फुट
५. सबसे बड़ी नदी	एमेजन (द० अमेरिका)
६. सबसे ऊंचा देश	तिब्बत
७. सबसे बड़ा देश	सोवियत संघ
८. सबसे लम्बा रेलवे पुल	लोग्रर जम्बेसी
९. सबसे बड़ा पुल	आकलेन्ड ब्रिज
१०. सबसे बड़ा बांध	इन्मुरी
११. सबसे ऊंचा मीनार	इफट टावर (फ्रान्स)
१२. सबसे बड़ा महल	बैटिकन (इटली)
१३. सबसे बड़ा गुम्बद	गोल गुम्बद (भारत)
१४. सबसे बड़ा पार्क	यैलो स्टोन नेशनल पार्क
१५. सबसे बड़ा डेल्टा	सुन्दरवन (भारत)
१६. सबसे ऊंची इमारत	स्टेट एम्पायर भवन
१७. सबसे बड़ा महाद्वीप	एशिया
१८. सबसे बड़ी सुरंग	टाना (जापान) ३।। मील
१९. सबसे बड़ा पक्षी	शुतुरमुर्ग
२०. सबसे बड़ी लायब्रेरी	नेशनल कीव लायब्रेरी

दहेज बन्द कीजिए

(१) नारी उत्थान के लिये।

(२) योग्यतम एवं आदर्शमय शादियों के लिये।

(३) खर्चीली शादियों से बचने के लिए।

(४) परिवारिक उन्नति के लिये।

(५) नारी जाति के प्रति अपनी श्रद्धा एवं उदारता प्रदर्शित करने के लिए।

(६) समाज को इस प्राण घातक दल दल से निकालने के लिए! दहेज जैसी राक्षसी प्रथा का बहिष्कार कीजिये। क्या आप इस अमानुषिक प्रथा को बंद करने के लिए कुछ नहीं कर सकते?

बी २२/१५७ ई १-विनायका
भेलूपुर, वाराणसी

व्यवस्थापक
दहेज उन्मूलन समिति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद में नारी का अधिकार

आज का युग जागृति का युग है, अधिकारों का युग है, नर, नारी, छात्र, कर्मचारी, अधिकारी सभी को अपने-अपने अधिकारों की चिंता है। उसको पाने के लिए सभी उन्मत्त के समान भाग रहे हैं।

नारी भी पीछे नहीं रही, वही नारी कभी जो घर की चार दीवारी में बंद रह कर असूर्यम्पश्या कहलाती थी। आज सभी क्षेत्रों में देदीप्यमान हो रही है, स्कूलों; कालेजों, दफ्तरों, दुकानों प्रदर्शनियों सभी में उसका बोलबाला है। ऊँची-ऊंची डिगरियां लेकर वह पुरुषों को भी पछाड़ रही है।

तनिक ठहर तो सही, भावुक बाले! इस भागा-भागी में तू अपना कुछ पीछे तो नहीं छोड़ आई। इस अधिकार प्राप्ति की होड़ में कहीं अपने मूल अधिकारों से तो वंचित नहीं हो रही?

आओ बहनो, तनिक ईश्वर की अमरवाणी, वेद की शरण में चलें और देखें कि वह हमारे अधिकारों के विषय में क्या कहता है।

देखिए—अपने भरे पूरे घर में रहती हुई नारी क्या विचार करती है?

"अहं केतुरहं मूर्धहमुग्रा विवाचनी
ममेदनु क्रतुं पतिः सेहनापा उपाचरेत् ऋ. १०।१५९।२॥

अर्थात्—मैं ज्ञानवती हूँ, सुशिक्षिता हूं इसलिए मैं घर में मुख्य हूँ। मैं धैर्य वाली हूँ, भाषण देने वाली हूँ, शत्रुओं का नाश करने वाली हूं और चाहती हूं कि पति मेरे अनुकूल रह कर ही सब कार्य करे।

देखा आपने, आपको शिक्षा का, भाषण का, युद्ध का सभी अधिकार प्राप्त हैं। घर में रह कर पति पर शासन करने का अधिकार भी प्राप्त है।

वेद कहता है कि नारी ऊंची से ऊंची शिक्षा प्राप्त करके उत्तम गुणों वाली बने। अपने घर की रानी हो-आवश्यकता पड़ने पर घर से बाहर निकल भाषण भी दे सकती है और शत्रुओं का नाश भी कर सकती है। धैर्य पूर्वक अन्य सामाजिक कार्य भी कर सकती है। पर इसी के साथ वेद ने स्त्री के लिए कुछ मर्यादाएं भी निर्धारित की हैं। जिसको ध्यान में रखकर आज की नारी पथभ्रष्ट होने से बच सकती है। विषयलोलुप नर की भोगलिप्सा से अपने को बचा कर अपने गौरव को अक्षुण्ण बना सकती है। वेद कहता है:—

"अधः पश्यस्व मोपरि रक्तरा पादकौ हर।
मा ते कशप्लकौ दृशन् स्त्रीहि ब्रह्मा बभूविथ्य ऋ० ८।३३।१९॥

अर्थात् ऐ नारी! नीचे देख, गम्भीरता से पांव रखकर चल, तेरे अंग किसी को दिखाई न दें! तू ब्रह्म का रूप है। तनिक विचार करें तो ज्ञात होता है कि इस मन्त्र में जहाँ नारी को श्रेष्ठ ब्रह्म की उपाधि दी है वहां उसके अपने कोमल तथा सुन्दर शरीर पर रोक लगा दी है। आज की तथाकथित. प्रगतिशील मेरी बहनों को कदाचित् यह बात बड़ी दकियानसी और अपमानजनक लगेगी, पर मैं पूछती हूं कि यदि भगवान ने हमें सुन्दरता दी है तो क्या उसे सम्भालकर रखने की शिक्षा देना बुरा है—

आज सिनेमाओं, होटलों, बाजारों, प्रदर्शनियों में अपने सौन्दर्य को खुले आम लुटाने वाली नारी क्या अधिक गौरवमय बन रही है? इस प्रक्रिया से क्या वह पुनः पुरुष की भोगवस्तु बन कर अपने गृहणी के उच्च पद से पतित नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हो रही? समाचार पत्रों में नित्य ही नारी के इस भाव के फलस्वरूप उसकी दुर्दशा की झांकियां दिखाई देती हैं। पुरुष ने आज उसे अपने आनन्द का ही नहीं, व्यापार का साधन मान लिया है। एक नारी जब एक होटल में अथवा रंग मंच पर अपने शरीर का नग्न प्रदर्शन करती है तो अनेकों लोलुप आंखें उसको निहारती हैं, तालियां बजती हैं, अट्टहास होते हैं, । नारी समझती है कि यह उसका सम्मान है। परन्तु इस सम्मान के पर्दे के पीछे के वीभत्स दृश्यों का कदाचित् उन दर्शकों को अनुमान नहीं होता जो आज की नारी को अपने पद से पतित करके पाप,घृणा और नाश के गहरे गर्त्त में गिरा रहे हैं। हमारी भोली-भाली बालाएं ऐसी ही नारियों को अपना आदर्श मान कर अपनी वेषभूषा में लज्जा का परित्याग करती जा रही हैं। उत्तरीय दुपट्टा, अथवा चुन्नी जो कि नारी की शोभा और उसके नारीत्व का प्रतीक माना जाता है, नारी का जो आँचल बाल्यवस्था में अपनी आन का, युवावस्था में पति के गौरव का और प्रौढ़ावस्था में उसकी संतान का रक्षक था। आज पता नहीं हिमालय की किस गुफा में जा छिपा है। मुझे भय है कहीं गंगा के आँचल में ही लीन न हो जाए।

वेद की दृष्टि में नारी श्रेष्ठ पत्नी ही नहीं श्रेष्ठ माता भी है। राष्ट्र के लिए उच्च कोटि के नागरिक देना भी उसी का कर्त्तव्य है। वह कहती है :—

"मम पुत्रः शत्रु हणोऽथो मे दुहिता विराट्
उताहमस्मि सञ्जया पत्यो मे श्लोक उत्तमाः॥

कितना सुन्दर दृश्य! एक गृहस्थ का, जिसकी कल्पना एक वैदिक नारी करती है, वह कहती है मेरे पुत्र शत्रु नाशक हों, मेरी बेटियां अपने श्रेष्ठ गुणों से चमकने वाली हों, मेरा पति यशस्वी हो, इसी में मैं विजयिनी हूं।

तनिक निहारिए, विचारिए, नारी का गौरवमय अधिकार जो वेद ने इसे दिया है। ऐसे विचारोंवाली नारी न केवल घर की शासिका बन सकती है, वरन् राष्ट्र की भी निर्मात्री तथा शासिका है।

आज की फैशनपरस्ता आधुनिका नारी ने क्या दिया है राष्ट्र को? नित्य प्रति हड़तालें करने वाले, बसें जलाने वाले, तस्कर व्यापार तथा अपराधों में सहायक छात्र और होटलों, रेस्टोरेंटों में, अर्धनग्न शरीर से घूमने वाली छात्राएं? क्या यही है नारी का गौरव, क्या यही है—अपने अधिकारों का सदुपयोग?

वेद के इन मंत्रों में जहां नारी को दासी के पद से उठाकर रानी का पद दिया है वहाँ उसे वेश्या और पतिता होने से भी बचाया है। वेश्या शब्द बड़ा कठोर प्रतीत होता है परन्तु मैं पूछती हूं आज सिनेमाओं में, रेडियो में, टेली-विज़न में किसी पर भी —पुरुषों को प्रियतम कहने वाली नारी, प्रदर्शनियों में, दूकानों में, होटलों में, किसी भी धन देने वाले पुरुष की ओर प्रेम से निहारने वाली तथा अवसर मिलने पर उसकी अन्य नीच इच्छाओं की पूर्ति करने वाली नारी क्या वेश्या नहीं? सती साध्वी है? क्या भारतीय नारी है?

संभल जाओ बहनो! संभल जाओ, आ जाओ वेद की शरण में, आओ, अपना और अपनी संतान का भविष्य उज्ज्वल बनाओ, अपनी संस्कृति और देश को तस्करी और भ्रष्टाचार से बचाओ।

—प्रकाशवती शास्त्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद प्रचार यज्ञ में प्राप्त आहुतियां

●●●

१. श्री बलदेव वानप्रस्थी	चाँदपुर	५०१.००
२. श्री लाला वेलीराम जी	करनाल	२५०.००
३. ,, आर्य समाज	जामनगर	२५०.००
४. ,, प्रहलाद राय पचेरिया	बम्बई	२५०.००
५. ,, जगन्नाथ	आगरा	१६०.००
६. ,, सतीश चन्द्र धीर	लुधियाना	१५१.००
७. ,, बी० के०पारिख	अहमदाबाद	११४.००
८. स्त्री आर्य समाज	कलकत्ता	१००.००
९. ,, प्यारे लाल, कपूर चन्द	कोटा	९०.००
१०. ,, कमल कृष्ण	बम्बई	६५.००
११. ,, डी० सी अग्रवाल	पूना	५०.००
१२. ,, बृजलाल गुप्ता	टोहाना	५०.००
१३. गुप्त दान		५०.००
१४. बुधवार स्त्री सतसंग	दिल्ली	४०.००
१५. ,, सत्यप्रकाश	कुलड़ी	३१.००
१६. आर्य समाज	गंगानगर	३१.००
१७. लक्ष्मी इलैक्ट्रिक स्टोर	गंजपारा	३१.००
१८. दी० एल० सेठ	नई दिल्ली	३१.००
१९. ,, नानक चन्द	मेरठ	३०.००
२०. ,, मायावती	जयपुर	३०.००
२१. असम फ्लोर मिल्स	गोहाटी	३०.००
२२. ,, ओम प्रकाश	करनाल	३०.००
२३. ,, विद्याप्रकाश	बरौलीजाटा	३०.००
२४. ,, जुगत राम	रायपुर	२५.००
२५. ,, राम नारायण प्रसाद आर्य	नाथनगर	२५.००
२६. ,, कृष्ण चन्द्र जी		२५.००
२७. ,, रामयज्ञ देवराज	सरहिंद	२५.००
२८. ,, देव राज	दीनानगर	२५.००
२९. ,, सत्यपाल जुनेजा	संबलपुर	२५.००
३०. ,, वैद्य ज्ञानचन्द	जालन्धर	२५.००
३१. सांवरलाल रामुका	भागलपुर	२५.००
३२. ,, सी० के० पटेल एण्ड सन्स	बम्बई	२५.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३३. कुमारी नीलम बाला	रायपुर	२०.००
३४. ,, प्रकाश देव चौधरी		२०.००
३५. ,, अमरनाथ महाजन		२०.००
३६. ,, रोशनलाल जी	मेरठ	२०.००
३७. ,, मोहन लाल उपाध्याय	प्रतापगढ़	२०.००
३८. धर्मेन्द्र सिंह	धनबाद	२०.००
३९. ,, कृष्ण चन्द्र गुप्ता	कुआर्सी	२०.००
४०. ,, जीवनदास वैरागी	जोवट	२०.००
४१. राधेश्याम वस्त्र भंडार	गंगापुर	१९.५०
४२. द्वारकानाथ तलवार	सम्बलपुर,	१९.००
४३. ,, ओम प्रकाश	गुहाना	१८.००
४४. ,, राम लखन आर्य	पटना	१६.००
४५. आर्य रामरख पुरोहित	पीपाड़	१८.००
४६. ,, ओम प्रकाश	करनाल	१६.००
४७. रायल साइकिल स्टोर	जावरा	१५.००
४८. ,, मुरलीधर	नारनौल	१५.००
४९. ,, पूरालाल,सेवाराम आर्य	माकडोने	१५.००
५०. ,, जगदीश प्रसाद यादव	मेहसाना	१५.००
५१. ,, केशव लाल	सिरोही	१५.००
५२. ,, शिवदयाल आर्य	आमला	१५.००
५३. ,, मोहनलाल मेहता	नागपुर	१५.००
५४ ,, मामचन्द गुप्ता	सहारनपुर	१५.००
५५. ,, भँवर लाल आर्य	जयपुर	१५.००
५६. ,, राम भक्त लाल	लखावर	१५.००
५७. ,, नारायण दास	स्मायला	१५.००
५८. सूबेदार ताराचन्द धीमान	दिल्ली	१५.००
५९. अर्जुन जनरल स्टोर्स	शिवगंज	१३.००
६०. ,, मती रेखा देवी	जोधपुर	१३.००
६१. ,, आनन्द प्रकाश	मेरठ	१२.००
६२. ,, महेश चन्द्र गुप्ता	बम्बई	१२.००
६३. ,, जगदीश प्रसाद	राम स्नेही घाट	१२.००
६४. ,, सुभाष चन्द्र दीवान	फरीदाबाद	८.००
६५. ,, पदमा मित्तल	अमृतसर	८.००
६६. ,, अजीत सिंह ध्रुव	गिधपुर	८.००
६७. प्र० सं० विद्यालय	बारां	७.००
६८. ,, अखिलेश कुमार	मेरठ	७.००
६९. ,, राम चन्द्र	दुगस्ताऊ	७.००
७०. ,, राम चन्द्र यादव आर्य	नगौर	७.००
७१. ,, आर्य भिक्षु जी	मुगलसराय	२५१.००

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

७२. ,, मती दयावती बनाती	दिल्ली	२५.००
७३. ,, रामचन्द्र यादवार्य	नागौर	७.००
७४. ,, बलवीर सिंह	रोहतक	७.००
७५. ,, बलवीर सिंह	रोहतक	६.००
७६. ,, बलवीर सिंह	इस्मायाला	६.००
७७. ,, बलवीर सिंह आर्य	इस्मायला	६.००
७८. आर्य समाज	भागलपुर	६.००
७९. आर्य समाज	अलीगढ़	४.००
८०. ,, देवकी नन्दन सिंह	मुजफ्फरपुर	४.००
८१. हरिद्वार सिंह आर्य	गोरखपुर	४.००
८२. रामलाल शर्मा	बीकानेर	३.००
८३. बाबूलाल	टूंडला	३.००
८४. शिवराम बहल	मंडो	३.००
८५. नवल किशोर सिंह	समस्तीपुर	३.००
८६. शिवन्दास आर्य	सरदार नगर	३.००
८७. राम रूप नारायण मेहता		३.००
८८. गम्भीर राम आर्य	लावाबाजार	३.००
८९. सत्यनारायण यादव	कानपुर	३.००
९०. बिहारीलाल राठौर	झोंकर	२.००
९१. चन्द्र भान	जबलपुर	२.५०
९२. घोंडी उर्फ दयाराम	नांदेड़	२.५०
९३. प्रकाशदेव चौधरी	दिल्ली	२.५०
९४. वैद्य मूलशंकर	कच्छ	१.२५
९५. मौमराज जी	अहमदाबाद	१.२५

१) भेजने वालों की सूचि

१. रामानन्द गुप्त	देवरिया	२. ब्रजलाल आर्य	तिलक नगर
३. विद्यावती	कलानौर	४. लाजवन्ती	कलानौर
५. पार्वती	कलानौर	६. मनीराम चोहान	भोपाल
७. दयादास विद्यार्थी	रायपुर		ग्रामसेवक
८. श्री रामसिंह	इन्दौरा	९. श्री लेखराज	इन्दौरा

२) भेजने वालों की सूचि

१. श्री विश्वनाथ दत्त इलाहाबाद २. श्री मुन्नीलाल जी नवांशहर ३. श्री नागरी शंकरराव हैदराबाद ४. श्री सोमपाल जी बरेली ५. श्री आर० एस० गयुवाचमैन नान्देड़ ६. श्री जोधासिह आर्य किनगौड़ी ७. श्री तेज बहादुर पटेल देवरिया ८. श्री स्वामी सदानन्द सरस्वती कलानौर ९. श्री कौशल्या देवी कलानौर १०. श्री गणेशी बाई कलानौर ११. श्री काको बहन कलानौर १२. श्री कैलाशचन्द्र सेनोलिया खासौद-कला १३. श्री भक्तरामशर्मा सिववाँ बेट १४. श्री इन्द्रसिह अशोक नगर १५. श्री कैलाश चन्द्र सेगोलियाँ खरसौद कलां १६. श्री गनपतसिह आर्य कैरु १७. श्री हीरालाल असौजी १८. श्री मिश्री प्रसाद देवरिया १९. श्री सत्यपाल आर्य नवांशहर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२०. श्रीमती ज्ञानवती देवी फिरोजपुर २१. श्री लक्ष्मी नारायण गिलौला २२. श्री नारायण प्रसाद ग्वालियर २३. श्री एस० सी० पाटीदार अजँड़ २४. श्री के०पी० अत्री रुड़की २५. श्री सुभाष जी आर्य बीदर २६. श्री बद्रीप्रसाद अलवर २७. डा० ए० के० वर्मा खण्डवा २८. श्री शिवदास आर्य सरदार नगर २९. श्री महादेव प्रसाद आर्य कटैया माहे ३०. श्री कृष्ण प्रसाद कन्हाईपुर ३१. श्री रामचन्द्र आर्य अजमेर ३२. श्री धर्मपाल इन्दौरा ३३. श्री उद्धमसिंह इन्दौरा ३४. श्रीप्रकाश चन्द इन्दौरा ३५. श्री ईश्वर कुमार इन्दौरा ३६. श्री वीरबल शर्मा इन्दौरा ३७. श्री त्रिलोक चन्द जयपुर ३८, श्री भोला रामजी सहारनपुर

५) भेजने वालों की सूचि

१. श्री राम भरोसे सिंह ग्वालियर २. श्री रामनाथ मलिक जालन्धर कैंट ३. श्री चुन्नी लाल परसादीलाल कांठ ४. श्री धर्मप्रताप जी चुरमरी ५. श्रीं जयंतवी कोटेजा पोरबन्दर ६. श्री चन्द्र प्रकाश आर्य मेरठ ७ : श्री विश्वम्भर दयाल गुप्ता बंगलौर ८. श्री पशुपतिनाथ कानपुर ९. श्री दौलतराम जालन्धर १०. श्री लक्ष्मीराम विनोदकुमार सहारनपुर ११. श्री वेणी प्रसाद जिज्ञासु कनखल १२. श्री ब्रजभूषण अम्बहटा १३. श्रीमेहता किशोर चन्द धर्मशाला १४. श्री मामचन्द गुप्ता सहारनपुर १५. श्री कपिलदेव खरड़ १६. श्री चौहान वस्ती भाई कालीभाई बिसावदर १७. श्री रामकृष्ण महाशय कानपुर १८. श्री हरस्वरूप आर्य मलकपुर सेमली १९. श्री इन्द्रसैन गुप्त बलरामपुर २०. श्री शिवनारायण थानमल अहमदनगर २१. श्री शंकरसिंह यादव जलालाबाद २२. श्री तेज बहादुरसिंह कानपुर २३. श्री कुंजलाल आर्य सिरसौद २४. श्री डी० एस० रावत हलद्वानी २५. श्री शालिग्राम राजाराम गुलमंडी २६. श्री केवल राम आर्य खुडियाला २७. श्री के० नलयालय मद्रास २८. श्री बाबूलाल फकीर चन्द जालना २९. श्री राम नारायन सीताराम बिजनवारी ३०. श्री कस्तूरीलाल सिकन्दराबाद ३१. आर्य समाज होशंगाबाद ३२. श्री अंदेगंगाराम निजामाबाद ३३. श्री सुमित्रा कंसल नैनीताल ३४. श्री महोदेव प्र० आर्य कटैयामाहे ३५. श्री बाबूलाल पुरोहित बाप ३६. श्री हुक्मसिंह आर्य दौराला ३७. श्री जुगल किशोर बी थानकी पोरबन्दर ३८. श्री शिवदत्त आर्य ओबरा ३९. श्री लक्ष्मी नारायण निजामाबाद ४०. श्री तरसेमलाल गुलाटी फरीदकोट ४१. श्री परमेश्वर राम मुंगेर ४२. श्री बैजनाथ एम० ई० माने ४३. श्री सेवाराम मुरादाबाद ४४. श्री हनुमान आर्य मंडी सिवानी ४५. श्री होरीलाल वैद्य जेतपुर ४६. श्री मगनलाल देव भरुच ४७. श्री बनवारीलाल उझांनी ४८. श्री किशोर कुमार कर्मसद ४९. श्री अशोक महाजन जमनुकैन्ट ५०. श्री कैप्टन नारायणसिंह मेरठ ५१. श्री रुद्रदत्त शुक्ल कानपुर ५२.श्री रामनारायण शर्मा अतरपुर ५३. श्री रा० न० रुद्रजवार उदयपुरा ५४. श्री भगवानदास गुप्त गुड़गावां ५५. श्री चन्द्रलाल शर्मा शिवाला ५६. श्री शालिग्राम शर्मा कलकत्ता ५७. श्री खैरातीलाल अजमानी संबलपुर ५८. श्री नारायण गोपाल जी पटेल गोछावाड़ी ५९. श्री जयनारायण ६०. श्री वेद कुमार तासगांव ६१. श्री धर्मपाल ववन लखनऊ ६२. श्री अचपलसिंह त्यागा दहचन्द ६३. श्री एल० एन० मिश्रा रायसेन ६४. श्री सुशील कुमार यमुनानगर ६५. श्री भोलाराम आर्य सहारनपुर ६६. श्री अमर सिंह नेगी पौड़ी गढ़वाल ६७. श्री जगदीश कुमार ६८. श्री कर्म चन्द बन्टा अम्बाला ६९. श्री डा० शिवनन्दन प्रसाद गया ७०. श्री सहदेव मण्डल मुंगेर ७१. श्री शिवशरण कोटी ७२. श्री सुन्दरदास बतरा जबलपुर ७३. श्री जगदीश प्रसाद मेहसाना ७४. श्री नरेन्द्र गिरि गोस्वामी नासिक ७५. श्री प्रकाश देव चौधरी विनोबापुरी ७६. श्री बनस्पत प्रसाद गुप्ता शाहाबाद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

७७. श्री रूपनारायण हजारी बाग ७८. श्री महेश चन्द्र गुप्ता बम्बई ७९. श्री झुम्मकलाल वर्मा रायपुर ८०. श्री किशनलाल सहारनपुर ८१. श्री भरत लाल विश्वकर्मा टूण्डला ८२. श्री बी० एल० पाल टूण्डला ८३. श्री भगवती प्रसाद टूण्डला ८४. श्री देवराज शर्मा मुजफ्फ़रनगर ८५. श्री वी० दामोदर मैसूर ८६. श्री प्रताप सिंह राठौर चौतड़ा ८७. श्री सु० ब० काले परली बैजनाथ ८९. श्री दशरथ प्रसाद चेचरिया ९०. श्री नन्दकिशोर जायसवाल खरोंधी ९१. श्री देव प्रसाद धुरंधर रायपुर ९२. श्री आतमाराम भेरूसिंह माकडोन ९३. श्री रामप्रकाश राय दार्जिलिंग ९४. श्री भोलाराम आर्य सहारनपुर ९५. श्री शारदानन्द शर्मा कानपुर ९६. श्री सूरविली तिवारी कानपुर ९७. श्री बी० आर नरसिंधम बम्बई ९८. श्री स्वामी दयाल गोंडा ९९. श्री अवत्र राम वर्मा रायपुर १००. श्री मै० सर्द्ध सिंह मिर्जापुर १०१. श्री रतनकुमार जी जयपुर १०२. श्री विश्वनाथ दत्त इलाहाबाद १०३. श्री रामचन्द्र आर्य अजमेर १०४. श्री रमेश चन्द्र नजीबाबाद १०५. श्री लूटा करन थावनी जोधपुर १०६. श्री कपूरसिंह राठौर मुहमदाबाद १०७. श्री ओमप्रकाश शर्मा चिरमिरी १०८. श्री अजीत सिंह ध्रुव गिधपुरी १०९. श्री केवलराम जोधपुर ११०. श्रीडोगरा रेजिमेंट १११. श्री ओम प्रकाश जी दिल्ली ११२. श्री प्रेम रतन जालन्धर ११३. श्री देवकी-नन्दन सिंह मुजफ्फर पुर ११४. श्री रामप्रकाश राय कालिम्पोंग (दार्जलिंग) ११५. श्री रामचन्द्र बाबूलाल पीपाड़ (जोधपुर) ११६. श्री सरोज दुआ दिल्ली ११७. श्री शन्नोदेवी दिल्ली ११८. श्री कैलाश मेहरा दिल्ली ११९. श्री सावित्री बाबा दिल्ली १२०. शान्ति खुल्लड़ दिल्ली १२१. श्री सुहागवत्ती दिल्ली १२२. श्री निर्मल दिल्ली १२३. श्री करोड़ी लाल दिल्ली १२४. श्री सत्यप्रकाश सुखुजा सोनीपत १२५. श्री सूरज प्रसाद लौरिया १२६. श्री देवराज शर्मा खतौली १२७. श्री श्यामलाल जी कानपुर १२८. श्री लक्ष्मण दास सेठी दिल्ली १२९. श्री ओमप्रकाश जी दिल्ली १३०. श्री मती सुन्दरबाई जोधपुर १३१. श्री प्रेम सिंह गुलेरिया इन्दौरा १३२. श्री राम सरन इन्दोरा १३३. श्री सावित्री मखेजा जबलपुर १३४. श्री हीरालाल शर्मा बसेड़ा १३५. आर्यसमाज बसेड़ा १३६. श्री अजीत सिंह ध्रुव गिधपुरी १३७. प्रभु श्री अप्पा चौ० परली बैजनाथ

१०) भेजने वालों की सूचि

१. श्री रामनाथ पाहवा उज्जैन २. श्री नारायण भाई चावला ३. श्री डा० गुरुदत्त सिंह शिकोहाबाद ४. श्री मोहनलाल देवकृष्ण कुटियाना ५. श्री कालीप्रसाद बाढ़ ६. श्री आसाराम पाहवा उज्जैन ७ श्री मेहर चन्द प्र० हरदेवसिंह मुजफ्फर नगर ८. श्री सर्वदमनलाल शर्मा उझानी ९. श्री रविशंकर आर्य कुरनूल १०. श्री हरिदास नारायण जूनामोड़ा ११. श्री रामस्वरूप गोयल जयपुर १२. श्री प्रेमसिंह राठौड़ चित्तौड़गढ़ १३. श्री रामप्रकाश छावड़ा देहली १४. श्री प्रभु नारायण विद्यार्थी अलीगंज १५. श्री तपस्वीराम नरकटियागंज १६. श्री देवराज कोछड़ खंडवा १७. श्री मगनलाल विजय कुमार रायपूर १८. श्री रामचन्द्र जर्वे १९. श्री सन्तलाल हिसार २०. श्री महेशदत्त श्रीवास्तव अलीगढ़ २१. श्री कपूरसिंह हैदरपुर २२. श्री धर्मेन्द्र सिंह धनबाद २३. श्री बिहारीलाल खीरी २४. श्री दमन रानी २५. श्री चननराम धुरा कलेरकलाँ २६. श्री रामभरोसे लाल आर्य मिर्जापुर २७. श्री कृष्णलाल मोदी नगर २८. श्री इन्द्रसैन मलिक जालंधर छावनी २९. श्री रामनाथ पाहवा उज्जैन ३०. श्री मेवाराम वैद्य मथुरा ३१. श्री रविचन्द्र भानजी जामनगर ३२. श्री टी० एन० श्रीवास्तव दिल्ली ३३. श्री चन्द्र प्रकाश बक्सर ३४. श्री रामभरोसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिंह ग्वालियर ३५. श्री चौबिस रामचन्द्र वंशी रायपुर ३६. श्री ब्रह्मदत्त पालीवाला भवां ३७. श्री आ० स० तम्बौर ३८. श्री शिवचरनलाल कोटा १०) ३९. श्री सुग्रीव काले परली बैजनाथ ४०. श्री कृष्ण कुमार आर्य नीलोखेड़ी ४१. श्री उत्तम मुनि वानप्रस्थी उस्मानाबाद ४२. हरिनारायण मिश्रा कोटा ४३. श्री नरेशचन्द्र कोटा ४४. श्री ब्रह्मदत्त शर्मा होशियारपुर ४५. श्री स्वामी सत्यानन्द जी जालन्धर ४६. गुप्त दान गुड़गाँव ४७. श्री सीताहून (दिल्ली) ४८. श्रीमती अरोड़ा दिल्ली ४९. श्री सरला मेहरा (दिल्ली) ५०. श्री दीनानाथ दिल्ली ५१. श्री निर्मल नन्दा (दिल्ली) ५२. श्री श्री शिवरतन शुक्ल लखीमपुर खीरी ५३. श्री हरबन्स लाल नन्दा मुजफ्फरनगर ५४. श्री अचपल सिंह त्यागी चरथावल ५५. श्री सूबेदार ताराचँद धीमान दिल्ली ५६. श्रीमती गार्गी देवी तलवाड़ा ५७. श्री सतपाल सिंह, इन्दौरा ५८. श्री चरणसिंह इन्दौरा ५९. श्री हरेन्द्र शर्मा इन्दौरा ६०. श्रीमति कमला रत्ता, इन्दौरा ६१. श्री अचपल सिंह त्यागी दहचन्द ६२. श्री भूप सिंह आर्य रहमतपुर ६३. श्री श्रीमति फूलमति देवी दिल्ली।

११) दान देने वालों की सूचि

श्री जे० सी० आर्य आंतरी २. आर्य समाज मंदसौर ३. श्री शिवजी गुप्त साहिब गंज ४. श्री रामस्वरूप आर्य गिरदीकोट ५. श्री हरियाराम कलकत्ता ६. श्री रामदेव वर्मा वृन्दावन ७. श्री डा० यशपाल रतनगढ़ ८. श्री प्यारे लाल कपूर चन्द कोटा ९. श्रीचन्द गौड़ जनक नगर १०. श्री लाल बहादुरसिंह हमीरपुर ११. श्री हरचन्द राय एलनाबाद १२. श्री टेक चन्द मदनपाल कोटद्वार १३. श्री पाल प्रशान्त मवाना १४. श्री रुराराम सिंह कलकत्ता १५. श्री एच० आर० आर्य गुलाटी १६. श्री आर्य समाज खण्डवा १७. श्री नानकचन्द रस्तोगी रामपुर १८. श्री स्वस्तिक लाज परली बैजनाथ १९. श्री एस० एम० राधेश्याम अमृतसर २०. श्री रामलाल शाक्य मैनपुरी २१. श्री नन्दकिसोर चरखीया २२. श्री केदार नाथ शर्मा खण्डवा २३. श्री शिवरतन हांड़ा कौंच २४. श्री वंकटलाल नन्दलाल लाहोटी बीड़ २५. श्रीमती शकुन्तला नरूला गाजियाबाद २६. श्रीमती भगवती देवी जोधपुर २७. आर्य समाज वाराणसी।

२१) देने वालों की सूचि

१. श्री जनक राज आर्य ऐलनाबाद २. श्री ब्रह्मदेव हेमचन्द एण्ड संस कोटद्वार ३. श्री उमरावसिंह गुंजोटी ४. आर्य समाज हमीरपुर ५. श्री कन्हैयालाल गुलावठी ६. श्री हीरालाल जी जीन्द ७. श्री सुगनी देवी जोधपुर।

५१) देने वालों की सूचि

१. श्रीमती प्रभा महरोत्रा रुड़की २. श्री सचिदानन्द सिंह कुंजू ३. श्री जीवनदास अमृतसर ४. श्री आनन्दीलाल जी जयपुर।

१०१) देने वालों की सूचि

१. श्रीमती बाला रानी बुढ़ाना २. श्री सतीश चन्द चंचल अमृतसर ३. श्री पदमा रानी बुढ़ाना ४. श्री नरेन्द्रनाथ जुनेजा बम्बई ५. आर्य समाज जमशेद पुर ६. आर्य समाज हिन्गोली ७. श्री जी०एस० ढंड गंजापारा ८. श्री एस०सी० मरवाहा (दिल्ली) ९. श्री सरोज रस्तोगी मेरठ १०. श्रीमती शीला पाल मवाना ११. श्रीमती सवित्री देवी रुड़की १२. श्री बी० एन० बत्तरा रुड़की। सभी का धन्यवाद—अध्यक्ष

मुद्रक प्रकाशक—संपादक पंडिता राकेश रानी द्वारा सैनी प्रिंटर्स दिल्ली में छपा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

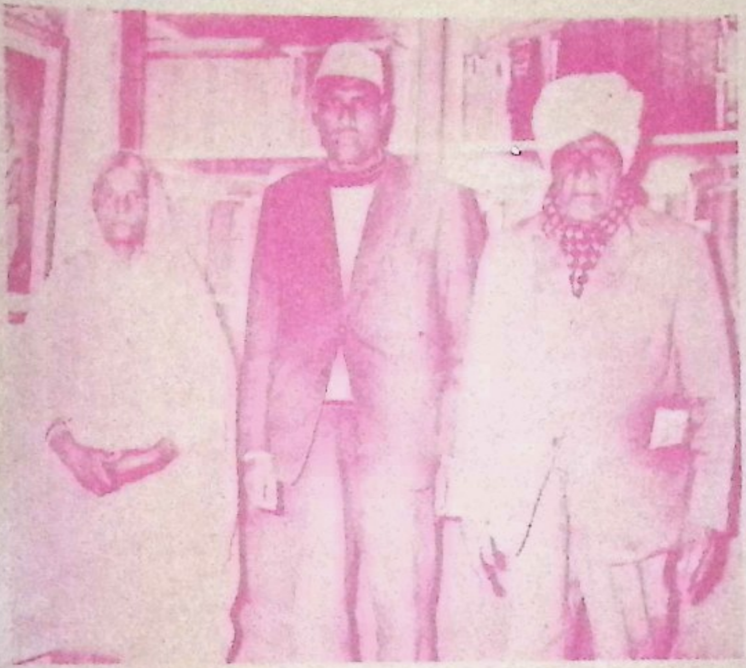

अफ्रीका से भारत में पधारे श्री ईश्वरसिंह जी, उनके पुत्र श्री आत्मदेव जी और उनकी धर्मपत्नी।

दयानन्द-संस्थान में आकर आपने अफ्रीका के सम्बन्ध में विशेष बातें बतायीं। विवरण अंक में पढ़िए।

—सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक) अप्रैल रजिस्टर्ड नं०
नई दिल्ली-५ १९७३ D-1631

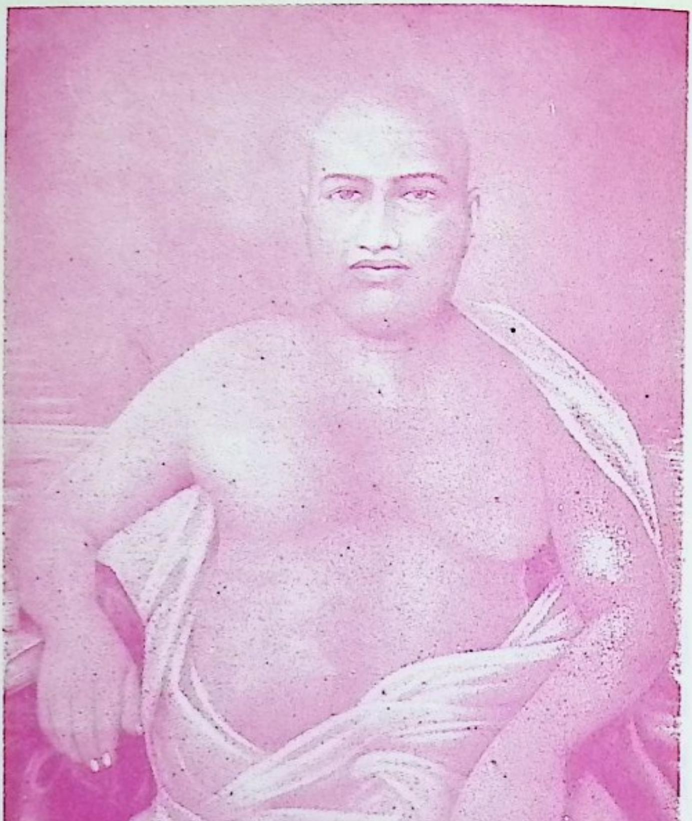

आदर्श संन्यासी और शास्त्रार्थमहारथी
स्व० स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi